आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष : 63 मूल्य 10 रु. अंक : 4

15 अप्रैल, 2006 चैत्र 2063

अनगिनत व्हरायटीज्,
शुद्धता और
वाजिब हिसाब का
सुनहरा संगम

त्यौहार, शुभ प्रसंग
के आनंद को
द्विगुणीत करनेवाले
मंगल आभूषण

भारतवर्ष का
स्वर्णतीर्थ

३५ वर्षोंसे तत्पर
एवं विनम्र सेवा
ग्राहकों की जिज्ञासा को
पूरा समाधान

ॲन्टीक, ऑक्साइड
जी बी, कास्टींग, कुंदन
पोलकी इ. गहनों के
अनेकों प्रकार

कॅरेटोमीटर
की उपलब्धता

जलगावमें विशेष
निवास व्यवस्था

औरंगाबाद :
आकाशवाणी चौक,
जालना रोड,
☎ ०२४०-३०९७९७९

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सोना • चांदी • हिरा • मोती

जलगांव :
नयनतारा,
सुभाष चौक
☎ ०२५७-२२२५९०३

जिनवाणी
हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक
प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

सम्पादक
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291-2730081

सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-018/2006-08

सदस्यता
स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/- संरक्षक सदस्यता-रू.5000/-
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/- त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/-
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/-
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू. 10/-

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

अह पच्छा उइज्जंति
कम्मापावफला कडा।
एवमस्सासि अप्पाणं,
नच्चा कम्मविवागयं।।
- उत्तराध्ययन सूत्र २.४१

अज्ञानफलप्रद कर्म किये,
जो उदय समय पर आते हैं।
यों कर्मविपाक समझ मुनिवर,
मन को आश्वस्त बनाते हैं।।४१।।

अप्रेल २००६
वीर निर्वाण संवत् २५३२
चैत्र २०६३

वर्ष : ६३ अंक : ०४

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो ।

विषयानुक्रम

अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	६
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	७
प्रवचन-	आत्मशुद्धि का अमोघ उपाय : तप	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	८
	शील रतन मोटो रतन	-महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.	१७
जीवन-व्यवहार-	सेवा : प्रभु महावीर की दृष्टि में	-श्री जसराज चौपड़ा	२४
	मृत्युवरण में श्रेष्ठ है समाधिमरण	- डॉ. सोहनलाल संचेती	३३
अध्यात्म-चिन्तन-	सर्वांगीण विकास का साधन : सामायिक व्रत(४)	-श्री प्रेमचन्द कोठारी	३०
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (२७)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	३६
तत्त्वज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (२९)	- श्री धर्मचन्द जैन	४०
	दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(७)	- संकलित	४३
युवा-स्तम्भ-	सम्पत्ति और सजगता	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा.	४५
	व्यसनमुक्त आदर्श समाज : आज की आवश्यकता	- श्री नौरतन मेहता	६२
नारी-स्तम्भ-	अविवाहित युवतियों से सप्रेम निवेदन	- श्री युगराज जैन	५६
बाल-स्तम्भ-	संशयात्मा विनश्यति	-उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा.	५८
प्रेरक प्रसंग-	अनुकरणीय आदर्श	- श्री प्रतापचन्द सांड	१६
	निन्दा बनाम प्रशंसा	- श्री जशकरण डागा	५७
	असंगता	- संकलित	६४
विचार-	प्रवचन-कण	- तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	४२
	जीना है ज्योति बनकर	- मोनिका डांगी	७२
कविता/गीत-	श्रद्धा सुमन समर्पण लो	- श्री विजय कोचर	२२
	चरणों में आज प्रभु	- मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	२३
	प्रार्थना	- श्री मोहन कोठारी 'विनर'	४६
	सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है	-डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया	४७
	जैन धर्म की शान थी	- श्री राजेन्द्र कुम्भट	५४
	मुक्तक-मुक्ता	- श्री दिलीप धींग	९२
सम्पादकीय -	डॉ. धर्मचन्द जैन		३
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें प्रतियोगिता (१०)		६५
स्वाध्यायी परिचय-	श्री जौहरीमल जी छाजेड़-जोधपुर	-श्रीमती मोहनकौर जैन	७१
नूतन साहित्य-	डॉ. धर्मचन्द जैन		६८
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		७३
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		९०

फ्री विल और जैनदर्शन

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

आधुनिक विकसित युग में फ्री विल (Free Will) अथवा फ्रीडम ऑफ विल अर्थात् संकल्प की स्वतन्त्रता का सिद्धान्त मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अतीव महत्त्वपूर्ण है। इसके अनुसार व्यक्ति विभिन्न विकल्पों में किसी एक का चुनाव करने के लिए स्वतन्त्र है। वह अपने संकल्पों से जीवन में अच्छा या बुरा करने में समर्थ है। इस सामर्थ्य के कारण व्यक्ति जैसा चाहे वैसा बन सकता है। फ्री विल का यह सिद्धान्त व्यक्ति के पुरुषार्थ की महत्ता को उजागर करता है। पाश्चात्त्य दार्शनिकों में सेण्ट थॉमस, स्काटस, ह्यूम, काण्ट, लाइबनिज आदि ने संकल्प की स्वतन्त्रता के सिद्धान्त पर विस्तार से विचार किया है, जो इस तथ्य को सिद्ध करता है मानव को यह अनूठी विशेषता प्राप्त है कि वह अपनी इच्छाओं एवं संकल्पों को तर्क एवं विवेक से नियन्त्रित कर सकता है।

फ्री विल का यह सिद्धान्त जैनदर्शन को भी मान्य है, क्योंकि जैनदर्शन अपनी सत्-असत् इच्छाओं का कर्त्ता ईश्वर को न मानकर स्वयं आत्मा को स्वीकार करता है। जैन दर्शन की यह दृढ़ मान्यता है कि आत्मा ही अपने सुख-दुःख का कर्त्ता एवं विकर्त्ता है- 'अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।' आत्मा का यह स्वातन्त्र्य फ्रीडम ऑफ विल के सिद्धान्त को तो समाहित करता ही है साथ ही कर्मसिद्धान्त के इस नियम को भी पुष्ट करता है कि जो जैसा करता है उसे तदनुरूप फल की प्राप्ति होती है। संकल्प कहें या विल उसका अपना फल है। शुभ संकल्प का शुभ फल एवं अशुभ संकल्प का अशुभ फल होता है। व्यक्ति अपने संकल्प के अनुसार ही कार्य में प्रवृत्त होता है। पहले संकल्प या इच्छा होती है तथा फिर उसकी पूर्ति हेतु प्रयत्न किया जाता है। प्रयत्न के अनुसार कार्य का परिणाम आता है तथा संकल्प के अनुसार व्यक्ति के भावों का प्रवाह चलता है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि ईश्वर को मानने वाले हों या न मानने वाले, सभी फ्रीडम ऑफ विल का अनुभव करते हैं।

मनुष्य क्योंकि विवेकशील है, तर्क की क्षमता रखता है, कार्य के औचित्य एवं अनौचित्य का परीक्षण कर सकता है, इसलिए वह अपने संकल्पों का भी चुनाव

या परिवर्तन कर सकता है। कोई विवाह करे या न करे, निर्णय लेने में स्वतंत्र है। इसी प्रकार कोई माँसाहार करे या न करे, उसकी स्वतंत्रता है, कोई हिंसा में कमी करे या न करे व्यक्ति के स्व-संकल्प पर निर्भर करता है। जीवन में संकल्पों की बड़ी भूमिका है। ये हमारे जीवन की पताका को कभी ऊँचा उठाते हैं तो कभी नीचे गिराते हैं। हमारे कुछ संकल्प तो सामाजिक व्यवस्थाओं से भी नियन्त्रित होते हैं। यथा- चोरी, व्यभिचार आदि हम चाहते हुए भी खुले में नहीं कर सकते। इस प्रकार सामाजिक नियन्त्रण भी अपना प्रभाव दिखाता है, किन्तु सबसे अधिक प्रभावी नियामक तो व्यक्ति स्वयं होता है।

फ्री विल की महत्ता होते हुए भी जैनदर्शन के अनुसार विवेक एवं सम्यग्दर्शन की लगाम का होना आवश्यक है। जैनदर्शन कहता है कि संकल्प की स्वतंत्रता होते हुए भी मनुष्य को उस संकल्प की पावनता एवं अपावनता का विचार करना चाहिए। वह संकल्प अपने विकास के लिए शुभ है या अशुभ? वह अपने जीवन के उत्थान में सहायक है या पतन में? वह अशान्ति एवं उद्वेग को उत्पन्न करने वाला है या उसे समाप्त करने में सहायक है? वह आत्महितकारी है या अहितकारी? वह कुत्सित भावनाओं को प्रदीप्त करने वाला है या उनका उन्मूलन करने वाला? अपने ज्ञान की उज्ज्वल किरणों की उपेक्षा करने वाला है या उनकी अभिवृद्धि करने वाला? इस प्रकार उस संकल्प की उपादेयता या उपेक्षणीयता का विचार सच्चे आत्म-विकास के लिए अपेक्षित है।

जैनदर्शन के अनुसार अपना विकास एवं पतन दोनों अपने हाथ में हैं। उत्तराध्ययन सूत्र कहता है- "अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठिय-सुपट्ठिओ।" अर्थात् आत्मा यदि सन्मार्ग में स्थित है तो वह अपना मित्र है तथा उन्मार्ग में चल पड़ा है तो वह अपना शत्रु है। यही तथ्य फ्री विल के सिद्धान्त में समाया हुआ है।

हमें अपने संकल्पों के प्रति सजग होना है उन्हें सम्यग्दर्शन के चक्षुओं से देखना है तथा उन्हें सम्यग्दर्शन से युक्त बनाना है। जो संकल्प सम्यग्दर्शन से युक्त होता है, उससे हमें कोई हानि नहीं, अपितु वह संकल्प हमारे जीवन को स्पष्ट दिशा-निर्देश के साथ एक नई ऊँचाई दे सकता है। वह हमें पूर्णज्ञान एवं परमशान्ति के दर्शन करा सकता है। किन्तु सम्यग्दर्शन के चक्षुओं का होना कठिन है। उस व्यक्ति के लिए और भी कठिन है जो वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थितियों में भयंकर रूप से आसक्त है तथा उन्हें अपने सुख का साधन मानता है। जो संकल्प शान्ति, मोक्षाभिलाषा,

विरक्ति, अनुकम्पा और बन्ध-मोक्ष पर आस्था से युक्त होता है वह संकल्प सम्यग्दर्शन युक्त कहा जा सकता है।

जो व्यक्ति बाह्य वस्तुओं एवं परिस्थितियों में ही सुख मानता है तो स्वाभाविक है कि उसके संकल्प भी उसी की पूर्ति से सम्बद्ध होंगे। संकल्प की उत्पत्ति व्यक्ति की भीतरी भूमिका के अनुसार होती है। तथापि मानव नये संकल्प एवं विचार को उत्पन्न कर जीवन को नया मोड़ दे सकता है। यही मानव होने की विशेषता है। नये संकल्प की उत्पत्ति तर्क या विवेक के आधार पर हो सकती है।

जो व्यक्ति तर्क एवं विवेक का उपयोग किए बिना संकल्पों में जीते हैं उनके जीवन की कोई दिशा नहीं होती, वे अंधकार में ही जीते हैं। धन एवं अन्य साधन होने से भी उन्हें वह संतोष नहीं होता जो ज्ञान के प्रकाश में लिए गए संकल्प से साधारण संत को हो सकता है। ज्ञान या विवेक का प्रकाश व्यक्ति तभी प्राप्त कर सकता है जब वह अपने संकल्पों की शुभता एवं अशुभता का निरीक्षण करना प्रारम्भ कर दे। हम हठाग्रह एवं एकांगी दृष्टिकोण को छोड़कर अनेकान्तवाद की व्यापकता को जीवन में स्थान देते हुए दूसरों को भी आत्मवत् भाव से देखना प्रारम्भ करें। यह भी देखें कि मेरे संकल्प दूसरों के लिए घातक तो नहीं? उनके शोषक तो नहीं? संकल्पों में उनके प्रति हिंसा का भाव तो नहीं? मैं सदैव दूसरे को दोषयुक्त एवं अपने को निर्दोष समझता हूँ, क्या मेरा ऐसा चिन्तन उचित है? मैं किस प्रकार की स्वतन्त्रता चाहता हूँ?

संकल्पों या इच्छाओं की स्वतंत्रता व्यक्ति को कब स्वच्छन्द बना दे, कहा नहीं जा सकता, इसलिए हर क्षण जागरूक रहने की आवश्यकता है। अपने शुभाशुभ संकल्पों का चौकीदार स्वयं को बनना है, जिस दिन विवेक के प्रकाश में यह कार्य प्रारम्भ हो जाएगा, उसी दिन हमारे सैकड़ों अशुभ संकल्प तिरोहित हो जायेंगे। शुभ संकल्प भी हमारे आत्मकल्याण एवं लोककल्याण में सहायक बनने लगेंगे।

मानवीय जीवन मूल्यों में यह एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है कि हम हमारे जीवन के विधायक या विध्वंसक बन सकते हैं। अशुभ संकल्प जहाँ विध्वंसक का कार्य करते हैं वहाँ शुभ संकल्प विधायक का कार्य करते हैं। अन्त में तो व्यक्ति को शुभ संकल्पों से भी मुक्त होना है, किन्तु अशुभ संकल्पों के निरोध एवं संकल्परहित होने के मध्य में शुभ संकल्पों का मार्ग अनिवार्य है।

'फ्रीडम ऑफ विल' मानव की विशेषता है, किन्तु उसका हम सदुपयोग करते हैं या दुरुपयोग, यह हमारे विवेक एवं मूल्यों की समझ पर निर्भर करता है।

आगम-वाणी

पुढवीजीवा पुढो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी।
वाउजीवा पुढो सत्ता, तण रुक्ख सबीयगा।।

अहावरा तसा पाणा, एवं छक्काय आहिया।
इत्ताव ताव जीवकाए, नावरे विज्जती काए।।

सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं, मतिमं पडिलेहिया।
सव्वे अकंतदुक्खा य, अतो सव्वे न हिंसया।।

एयं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसति कंचणं।
अहिंसा समयं चेव, एतावंतं विजाणिया।।

उड्ढं अहं तिरियं च, जे केइ तस-थावरा।
सव्वत्थ विरतिं कुज्जा, संति निव्वाणमाहियं।।

पभू दोसे निराकिच्चा, णं विरुज्झेज्ज केणइ।
मणसा वयसा चेव, कायसा चेव अंतसो।।

-सूत्रकृतांग सूत्र प्रथम श्रुतस्कन्ध, अध्ययन ११, गाथा ५०३ से ५०८

पृथ्वी जीव है, पृथ्वी के आश्रित भी पृथक्-पृथक् जीव हैं, जल एवं अग्नि भी जीव है, वायुकाय के जीव भी पृथक्-पृथक् हैं तथा हरित तृण, वृक्ष और बीज (के रूप में वनस्पतियाँ) भी जीव हैं।

इन (पूर्वोक्त पाँच स्थावर जीव निकाय) के अतिरिक्त (छठे) त्रसकाय वाले जीव होते हैं। इस प्रकार तीर्थंकरों ने जीव के छह निकाय (भेद) बताये हैं। इतने ही (संसारी)जीव के भेद हैं। इसके अतिरिक्त संसार में और कोई जीव (का मुख्य प्रकार) नहीं होता।

बुद्धिमान पुरुष सभी अनुकूल (संगत) युक्तियों से(इन जीवों में जीवत्व) सिद्ध करके भलीभाँति जाने-देखे कि सभी प्राणियों को दुःख अप्रिय है (सभी सुखलिप्सु हैं), अतः किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

ज्ञानी पुरुष के ज्ञान का यही सार-निष्कर्ष है कि वह किसी भी जीव की हिंसा नहीं करता। अहिंसा प्रधान शास्त्र का भी इतना ही सिद्धान्त या उपदेश जानना चाहिए।

ऊपर, नीचे और तिरछे (लोक में) जो कोई त्रस और स्थावर जीव हैं, सर्वत्र उन सबकी हिंसा से विरति (निवृत्ति) करना चाहिए। (इस प्रकार) जीव का शांतिमय निर्वाण-मोक्ष(की प्राप्ति कही गई)है।

इन्द्रियविजेता साधक दोनों का निवारण करके किसी भी प्राणी के साथ जीवनपर्यन्त मन से, वचन से या काया से वैर-विरोध न करे।

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- धर्म एकान्त मंगलमय है। वह आत्मा, समाज, देश तथा अखिल विश्व का कल्याणकर्त्ता और त्राता है। आवश्यकता इस बात की है कि जनता के मानस में धर्म और नीति के प्रति आस्था उत्पन्न की जाए।
- जो शासन धर्मनिरपेक्ष नहीं, धर्मसापेक्ष होगा वही प्रजा के जीवन में निर्मल, उदात्त और पवित्र भावनाएँ जागृत कर सकेगा।
- प्रत्येक साधनापरायण व्यक्ति को चार बातें ध्यान में रखनी चाहिये- १. स्थिर आसन २. स्थिर दृष्टि ३. मितभाषण और ४. सद्विचार में निरन्तर रमणता। इन चार बातों पर ध्यान रखने वाला लोक-परलोक में लाभ का भागी होता है।
- जिसके मन में संयमी होने का प्रदर्शन करने की भावना नहीं है, वरन् जो आत्मा के उत्थान के लिये संयम का पालन करता है, वह संयम में आयी हुई मलिनता को क्षणभर भी सहन नहीं करता।
- व्रती पुरुष कुटुम्ब, समाज तथा देश में शान्ति का आदर्श उपस्थित करता है और स्वयं भी अपूर्व शान्ति का उपभोक्ता बनता है।
- परस्पर सापेक्ष गुणों की यथावत् आयोजना करने वाला ही अपने जीवन को ऊँचा उठाने में समर्थ हो सकता है।
- ज्ञानावरण का क्षयोपशम कितना ही हो जाय, यदि मिथ्यात्व मोह का उदय हुआ तो वह ज्ञान मोक्ष की दृष्टि से अज्ञान ही रहेगा।
- अनुभव जगाकर अपने ज्ञान-बल से भी बहुत से व्यक्ति वस्तुतत्त्व का बोध प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार बोध प्राप्त करने के अधिकारी कोई विशिष्ट व्यक्ति ही होते हैं। निसर्ग से ज्ञान उत्पन्न होने की स्थिति में इधर उपादान ने जोर लगाया तो निमित्त गौण रहा, उपादान प्रधान रहा। दूसरी ओर अधिगमादि निमित्त के माध्यम से ज्ञान उत्पन्न होने की दशा में निमित्त प्रधान रहता है और उपादान गौण। प्रत्येक कार्य की निष्पत्ति में उपादान और निमित्त ये दोनों ही कारण चलते हैं।

प्रवचन

आत्मशुद्धि का अमोघ उपाय : तप

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

यद्यपि तप आत्मशुद्धि का अमोघ उपाय है, किन्तु तप का आराधन सम्यक् प्रकार से होना चाहिए। सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान पूर्वक किया गया तपश्चरण आत्मशुद्धि एवं कर्मक्षय का साधन होता है। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने जोधपुर चातुर्मास में ५ सितम्बर १९९४ को फरमाये अपने प्रवचन में तपस्या के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता (सह-सम्पादक, जिनवाणी) ने किया है। -*सम्पादक*

णाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण णिगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ॥ -*उत्तराध्ययन सूत्र २८.३५*

संसारी आत्मा कर्म से आबद्ध है। वह ज्ञान से जानता है, दर्शन से श्रद्धा करता है, चारित्र से निग्रह करता है और तप से शुद्ध होता है। 'जाणइ' शब्द जानने का संदेश देता है। 'दंसणेण य सद्दहे' शब्द यह विश्वास करने का संदेश देते हैं कि तुम्हारा उद्धार-उत्थान करने वाला और कोई नहीं, तुम स्वयं हो। देवी-देवता तो क्या, स्वयं तीर्थंकर भगवान भी किसी को तारने में समर्थ नहीं हैं। यदि तीर्थंकर तारते तो गौतम शीघ्र तिर जाते। गौतमस्वामी श्रद्धावान, विनयवान और जीवन समर्पण करने वाले थे, पर जब तक उनके मन से मोह नहीं गया, वे तिर न सके। गणधर गौतम के पश्चात् दीक्षित होने वाले अनेक मुमुक्षुओं ने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया, किन्तु गौतम को केवलज्ञान बाद में हुआ, क्योंकि मोह के क्षय से मोक्ष होता है।

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) के चरणों में एक भक्त की भावना सुनी। वह बोला- ''गुरुदेव! मुझसे तो कुछ होता जाता नहीं, पर मेरी धर्मपत्नी सामायिक करती है, तपस्या करती है और साधना-आराधना भी करती है। मैं उसके ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप में सहयोग देता हूँ। मैं नहीं करता तो क्या हुआ, मैं उसका पल्ला पकड़ कर पार हो जाऊँगा।'' धर्म-ध्यान के लिए उसका ऐसा कथन कितना उचित है? जो इस तरह की भावना रख कर चलते हैं मैं उन भले आदमियों से

पूछूँ कि आपकी घरवाली खाती है, पीती है, वस्त्राभूषण धारण करती है तो आप क्यों नहीं कहते कि घरवाली खाती-पीती है तो मुझे खाने-पीने की क्या जरूरत?

श्रद्धा के संदर्भ को लेकर मैं कह गया कि आपकी आत्मा का उत्थान करने वाला दूसरा कोई नहीं, है तो बस तुम्हारी अपनी करणी का रूप। न देवता तार सकते हैं और न ही तीर्थंकर भगवान्, फिर जगह-जगह जाकर माथा रगड़ने से क्या लाभ? आप श्रद्धा को पकड़ लो, पार हो सकते हो। मारवाड़ी की कहावत आपने सुनी होगी- सात मामा का भाणजा भूखा रह जाता है। आप कभी भैरूजी, कभी नाकोड़ाजी तो कभी दूसरे-दूसरे देवी-देवताओं के चक्कर लगाते हैं उससे कोई लाभ मिलने वाला नहीं है। आत्मा से परमात्मा बनना है तो एक ही रास्ता है चारित्र और तप का। सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक्चारित्र और सम्यक् तप प्रत्येक प्राणी को उत्थान की ओर ले जाने वाले हैं। बातें करने से पेट नहीं भरता। मंजिल का नाम स्मरण करते रहने से मंजिल पर पहुँचना नहीं हो सकता। ज्ञानपूर्वक अटूट आस्था से चारित्र में चरण बढ़ाने पर मंजिल प्राप्त होती है।

कल देशविरति चारित्र में बारह व्रतों की बात कही गई थी, वहीं बारह व्रत अंगीकार करने की सामर्थ्य नहीं होने पर कम से कम एक व्रत आवश्यक रूप से धारण करने का आह्वान किया गया था। व्रताराधन व्यक्ति-व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर है। वायुयान से सफर करने वाला मिनटों/घंटों में गन्तव्य स्थल पर पहुँचता है तो रेल से यात्री दिनों में गन्तव्य स्थल प्राप्त करता है। छोटी-सी चींटी अपनी चाल से चलती है तो वह भी रास्ता पार कर जाती है, भले ही उसे अधिक समय लगे। जरूरत चलने की है, चलने वाला मंजिल तक पहुँच सकता है।

तीर्थंकर भगवान महावीर ने कर्म-रोग मिटाने के लिए तप को अमोघ औषधि कहा है। तप को पथ्य के नाम से भी कह सकते हैं। जानना, मानना, पालना आवश्यक है वैसे ही पथ्य-परहेज भी आवश्यक है। जानना ज्ञान है, मानना दर्शन है, पालना चारित्र है तो पथ्य-परहेज है-तप। कर्मों का रोग है यह जान लिया। कर्मों के रोग को मिटाने वाली श्रद्धा है इसे भी मान लिया, पर कर्म-रोग मिटता है चारित्र से। चारित्र पालन आवश्यक है। चारित्र का पालन औषधि सेवन की भाँति है वहीं तप रूप पथ्य परहेज से रोग का निकन्दन सुगम होता है।

जितना महत्त्व दवा का है, पथ्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। शूगर है, लेकिन शक्कर नहीं छूटती, बी.पी. वाले का नमक नहीं छूटता तो फिर सैकड़ों गोलियाँ खा

ली जाय, लाभ नहीं मिल सकता। पथ्य के बिना किसी का रोग मिटता नहीं, मिटेगा भी नहीं। भगवान् महावीर ने कर्म-रोग काटने के लिए पथ्य की बात कही है। इस पथ्य को भी दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक है शरीर का परहेज, तो दूसरा मन का परहेज। एक तप शरीर को तपाता है तो दूसरा तप मन को तपाने वाला है। एक शरीर की शुद्धि करता है तो दूसरा मन के विकारों को नष्ट करता है।

भारतीय संस्कृति में जितने भी ऋषि-महर्षि, साधक और महापुरुष हुए हैं सबने तप का आचरण किया है। तप का विस्तृत क्षेत्र है। खाते हुए भी तप हो सकता है तो खाना बन्द करके भी हो सकता है। बोलना तप है तो मौन भी तप है। तप सोचने की प्रक्रिया से भी हो सकता है। तात्पर्य यह है कि जिस साधना से विकार घटे, वह तप है।

भारत में भगवान् पार्श्वनाथ और भगवान् महावीरस्वामी के समय अनेकानेक तपस्वी थे जो तन को तपाते, पर उनके मन का अहंकार कम होने के बजाय बढ़ता रहता था। कई तपस्वी नदी में खड़े होकर पेड़ों पर लटक कर तप करते थे। कुछ तपस्वी अपने तन के चारों ओर अग्नि लगाकर तन को तपाते थे। भगवान् महावीर ने इस प्रकार के तप को अज्ञान तप की संज्ञा दी। ऐसा तप, निर्जरा नहीं संताप पैदा करता है। तप की परिभाषा करते कहा है-

"तप्यन्ते कर्माणि येन, असौ तपः"

अर्थात् जिससे पूर्वबद्ध कर्मो का क्षय होता है, वह तप है।

दूध-पानी की तरह आत्मा के साथ एकमेक हुए कर्मों को जिससे तपाया जाता है, उसे तप कहते हैं। यहाँ हो सकता है आपमें से कुछ के मन में प्रश्न उठे कि कर्मों को विनष्ट करने के लिए शरीर को कष्ट क्यों दिया जाय? उपवास, बेले, तेले, अठाई और मासखमण क्यों किए जायें? भोजन छोड़ना, स्नान नहीं करना, मैल नहीं निकालना, शरीर की शोभा-विभूषा नहीं करना- इन-इन बातों का क्या मतलब?

आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा.) ने शास्त्रीय दृष्टान्त के माध्यम से समस्या के समाधान के लिए फ़रमाया कि घी में छाछ का विकार मिला हुआ है, उस घी को आग में डाल दिया जाय तो छाछ रूप विकार और घी दोनों जल जायेंगे। घी को छाछ रूप विकार से अलग करना है तो उसे बर्तन में रखकर तपाना होगा, जिससे घी में रहे छाछ रूप विकार को जलाकर घी को विशुद्ध बनाया जा सके। यह दृष्टान्त है। समझने की बात है कि आत्मा के साथ कर्म रूप विकार हटाने के लिए शरीर को तपाना जरूरी है। यह शरीर तपेले जैसा है। जितना-जितना शरीर तपेगा कर्म

विनष्ट होते जायेंगे।

भूख में भोजन करना शरीरधारी जीव की प्रकृति है। आवश्यकता से अधिक खाना, विपरीत खाना, व्यसन सेवन करना विकृति है। तप करना संस्कृति है। साधना के लिए शरीर आवश्यक है। शरीर निर्वहन के लिए भोजन करना प्रकृति है, लेकिन स्वाद के लिए खाना, आवश्यकता से अधिक खाना, विपरीत खाना और जिसकी तन को जरूरत नहीं ऐसे व्यसनों का सेवन करना विकृति है। आप चाहे पान-पराग खा रहे हैं, गुटखे का सेवन कर रहे हैं, शराब-सिगरेट-बीड़ी-जर्दा आदि जितने भी व्यसन हैं वे सब छोड़ने लायक हैं। पान-पराग और गुटखा भी छोड़ने योग्य है। प्राकृतिक खाना शरीर की प्रकृति के लिए अनुकूल है वहीं प्रकृति के विरुद्ध खाना विकृति है, त्याज्य है, छोड़ने लायक है।

आपने देखा होगा- जो बैल खेत में हल जोतने जाता है, स्वामी उसे बिनौले खिलाता है, तिल और गुड़ देता है। वही बैल मेहनत का काम नहीं करता तो उसे साधारण चारा चरने को दिया जाता है। बैल का स्वामी जानता है कि उसे कब बाँटा देना, कितना देना। बैल में प्रमाद नहीं आये और उसकी कार्य-क्षमता बनी रहे, यह उसका स्वामी जानता है। बैल की बात छोड़िये, यह शरीर है, इसे कब, कितना और कैसे खाना दिया जाय, इसका चिन्तन जरूरी है। अधिक खाना कार्य में सहायक बनने की बजाय बाधक बनता है। कई हैं जो मनुहार से खिलाते हैं, जबरदस्ती करते हैं। कुछ तो सौगन्ध देकर खिलाने में शान समझते हैं। किन्तु एक जरूरत से ज्यादा खाकर तकलीफ उठाता है वहीं एक को आवश्यकता से बहुत कम नसीब होता है। एक के द्वारा अधिक खाना दूसरे को महरूम रखने जैसा है।

भारत के जितने भी संत-महात्मा हैं उनमें शायद ही कोई ऐसा होगा जिसके जीवन में थोड़ा या अधिक तप का आचरण नहीं होता हो। भगवान ऋषभदेव से भगवान महावीर तक और भगवान महावीर से आज तक किसी भी परम्परा को ले लीजिये, किसी भी धर्म, पंथ या मत को ले लीजिये, सबमें न्यूनाधिक रूप से तप का आचरण मिलेगा ही। लौकिक पुरुष गाँधीजी का नाम ले लीजिये, वे भी क्या खाना, कब खाना, कितना खाना इन सबका ध्यान रखते थे। खाने पर संयम करना तप है। यह तप हमारी संस्कृति है।

अनशन तप है। इसमें अमुक समय तक आहार ग्रहण नहीं किया जाता।

उपवास में कम-से-कम छत्तीस घंटे तक आहार नहीं होता। उपवास करने वाला पहली रात को भोजन नहीं करता, फिर अगले दिन के बारह घंटे अगली रात के बारह घंटे, इस तरह छत्तीस घंटे निराहार रहता है। यह तप किसी के कई दिनों और महीनों तक चलता है। भगवान ऋषभदेव ने एक वर्ष तक तप किया, भगवान महावीर ने छः महीने तक तप किया। भगवान महावीर के बाद भी पाँच माह पन्द्रह दिन तक का तप करने का उदाहरण है जयपुर की बहिन इचरजकंवर लुणावत का। एक-एक महीने तक का तप करने वाले तो आज भी कई हैं। खंभात में एक साथ १०८ मासखमण और लगभग १२० अठाइयाँ हुईं। अन्य जगहों पर भी मासखमण तप होते रहते हैं। मासखमण से ऊपर की तपस्याएँ चलती रहती हैं। अनशन तप स्वीकार करने वाले तपस्वी पहले थे, आज हैं और आगे भी रहेंगे।

तप क्या है इसे समझना जरूरी है। आज तर्क का युग है। पूछने वाले पूछते हैं कि हम तप क्यों करें? उत्तर में कहना होगा कि तप का तेज आत्मा को गति देता है। चारित्र में चरण बढाने वाला तप के तेज द्वारा द्रुतगति से आगे बढ़ सकता है। चारित्र के बाद तप का वर्णन मिलता है, क्योंकि तप कर्मों के पहाड़ को काटने वाला वज्र है। तप काम-दावानल की ज्वाला के शमन के लिए जल का काम करता है। तप इन्द्रियों के विकारों को वश में करने का वशीकरण मंत्र है। तप लब्धि और आत्म-साधना में आगे बढ़ाने वाला साधन है। तप की महिमा करते कवि ने ठीक ही कहा है -

क्रोड़ विघ्न दूर टले, वांछित फले तत्काल।
जो भविजन नित तप करे, तस घर मंगलमाल॥

तप वांछित फल देने वाला है। अब तक जिन्होंने जो भी मिलाया है, इसी तप-साधना के बलबूते से मिलाया है। शास्त्रों में और कथाभाग में अनेकानेक दृष्टान्त मिलेंगे, जिनमें तप के कारण एक-एक तपस्वी के जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है।

तप से मन के विकार दूर होते हैं। एक सेठ का पुत्र अर्थोपार्जन के लिए विदेश गया, नव-यौवना वधू घर पर थी। वधू के खाने-पीने की कमी नहीं थी, अतः खाना-पीना और आराम करना ही मुख्य काम था। जवानी दीवानी होती है। नव-यौवना के मन में विकार उठने लगे। एक दिन वह वधू अपने श्वसुर से बोली- पिताजी! घर का यह बुड्ढा नौकर काम करने में समर्थ नहीं है, इसलिए इसकी जगह किसी जवान को रखना चाहिये। सेठ अनुभवी था। सोचने लगा- वर्षों पुराने नौकर की बजाय जवान

नौकर की मांग के पीछे क्या रहस्य है? सेठ ने सोचा-मुझे युक्तियुक्त तरीके से समाधान करना चाहिये।

दूसरा दिन हुआ। बहू पृच्छा करने आई- पिताजी! आज भोजन में क्या बनाया जाय? सेठजी ने कहा- बहू! आज चतुर्दशी है, संत भगवंतों का सुयोग भी प्राप्त है, इसलिए मेरी भावना उपवास करने की है। तुम अपने लिए जो बनाना है, बना सकती हो।

बहू सोचने लगी कि इस अवस्था में पिताजी उपवास करने की भावना कर रहे हैं, मैं तो जवान हूँ, सहजता से तप कर सकती हूँ अतः मुझे भी उपवास करना चाहिये। घर में दो ही तो खाने वाले हैं, मैं अपने लिए क्यों बनाऊँ, अकेले के लिए आरम्भ-समारम्भ के बजाय उपवास करना ठीक ही है।

दूसरे दिन पारणे के समय बहू ने पूछा- पिताजी! पारणे के लिए क्या तैयार करूँ ?

बेटी! मेरी भावना है आज एक उपवास और कर लूँ। श्वसुर ने बेला किया तो बहू ने भी बेला कर लिया। तीसरे दिन बहू ने फिर पूछा- पिताजी! आज तो पारणक है, क्या बनाऊँ? श्वसुर ने कहा- बहू! मेरा तप ठीक चल रहा है, मैंने तेला कर लिया। बहू ने भी श्वसुरजी का अनुसरण कर तेला कर लिया। एक तेले से पेट की सफाई तो हुई ही, बहू के मन की सफाई भी हो गई।

तप से विकार मिटते हैं। तीन दिन की तपस्या के बाद बहू ने कहा- पिताजी! घर में ज्यादा काम तो है नहीं, फिर वर्षों पुराने नौकर को नहीं छोड़ना चाहिये। आजकल विश्वास वाले नये नौकर मिलते कहाँ हैं? नये नौकर का भरोसा भी तो नहीं किया जा सकता, इसलिए अपना पुराना नौकर ही ठीक है।

पिता ने पारणक कर लिया, बहू ने भी पारणक कर लिया। तप-साधना से श्वसुर ने बहू की सारणा कर ली। अनशन इन्द्रियों के विकार घटाता है। तन को स्वस्थ और मन को विशुद्ध रखने के लिए अनशन रामबाण औषधि है। आज कई हैं जो तप के महत्त्व से अनभिज्ञ हैं। वे प्रायः हम संतों से कहते हैं- महाराज! इस बच्चे को तो ध्यान नहीं, आप इसे प्रत्याख्यान नहीं करायें। बच्चों को नहीं, बड़ों के लिए भी कहने वाले हैं। महाराज! ये तो कभी तप करते नहीं इसलिए इनसे नहीं होगा। तप करने में कठिनाई होती है। मैं उनसे कहा करता हूँ कि आप संसार में रहते सैकड़ों कठिनाइयाँ

सहन करते हैं तो कर्म-काटने के लिए तप की कठिनाई सहना भारी क्यों लगती है? एक माँ कितनी कठिनाइयाँ सहन करती है? एक किसान जेठ की भरी गर्मी में खेत जोतता है, निरन्तर काम करता है, धूल-मिट्टी से सराबोर हो जाता है, उससे पूछो, क्या तुम्हें कोई तकलीफ हो रही है? किसान भरी सर्दी में रात को खेत की पाणत करता है, धोती ऊपर करके घंटों नंगे पाँव पानी में रहता है, फिर भी वह कष्ट का अनुभव नहीं करता। आप जानते हैं, न माँ को कष्ट होता है न किसान को, क्योंकि उन्हें मालूम है कि दुःख नहीं देखेंगे तो सुख मिलने वाला नहीं है। एक देशभक्त सैनिक युद्ध के मोर्चे पर सीना ताने खड़ा है। उधर से गोलियाँ चल रही हैं, बम बरस रहे हैं, जान को खतरा है, फिर भी देश की रक्षा के लिए लड़ रहा है तो क्या वह कष्ट का अनुभव करता है?

तप करने वाले की श्रद्धा है, उमंग है, उल्लास है, भावना है, तब कहीं तप होता है। भावना वाले दीर्घ तपस्या में एक सौ आठ बार वन्दन कर जाते हैं। मैंने ऐसी बहिनें देखी हैं। मैंने यह भी देखा है कि जिनके ८१ उपवास का पारणा है, पर फिर भी पारणे में केवल तीन द्रव्य। इक्कीस वर्षों से एकान्तर चल रहा है। तप करने वाले गरीब हों, उनके पास साधन नहीं, ऐसी बात नहीं है। किन्तु तप को आत्महित के लिए अपनाया है। कई बहिनें स्वयं तप करती हैं, परन्तु घर आए मेहमान को मिष्ठान्न खिलाकर भेजती हैं।

भगवान् महावीर ने विकार-शमन के लिए तप की जरूरत बताई। जो अनशन नहीं कर सकते वे ऊणोदरी तप कर सकते हैं। ऊणोदरी तप बालक कर सकता हैं, वृद्ध भी कर सकता है, रोगी भी कर सकता है। भूख से कम खाना ऊणोदरी तप है। कपड़ों की मर्यादा करना भी तप में शुमार है। आप मर्यादित वस्त्र रखेंगे तो आपको पेटियाँ और अलमारियाँ नहीं भरनी पड़ेंगी। आज बहिनों की तृष्णा बढ़ती ही जा रही है। घर में पचास नहीं, सौ साड़ियाँ हैं, फिर भी बाजार में नई डिजाइन देखी नहीं कि खरीद कर ली। न जाने कितनी साड़ियाँ हैं, कितने जोड़ी चप्पल-जूते हैं, फिर भी तृष्णा वहीं की वहीं। आज हर-एक को मैचिंग चाहिये। ड्रेस जैसी चप्पलें। ड्रेस लाल तो जूतियाँ भी लाल। कपड़े क्या, जूते क्या, चूड़ियाँ और बिन्दी भी मैचिंग की चाहिये। बस अन्तर है तो मुँह वैसा नहीं है।

जरूरत से ज्यादा संग्रह दूसरों के दुःख का कारण बनता है। साधु के लिए तो वस्त्र-पात्र की सीमा है, इसका मतलब आपको छूट है ऐसा नहीं। खाने में जिस प्रकार ऊणोदरी तप है वैसे ही जरूरत जितना बोलना भी तप में शुमार है। एक की चार सुनाने

वाले कई हैं। आप स्वयं होकर गम खा जाओ तो यह भी एक तरह का तप है। क्रोध के समय क्रोध नहीं करना तप है। क्षमा करने वाला बड़ा होता है। कभी प्रतिष्ठा में आँच आने वाले शब्द कोई कह दे तो गम खा जाओ, यह भी तप है। बीस अक्षरों के बजाय पाँच से काम चलता हो तो पाँच अक्षर बोलो।

आपने आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा.) का जीवन देखा है। पूज्य गुरुदेव अल्प भाषण करते थे। पूज्य गुरुदेव का अतिशय ही ऐसा था कि बड़े-से-बड़ा आदमी भी बात करने से पहले सोचता था। गृहस्थ या सामान्य साधु की क्या बात कहूँ, बड़े-बड़े आचार्य भी पूछते कि हमें बात करनी है।

वि.सं. २०२० में आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) अजमेर पधारे। तब भगवन्त श्रमण संघ में उपाध्याय थे। पूज्य आनन्दऋषि जी म.सा. आचार्य पद पर थे। उन्हें प्रायश्चित्त को लेकर कुछ विचारणा करनी थी। आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के साथ श्री कुन्दनऋषि जी थे, गुरुदेव के साथ मैं था। स्थंडिल के समय शहर की सीमा से बाहर आचार्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज ने मुझसे (मुनि श्री हीराचन्द्र जी से) कहा- उपाध्यायश्री से बात करने का समय कब है? आचार्यप्रवर स्वयं उपाध्यायप्रवर से पूछ सकते थे, लेकिन अल्पभाषी पूज्य गुरुदेव से कब बात करनी चाहिये यह बात उनके मन में थी। आप जरूरत है उतना बोलकर अपनी कीमत बढ़ा सकते हैं। बोलकर इज्जत बढ़ाना आपके हाथ में है तो इज्जत घटाना भी आपके हाथ में है। आप अगर अपनी कीमत बढ़ाना चाहते हैं तो कम बोलें, जरूरत के मुताबिक बोलें, हितकारी बोलें। जानते तो आप हैं, लेकिन व्यवहार में यह सूत्र कितना आता है, चिन्तन का विषय है।

अनशन को लेकर अपनी बात चल रही थी। अनशन तप है। ऊणोदरी तप है। तप का तीसरा भेद है- वृत्तिसंक्षेप। जितने पदार्थ सामने आयें उनमें से एक भी कम कीजिये, यह भी तप है। भोजन में रस लेने का त्याग करना अथवा विभिन्न रसों में कुछ के सेवन का त्याग करना रस-परित्याग तप है। काया को साधना के योग्य बनाए रखना, शीत, आतप आदि में अप्रमत्ततापूर्वक समत्व की साधना कायक्लेश तप है। इन्द्रियों को विषयों से हटाकर आत्मा में लीन करना प्रतिसंलीनता तप है। ये बाह्य तप हैं तो अन्तरंग तप है मन को विशुद्ध करना।

प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग ये आभ्यन्तर तप हैं। आपसे कोई त्रुटि हो जाय, उसका शुद्धीकरण करना प्रायश्चित्त तप है। जैसी

भूल हुई उसे यथारूप प्रकट करने वाले विरले होते हैं। पाप करने वाले बहुत हैं। पापाचरण करने वाले को कहने वाले कोई-कोई मिलते हैं और यथावत् कहने वाले तो विरले ही होते हैं। रोग-निदान के लिए आप डाक्टर को साफ-साफ बताते हैं, वहाँ छुपाव का काम नहीं। बीमारी क्या है, कब से है आप यथावत् बताते हैं लेकिन पाप प्रकट करना हो तो छुपाते हैं बताते भी हैं तो घटाकर कहते हैं। कभी मजबूरी में कहना भी पड़े तो अपने ऊपर डालने के बजाय दूसरों पर डालने का प्रयास होता है। यह कब होता है? यह तब होता है जब मन को विशुद्ध करने का भाव नहीं होता। इसलिए जान लेना चाहिए कि पाप का प्रायश्चित्त करना भी तप है।

विनय भी तप है। वैय्यावृत्त्य भी तप है। स्वाध्याय भी तप है। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) ने जीवन भर स्वाध्याय का आघोष किया। स्वाध्याय रूप तप से न जाने कितनों का जीवन बदला है, कितने ज्ञानी बने हैं, कितने देशविरति बने हैं, इसलिए कहना है स्वाध्याय भी तप है।

ध्यान भी तप है। एक दिन सबको जाना है। रोते-रोते जाने के बजाय तन की ममता उतार कर चलोगे तो जाते समय हाय-त्राय नहीं करना पड़ेगा, रोना नहीं पड़ेगा, हँसते-हँसते जायेंगे। शरीरादि से ममत्व का त्याग व्युत्सर्ग तप है। ममता रहेगी तो हाय-हाय रहेगी। आप अन्तरंग और बाह्य तप का स्वरूप समझ कर कर्मों का विशोधन करें, विकार घटायें। आप तप के स्वरूप को समझकर जीवन में तपश्चरण करें तो आप कर्मों का क्षय कर आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बन सकेंगे।

अनुकरणीय आदर्श

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रबल प्रेरक समाज-सुधार क्रांति के सूत्रधार परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति भक्ति-भावना के कारण विजयनगर के सुश्रावक श्री पारसमल जी खटोड़ प्रत्येक पूर्णिमा को विगत ११ वर्षों से आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन को पहुँचते हैं। इसी प्रकार सुश्रावक श्री अमरचन्द जी सांड, विजयनगर का प्रति माह पूर्णिमा को आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन हेतु पहुँचने का क्रम आठ वर्षों से निर्बाध चल रहा है। गुरुभक्ति का यह अनूठा रूप है। *-प्रतापचन्द सांड, क्षेत्रीय प्रधान, मध्य राजस्थान*

प्रवचन

शील रतन मोटो रतन

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.

ब्रह्मचर्य पालन के अनेक लाभ हैं, यथा- मनोबल एवं आत्मबल में वृद्धि, शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास, वासना एवं विषयों पर विजय से प्रमोद, शांति एवं सहिष्णुता का विकास आदि। महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने वैपेरी, चेन्नई में २९ अक्टूबर २००५ को फरमाये प्रवचन में शीलव्रत की आराधना हेतु महती प्रेरणा की है। प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन मेहता ने किया है। -*सम्पादक*

संसार के संसरण को समाप्त कर अविनाशी पद को प्राप्त करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् खंति-मुत्ती आदि दशविध धर्म के द्वारा चतुर्विध संघ का रक्षण और संवर्द्धन करने वाले, जीवन नैया के निर्णायक, चतुर्विध संघ के नायक अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन!

बन्धुओं! शारीरिक-मानसिक आधि-व्याधि से संत्रस्त बना हुआ एक भावुक भक्त संतों के श्रीचरणों में उपस्थित होता है और मन में रही हुई जिज्ञासा संत-मुनिराजों के चरणों में निवेदन करता है- भगवन्! तन को पुष्ट करने वाली, मानसिक बल बढ़ाने वाली, विल पॉवर स्ट्राँग करने वाली और कर्मों को जड़-मूल से नाश कर भव रोग विनाश करने वाली रामबाण औषधि कौनसी है? वह कौनसी दवा है जो सब रोगों को मिटाने वाली है? जिज्ञासु अपनी जिज्ञासा रख रहा है- भगवन्! आप अनुभवी हैं इसलिए मुझे ऐसी दवा बताएँ जो तन-मन और आत्मा के जितने भी रोग हैं उन सबको मिटा दे। आपकी दवा मिल जाने पर मैं अचल पद को पा सकूँ, मन को स्वस्थ तन को तन्दुरुस्त बना सकूँ, ऐसी मेरी अभिलाषा है।

क्या आपको भी ऐसी दवा चाहिए? (श्रोताओं से प्रश्न)

(श्रोताओं द्वारा 'हाँ') 'हाँ' तो आप कर रहे हैं, लेकिन दवा बताने के बाद दवा लेना मुश्किल हो जायेगा। वीतराग वाणी का आधार लेकर संत दवा

बताते भी हैं। आप सुन लें, समझ लें उससे काम नहीं चलता। काम चलता है दवा का सेवन करने से। दवा का सेवन करेंगे तो तन-मन के ही नहीं, आत्मा तक के सारे रोग समाप्त हो सकते हैं। इस दवा से आपकी विल पॉवर स्ट्राँग होगी, आत्मा के भाव रोग शमित होंगे। वह दवा है ब्रह्मचर्य की साधना। वह दवा है शील की आराधना। ब्रह्मचर्य की साधना से तन स्वस्थ हो सकेगा, मन बलशाली बनेगा, विल पॉवर स्ट्राँग होगी और भव-भव के कर्म-दलिक दूर होंगे। शील की आराधना से यह आत्मा अविनाशी-अचल पद को प्राप्त हो सकेगा।

शील धर्म की महिमा के बारे में आपने कई बार सुना है। शील धर्म के साधक की सेवा में देवता हाजिर रहते हैं। शास्त्रकार कहते हैं-

देव-दाणव-गंधव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा।
बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करेंति ते॥

आगम वाणी कह रही है- देव हो, दानव हो, गंधर्व हो, भूत-पिशाच हो वे ब्रह्मचर्य की साधना करने वालों के चरणों में सदा तत्पर रहते हैं। आप बोलते भी हैं-

शील रतन मोटो रतन, सब रत्नों की खान।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन॥

आपने यह दोहा कई बार सुना है, कई बार बोला भी होगा। शील भूषण है, शील औषधि है, शील रत्न है। शील का साधक पुरुष सर्प को हाथ में ले तो वह फूल की माला बन सकता है। कच्चे सूत के धागे से चालनी द्वारा पानी निकल सकता है। शूली सिंहासन के रूप में परिवर्तित हो सकती है।

सेठ सुदर्शन पर कलंक लगाया गया। उसे शूली की सजा सुनाई गई। किन्तु शील के प्रभाव से शूली सिंहासन बन गई। यह दृष्टान्त आपने कई बार सुना है। एक नहीं, अनेक दृष्टान्त सुने हैं। सीता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ी। आग पानी बन गई अर्थात् अग्नि प्रभावहीन हो गई। आप कहेंगे- महाराज! ये तो बहुत पुराने उदाहरण हैं। वर्तमान में ऐसे उदाहरण देखने-सुनने को नहीं मिलते। किन्तु आप एकान्त रूप में ऐसा नहीं कह सकते। आज भी शील की आराधना के उदाहरण मिलते हैं। मैंने पढ़ा है, समाचार-पत्र में पढ़ने को मिला कि आगोरा निवासी शारदा बहन सांसी जाति की थीं। शील न जाति देखती है न पांति।

शील की साधना चाहे जो करे उसे आनन्द की प्राप्ति होगी ही।

शारदा बहन का जन्म सांसी जाति में हुआ। उसका विवाह शांतिलाल से हुआ। बहन का स्वभाव हँसने का था। वह किसी से बोलती तो हँस कर बोलती। उसके स्वभाव को देखकर पति शांतिलाल के मन में शंका हो गई कि इसका चरित्र अच्छा नहीं है। हर व्यक्ति से हँसकर बात करना अच्छे चाल-चरित्र की निशानी नहीं हैं। शंकाशील व्यक्ति मन ही मन कई तरह की कल्पनाएँ करता रहता है। शंका मानव मन की कमजोरी है। शंकालु स्वयं के बारे में नहीं सोचता कि वह कहाँ जाता है, कहाँ रहता है, क्या खाता है? उसे अपने चरित्र की मालूम नहीं, लेकिन वह दूसरों के बारे में सोचता है और शंका-शंका में न जाने क्या-क्या धारणाएँ बना लेता है।

शारदा बहन सांसी जाति में पैदा हुई, लेकिन शील की साधिका थी। वह जिस किसी से बोलती, हँसकर बोलती। इससे उसके पति को शंका हो गई कि मेरी पत्नी दुष्चरित्र है। उसका शील-स्वभाव अच्छा नहीं है।

शील की साधना के लिए ज्ञानियों ने नौ बाड़ का पालन करने की बात कही है। यहाँ मैं एक बात और कहना चाहूँगा कि श्रावक की ब्रह्मचर्य की साधना और हम श्रमणों की ब्रह्मचर्य की साधना में बहुत बड़ा अन्तर है। हम संत तीन करण-तीन योग से अब्रह्म का त्याग करते हैं। श्रावक का नियम एक करण-एक योग से है, फिर भी वह नियम लेने से घबराता है। आज कई श्रावक साठ वर्ष के हैं, कई साठ वर्ष की आयु पूरी कर चुके हैं, पैंसठ-सत्तर वर्ष के हो गए, उन्हें ब्रह्मचर्य का नियम लेने को कहा जाता है तो भी उन्हें खड़े होने में संकोच होता है। कई-कई तो ऐसे श्रावक भी हैं, जो कहते हैं- बाबजी! थोड़ा ठहरो, अभी बेटे की शादी करनी है, शादी के बाद विचार करूँगा।

इतना घबराने की जरूरत नहीं है। श्रावक के लिए मनुष्य-तिर्यंच संबंधी एक करण-एक योग से त्याग होता है। आपको सेवा-शुश्रूषा की जरूरत है तो उसकी मनाही नहीं है।

शील की साधना के लिए साधु के महाव्रत अलग हैं, श्रावक के व्रत अलग हैं। आपको श्रावकों के अतिचारों की जानकारी होनी चाहिये। श्रावक के चौथे व्रत के अतिचार कौनसे हैं? आप प्रतिक्रमण में रोज बोलते हैं वे अतिचार हैं-इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अनंगकीड़ा, परविवाहकरणे

और कामभोगतिव्वाभिलासे। आप रोज बोलते हैं पराये का विवाह नाता कराया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं। क्या वह बोलने तक ही है?

एक गाँव में हमारा जाना हुआ। एक भाई आया। बोला- हमने सामूहिक विवाह का आयोजन रखा है। अनेक जोड़े यहाँ आयेंगे। विवाह करेंगे। आप कृपा करके वहाँ पधारो और मांगलिक सुनाओ। क्या संतों का यही काम हैं? आप शादी-विवाह पर भी संतों को बुलाना चाहेंगे? मकान का मुहूर्त हो तो भी संतों को बुलाना चाहेंगे? आप कहते भी हैं- बाबजी! पधारो, म्हारे घर पगलिया कर दो तो म्हारो घर पवित्र हो जाय।

संत शादी के प्रसंग पर नहीं जाते मकान के मुहूर्त पर नहीं जाते। ऐसे प्रसंग पर जाना हमारी कल्प मर्यादा में नहीं है। आप साधु की क्या मर्यादाएँ हैं उन्हें समझें। त्याग कैसे होता है उसकी जानकारी करें। जानकारी करके व्रत लेंगे तो फिर कोई बाधा आने वाली नहीं है। श्रावक नहीं समझने के कारण अब्रह्म का सेवन करता है और स्वरूप समझ ले तो नियम का सहज पालन संभव है।

आप व्यवहार में सजग हैं, किन्तु व्रत-प्रत्याख्यान में सजग नहीं हैं। इसीलिए घबराते हैं कि कहीं नियम ले लिया और टूट गया तो....? व्रत-नियम में ऐसा सोचते हैं, लेकिन दुकान करते ऐसा नहीं सोचते कि दुकान की और घाटा हो गया तो? बेटी की शादी करते हैं कभी अच्छा वर नहीं मिले तो क्या आगे अन्य बच्चों की शादी करना बन्द कर देते हो? आप संसार के सभी काम शंका के कारण बंद नहीं करते, लेकिन व्रत अंगीकार करने की जब भी बात कही जाती है तो आप यह शंका जाहिर करते हैं कि व्रत टूट गया तो? हाँ मन की चंचलता से दोष लग सकता है, भगवान ने उसके शुद्धीकरण का भी मार्ग बतलाया है। दोष लग जायेगा, इसके डर से व्रत नहीं लेना उचित नहीं है। व्रत नहीं लेने से बहन-बेटी की क्रिया आती है। इससे पता चलता है कि अब्रह्म कैसा घातक है? चौथे व्रत की मर्यादा करनी चाहिये। पर-स्त्री का त्याग जरूरी है। मैं सारे उदाहरण रखूँ इतना समय नहीं है।

आप व्रत अंगीकार करें। इससे आपका जीवन मर्यादित बनेगा। ब्रह्मचर्य की साधना से व्यक्ति देवताओं का पूजनीय बन सकता है। ब्रह्मचर्य की पालना से धरती का धर्म बदला जा सकता है। आप पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार करें तो सर्वश्रेष्ठ है। पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करने की अभी जिनकी स्थिति

नहीं है वे पत्नी के अतिरिक्त प्रत्येक स्त्री को माँ-बहन समझें। इसमें तो किसी को कोई हर्ज नहीं होना चाहिये। एक पत्नी के साथ मर्यादित जीवन जीया जा सकता है। एक स्त्री के साथ मर्यादित जीवन भी संतोष का कारण है तो पूर्ण ब्रह्मचारी के आनन्द का तो कहना ही क्या? ब्रह्मचर्य के आनन्द को शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

अपना प्रसंग चल रहा था कि शारदा पर शांतिलाल को शक हो गया। यह घटना बहुत पुरानी है, ऐसी बात नहीं। यह १९७० की घटना है। इन्दौर से प्रकाशित नई दुनियाँ में छपी थी। शारदा बहिन का मामला पंचों के पास पहुँचा। पंचों ने कहा- यह सती है या कुलटा इसकी परीक्षा करनी है। पंचों ने फैसला दिया- सात पीपल के पत्ते लाओ। पीपल के पत्तों पर कच्चा सूत लगाओ। गर्म-गर्म हथौड़ा जो एकदम लाल हो गया हो पीपल के पत्तों पर रखो। गर्मागर्म हथौड़े से हाथ नहीं जले तो समझना चाहिये इसका चारित्र अच्छा है और हाथ जले तो समझना चाहिये कि यह कुलटा है। शारदा बहन के मन में कोई शंका नहीं थी। वह परीक्षा से गुजरी।

आज आप पाप के परिणाम से तो डरते हैं, किन्तु पाप से नहीं डरते। डरना है तो पाप से डरो। एक भाई चोरी करता हुआ पकड़ा गया। उससे पूछा गया- तुम कैसे पकड़े गये? वह बोला- मैंने सावधानी नहीं रखी इसलिए पकड़ा गया। अगर सावधानी रखता तो पकड़ा नहीं जाता। वह चोरी को बुरा नहीं मानता, पकड़े जाने को बुरा मानता है।

संत-महात्मा कहते हैं पाप से डरो। आगम वाणी कह रही है- पाप कर्म के बंधन से बचो।

पंचों ने शारदा की परीक्षा ली। बहन ने सूखे पत्ते पर हाथ रखकर इष्ट देव का स्मरण किया। मन ही मन भावना भाई कि मैंने मन से पर पुरुष की कभी चाहना तक नहीं की है, मैं अपने धर्म पर दृढ़ रही हूँ तो मेरी रक्षा करना। शील की साधना का फल देखिये- पीपल के सूखे पत्ते और कच्चा सूत गर्मागर्म हथौड़े से जला नहीं। हाथ जलने की बात तो दूर पत्ते तक नहीं जले। यह है शील का प्रभाव।

ऐसी घटनाएँ कई हैं सबको कहा नहीं जा सकता। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज का जीवन आपने देखा है। उस महापुरुष

ने सर्प को हाथ में लेकर जंगल में छोड़ दिया। अभयारण्य में शेर आया। पूज्य गुरुदेव जहाँ विराजमान थे वहाँ चक्कर लगाकर लौट गया।

आपने आचार्य भगवन्त के दृष्टान्त भी सुने हैं- पढ़े हैं, शायद किसी ने देखे भी होंगे। मेरा कथन तो मात्र इतना है कि ब्रह्मचर्य की आराधना या शील की साधना से तन-मन ही नहीं आत्मा भी पावन-पवित्र बनती है।

<u>आचार्यश्री हीरा की ६८वीं जयन्ती पर</u>

श्रद्धा सुमन समर्पण लो

श्री विजय कोचर

तुम सत्य धर्म के उद्‌बोधक,
संयम के अचल हिमालय हो।
मनुज रूप में दिव्य देव,
चलते-फिरते देवालय हो।
तुम जाति धर्म के नहीं प्रभो,
पीड़ित मानवता के पोषक हो।
मंगलमय इस जन्म-दिवस पर,
श्रद्धा सुमन समर्पण लो ।।१।।

गणि गजेन्द्र के गंगाधर तुम,
जिनधर्म तत्त्व के ज्ञाता हो।
हे आठ सम्पदा के स्वामी तुम,
इस युग में भाग्य विधाता हो।
मोहिनी-मोती के लाल अमर,
युग-युग तक तेरा जीवन हो।
मंगलमय इस जन्म-दिवस पर,
श्रद्धा सुमन समर्पण लो ।।२।।

रत्न-राशि के भूषण स्वामी
तुम रत्नवंश के भूषण हो।
हे कालजयी मृत्युंजय गुरुवर,
क्रूर काल तुम्हें छू न सके।
बस तेरी श्रद्धा से ही गुरुवर,
यह जीवन सदा बहार रहे।
यही कामना श्री चरणों में,
सदा तुम्हारी 'विजय' विजय हो।
मंगलमय इस जन्म-दिवस पर,
श्रद्धा सुमन समर्पण लो ।।३।।

-बी, ३४९, लक्ष्मीनगर, जोधपुर (राज.)

चरणों में आज प्रभु

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

(तर्ज- जिया कब तक उलझेगा)

चरणों में आज प्रभु, नहीं और कोई फरियाद।
अब जन्म-मरण मेटूँ, देना वो आशीर्वाद ।।टेर ।।

दुःख को मानूँ वरदान, बाधाओं से खेलूँ,
चाहे सुमन मिले या शूल, जो मिल जाए ले लूँ।
समता का भाव रहे, नहीं आये हर्ष विषाद ।।१ ।।

परखा मैंने संसार, पर सार न कुछ पाया,
कहीं राग कहीं ईर्ष्या, कहीं द्वेष कहीं माया।
अब सत्य की राह मिले, वैराग्य रहे आबाद ।।२ ।।

हर पल जिनवाणी का, प्राणों में गुंजन हो,
जीवन के कण-कण में, आज्ञा आराधन हो।
निज लक्ष्य पे दृढ़ता से, बढ़ता ही रहूँ निर्बाध ।।३ ।।

नहीं चाहूँ पद पूजा, नहीं चाहूँ सुख साधन,
नहीं चाहूँ यश ख्याति, नहीं चाहूँ भौतिक धन।
बस चाह मेरी है एक, रहे समकित गुण की याद ।।४ ।।

जो राग-द्वेष छलते, पलते जो चार कषाय,
मैं मुक्त बनूँ इनसे, कहो ऐसा कोई उपाय।
"गौतम" से प्रभु कहते, जागो अब छोड़ प्रमाद ।।५ ।।

-मध्याह्न काल में सिवाना में उच्चारित

श्री मनोहरजी श्रीश्रीमाल, बालोतरा द्वारा संकलित

सेवा : प्रभु महावीर की दृष्टि में

न्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा

आम लोगों में यह धारणा प्रचलित है कि भगवान महावीर की साधना व्यक्ति आधारित है एवं उसका समाज-निर्माण, समाज-अभ्युदय एवं समाजसेवा से किसी तरह का वास्ता नहीं है। यह धारणा भ्रामक है एवं वस्तुस्थिति के एकदम विपरीत है। वस्तुतः प्राणिमात्र की सेवा का महावीर से बढ़कर कोई उद्घोषक नहीं है।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सेवा एवं परोपकार दोनों में बहुत अन्तर है। सेवा का आधार है "आत्मौपम्य भाव" जहाँ दूसरे का दुःख, दर्द, कष्ट पर का नहीं अपना ही कष्ट बन जाता है। सेवा की नहीं जाती, होती है और उसके मूल आधार हैं करुणा, वात्सल्य एवं द्रवीभूत होना। परोपकार में पर का भाव है, पर का उपकार है, आत्मौपम्य भाव का वहाँ अभाव है। कहा है "दयादानाद्विशिष्यते परोपकारः।" परोपकार में दया एवं दान मुख्य तत्त्व हैं। दया दूसरों पर की जाती है। दान दूसरा जान कर दिया जाता है अतएव परोपकार में अन्य के कष्ट के निवारण का भाव तो है, परन्तु दूसरे के कष्ट को अपना मानने एवं अन्य के कष्ट से करुणार्द्र हो द्रवित होने का भाव नहीं होता। परोपकार पैसे से भी किया जा सकता है, परन्तु सेवा में 'स्व' का गतिशील होना आवश्यक है। तभी एक कवि ने कहा है-

तन से सेवा कीजिये, मन से भले विचार।
फिर पैसा हो पास में तो कीजे पर उपकार॥

भगवान महावीर ने फरमाया है कि "**सव्वभूयप्पभूयस्स**" अर्थात् संसार के प्राणिमात्र की आत्मा हमारी ही आत्मा के समान है। प्रभु महावीर का घोष है कि "**एगे आया**" "**अत्तसमं मनिज्ज छप्पि काए**" "**एगा माणुस्सजाई।**" 'एगे आया' का अर्थ है तत्त्वतः सारी आत्माएँ एक समान हैं। 'अत्तसमं मनिज्ज छप्पिकाए' का अर्थ है कि छह ही काय के जीवों की आत्मा को अपनी आत्मा के समान मानो एवं 'एगा माणुस्सजाई' का अर्थ है कि जन्म एवं आत्मभाव की

दृष्टि से सारे मानव समान हैं। ऐसा 'आत्मौपम्यभाव' एवं आत्मा के एकत्व का भाव अन्यत्र कहीं इतनी गहराई में दृष्टिगत नहीं होता है। आत्मा का यह एकत्व का भाव ही आत्मौपम्य भाव है जहाँ 'दूसरे का भाव' रह ही नहीं जाता, पराये का भाव पनप ही नहीं पाता है। तभी महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन ६ गाथा २ में फरमाया है कि "**मेत्तिं भूएसु कप्पए**" अर्थात् प्राणिमात्र के साथ मैत्री भाव स्थापित करो। प्रभु महावीर ने अपने अनुयायी की पहचान बताते हुए फरमाया है कि "जागरवेरोवरए वीरो" अर्थात् जो सतत जागृत है एवं वैर से उपरत है, वही महावीर का अनुयायी है। सतत जागृत वह है जो आत्मस्थ है एवं आत्माओं के एकीभाव में श्रद्धावनत है तथा वैर से उपरत वह है जो आवश्यक सूत्र के अनुसार "**मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणई**" में विश्वास रखने वाला है अर्थात् जो प्राणिमात्र के प्रति मैत्रीभाव से ओतप्रोत है एवं किसी से किसी प्रकार का वैर नहीं पालता वही प्रभु महावीर का अनुयायी बनने का अधिकारी है। जो सबसे मैत्री भाव रखेगा एवं किसी से वैर पालेगा ही नहीं वही व्यक्ति "आत्मौपम्य भाव" से ओतप्रोत हो सेवा का अधिकारी बनता है। आचार्य उमास्वाति ने प्रभु महावीर के इस दर्शन को व्याख्यायित करते हुए तत्त्वार्थसूत्र अध्याय ५ सूत्र २१ में फरमाया है- "परस्परोग्रहो जीवानाम्" अर्थात् प्राणियों में परस्पर में एक दूसरे के उपकार का भाव ही मानव जीवन के अस्तित्व का लक्षण एवं पहचान दोनों है।

प्रभु महावीर औपपातिक सूत्र में फरमाते हैं,

सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला हवंति।
दुच्चिणा कम्मा दुच्चिणफला हवंति॥

अर्थात् सुकृत का फल सुकृत एवं दुष्कृत का फल दुष्कृत होता है। संस्कृत में कहें तो "सुकृतम् सुकृतयः", हिन्दी में- "कर भला हो तो हो भला।", अंगेजी में कहें तो- **The best way to gather is to scattter** प्रभु महावीर पुनः कहते हैं कि "असंविभागी न हु तस्स मोक्खो" अर्थात् जो बाँटकर नहीं खाता वह मोक्ष का अधिकारी नहीं है। इसीलिए प्रभु महावीर ने यह महत्त्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिया है कि "आयतुले पयासु" अर्थात् दूसरे का कष्ट, दूसरे का नहीं अपना स्वयं का समझो। यही 'आत्मौपम्य भाव' है। यही सेवा का अमोघ सूत्र है। प्रभु महावीर ने सेवा का उल्लेख 'वैयावच्च'

के रूप में प्राकृत भाषा में व्याख्यापित किया है। सेवा (वैयावच्च) का महत्त्व दिग्दर्शित करते हुए आवश्यक सूत्र, हारिभद्रीय टीका श्लोक ६६१-६६२ में प्रभु महावीर एवं गौतम गणधर का संवाद उद्धृत है, जिसमें गणधर गौतम प्रभु महावीर से जिज्ञासा प्रस्तुत करते हुए कहते हैं- "भगवन्! एक साधक अपना सर्वस्व आपको समर्पित कर आपके चरणों में रहकर आपकी सेवा करता है और दूसरा साधक आपके सान्निध्य या चरणों में तो नहीं रह पाता, परन्तु वह रोगी, ग्लान, दुःखी, दरिद्र एवं पीड़ित की सेवा में पूर्ण समर्पण भाव से लगा रहता है। प्रभु बतावें इन दोनों में धन्य कौन है?" प्रभु महावीर ने फरमाया- "हे गौतम! मेरी एवं सभी अरिहंतों की आज्ञा की आराधना एवं पालना करना ही मेरी आराधना है, अर्चना है, सेवा है, पूजा है। यही अरिहंत दर्शन है। मेरा व सभी पूर्व तीर्थंकरों का कहना है-"आणाए धम्मे" अर्थात् वीतरागों की आज्ञा का पालन ही धर्म है अतएव जो रोगी, पीड़ित, ग्लान, दुःखी एवं दरिद्र की सेवा करता है वही धन्य है, क्योंकि मैंने स्वयं ने कहा है कि "**जे गिलाणं परिचरइ ते मम णाणं बुज्झइ।**" यानी रोगी, दुःखी, ग्लान की सेवा करने वाले ने ही मेरा ज्ञान समझा है। प्रभु कहते हैं उनकी सेवा मेरी ही सेवा है। तभी प्रभु ने फरमाया है कि "**जे गिलाणं पडिरयइ ते धन्ने**" यानी दुःखी, ग्लान व पीड़ित की सेवा करने वाला ही धन्य है ऐसा ही अरिहंतों की आज्ञा का सार है। इस प्रकार रोगी, ग्लान, दुःखी एवं पीड़ित की सेवा को प्रभु महावीर ने अपनी सेवा करने वाले से अधिक महत्त्व देकर उसे धन्यतायुक्त माना है। प्रभु महावीर की सेवा भावना का यह निचोड़ एवं सार-संक्षेप है।

प्रभु महावीर ने तीर्थंकर गोत्र बंध के अनेक कारणों में वैयावच्च (सेवा) को तीर्थंकर गोत्र बंध का महत्त्वपूर्ण अंग बताया है। प्रभु महावीर कहते हैं- "वैयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ।" मुनि नंदिषेण ने तो इस वैयावच्च (सेवा) के आधार पर ही केवलज्ञान प्राप्त किया था। प्रभु महावीर के पश्चात्वर्ती आचार्यों ने प्राकृत वाङ्मय में कहा है- "**सेवापहाणो हि मणुस्सधम्मो।**" अर्थात् सेवा में रत रहना ही मानवता की पहचान है। आचार्य हरिभद्र ने धर्मबिंदु ग्रन्थ में कहा है कि "**बंधुसहाओ धम्मो**" अर्थात् स्वधर्मी एवं बंधु की सेवा करना धर्म है। आगे बढ़कर इसी ग्रंथ में कहते हैं- "मैत्री रहित दया नमकरहित भोजन है" यानी सेवा भी दुराव से नहीं ससम्मान, मैत्रीभाव, आत्मौपम्य भाव से की जावे

तभी उसका समुचित फल प्राप्त होता है। एक उत्तरवर्ती जैनाचार्य का कथन है- ''सेवाभावेन विवर्धते।'' अर्थात् यह अनुभूत सत्य है कि समाज का टिकाव, विकास एवं उत्थान या उत्कर्ष उसके घटकों की सेवा भावना पर ही निर्भर है। आचार्य अमितगति ने 'अमितगति श्रावकाचार' के उद्देशक १३ श्लोक ६६ में कहा है-

गृहस्थोऽपि यतिर्ज्ञेयो वैयावृत्त्यपरायणः।
वैयावृत्त्यविनिर्मुक्तो, न गृहस्थो न संयतः॥

अर्थात् जो गृहस्थ श्रावक वैयावृत्त्य (सेवा) में तत्पर एवं सन्नद्ध है उस गृहस्थ श्रावक को भी साधु के समान आदर एवं सम्मान प्रदान करें क्योंकि सेवा परम धर्म है, धर्म का शिखर है, मगर यदि वह श्रावक कहा जाने वाला व्यक्ति सेवा भावना से विनिर्मुक्त (यानी सेवाभाव से युक्त नहीं) है तो वह न तो साधु कहलाने योग्य है न ही श्रावक कहलाने का अधिकारी है।

सेवा एक संकल्प है, संस्कार है, संस्कृति है, त्याग युक्त साधना है, जीवन पद्धति है, जीवन व्यवहार एवं दर्शन है। वह अहंकार, प्रचार, प्रदर्शन, ढोंग, दिखावा या आडंबर की विधा नहीं है। सेवा करने हेतु जीवन में निष्ठायुक्त-समर्पण, विनम्रता, साधना, सकारात्मक व सक्रिय सहयोग, सहभागिता का भाव, अनुकम्पा, करुणा एवं वात्सल्यभाव होना अत्यन्त आवश्यक है। स्व को यानी स्वार्थ को खोये बिना सेवा संभव ही नहीं है। तभी एक उर्दू शायर ने कहा है- ''जो अपनी खुदी से जुदा हो गया, खुदा की कसम वह खुदा हो गया।'' सेवाभावी कंकर में शंकर, नर में नारायण, आत्मा में परमात्मा के दर्शन के भाव से ओतप्रोत होता है। उसका ध्येय होता है- 'वसुधैव कुटुम्बकम्'' अर्थात् समस्त वसुधा उसी का कुटुम्ब है, कोई पराया है ही नहीं। यह सेवाभाव एक उर्दू शायर के अनुसार वहीं फलित होता है जहाँ व्यक्ति चरित्र की वह ऊँचाई प्राप्त कर लेता है जब उसे महसूस हो कि ''तलाशे जुश्तजु की सरहदें अब खत्म होती हैं। खुदा मुझको नजर आने लगा है इन्सान कामिल में।'' अर्थात् अब खुदा की तलाश करने की सरहद समाप्त हो चली है, क्योंकि मुझे नर से नारायण नजर आने लगा है। सूफी संत शेखशादी कहते हैं, ''तरीकत बजुज खिदमते खल्क नेश्त। ब तस्बीह, बसज्जादा बदल्क नेश्त।'' अर्थात् प्राणिमात्र की सेवा (खिदमत) ही सच्चा धर्म है। यदि ऐसा नहीं है तो फकीरी का

चोगा, नमाज का मुसल्ला व खुदाबंद को स्मरण करने हेतु माला (तस्बीह) सभी बेकार हैं, मात्र ढोंग हैं।

मेरा उद्देश्य परोपकार के महत्त्व को कम करना नहीं है। वह अलग विषय है जिस पर फिर कभी लिखूँगा, परन्तु सेवा में 'पर का भाव' या 'पर के उपकार का भाव' टिक ही नहीं पाता। सेवा-भाव परोपकार से कई गुना महत्त्वपूर्ण भाव है। वहाँ स्व-पर की सरहदें समाप्त हो आत्मौपम्य भाव जागृत हो जाता है। मेरी बात को एक दो दृष्टान्तों से आप तक पहुँचाना चाहूँगा। एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अमेरिकन सीनेट में व्याख्यान देने जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक सूअर को कीचड़ में धंसते देखा। उन्होंने तुरंत गाड़ी रुकवाई, नीचे उतरे व सूअर की टांग पकड़कर उसे कीचड़ के बाहर खींचा। बाहर खींचते ही सूअर ने अपने स्वभावानुसार कीचड़ से निजात पाने को अपने शरीर को झिंझोड़ा, जिससे महामहिम राष्ट्रपति के कपड़े कीचड़ में सन गये। घर जाकर कपड़े बदल कर आने का समय उनके पास नहीं रहा अतएव राष्ट्रपति लिंकन उसी कीचड़ सने लिबास में सीनेट में गये एवं अपना महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिया। उनके कपड़े देख सभी आश्चर्यचकित थे। कुछ ने सोचा उनकी पत्नी बहुत उग्र स्वभाव की है यह उसी की कारस्तानी होगी, पर कुछ लोगों ने बाहर जाकर ड्राइवर एवं गनमेन से सारी हकीकत जान भाषण के बाद उनकी करुणा भावना के लिए धन्यवाद दिया तो महामहिम लिंकन ने फरमाया कि इसमें धन्यवाद की कोई बात ही नहीं है। जब वह सूअर बावजूद सारे प्रयत्न के कीचड़ में धंसता ही जा रहा था तो मुझे उस समय ऐसा लगा था कि मैं ही कीचड़ में धंसा जा रहा हूँ। मेरी साँस गले तक आ गई। मुझे भी चैन मिला जब मैं उस सूअर को कीचड़ से बाहर निकाल पाया। यह है आत्मौपम्य भाव जब सूअर स्वयं राष्ट्रपति लिंकन का पर्याय बन जाता है।

एक अन्य उदाहरण है कि पंजाब के किसी छोटे गाँव के स्टेशन से एक ८० वर्षीय बूढ़ा आदमी अपनी गठरी कंधे पर रखे ट्रेन के डिब्बे में चढ़ने लगा। हेंडल हाथ में आया इतने में गाड़ी चल पड़ी। डिब्बा पूरी तरह भरा था अतः वह अंदर नहीं आ पाया और जर्जरता के कारण वह जब नीचे गिरने की स्थिति में आया तो मदद हेतु बड़ी करुण आवाज में चिल्लाया, पर किसी ने उसकी पुकार पर ध्यान नहीं दिया। वही करुण आवाज दो गबरू जवान जो बीच की सीट में

खिड़की के सहारे बैठे थे उनके कानों में पड़ी। बिजली का करेंट लगा हो वैसे दोनों ही शख्स साथ-साथ उठे। भीड़ को चीर दरवाजे पर पहुँचे एवं दोनों ने बूढ़े बाबा को खींचकर गाड़ी के भीतर लिया। उसकी गठड़ी उठा कर अपनी सीट पर लाकर उसे बिठाया। उसने उन दोनों जवानों का बहुत शुक्रिया अदा किया एवं ढेर सारे आशीर्वाद देते हुए कहा कि यदि वे जरा भी देर करते तो वह गिर ही जाता। उन्होंने कहा -''बाबा! इसमें धन्यवाद की कोई गुंजाइश ही नहीं है। आपकी करुण आवाज ने हमें भीतर तक हिला दिया। हमें लगा आप नहीं, हम ही गिर रहे हैं। अतः अपने आपको रोक ही नहीं पाये व भीड़ को चीरते हुए आप तक पहुँच ही गये। जब तक परिचय पूछते अगला स्टेशन आ गया एवं दोनों गबरू जवान बाबा को यह कहते हुए गाड़ी से उतर गये कि उनमें से एक का नाम 'भगतसिंह' है एवं दूसरे का नाम 'राजगुरु'। यह है आत्मौपम्य भाव जहाँ दूसरा विलीन हो जाता है स्व में। इसी एकाकार भाव को आत्मौपम्य भाव कहा जाता है जो सेवा की आधारशिला है। प्रभु महावीर ने 'एगे आया' 'अत्तसमं मन्निज्ज छप्पिकाए' एवं 'सव्वभूयप्पभूयस्स' एवं 'मित्ती मे सव्वभूएसु' सदृश सूत्र वाक्यों से इसी आत्मौपम्य भाव से सेवा की देशना देकर उसकी फलश्रुति से तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन होना बताया है। एक संस्कृत सुभाषित में सही कहा है- ''सेवोद्धारमयी मतात्र जगतः'' अर्थात् प्राणिमात्र की सेवा करना ही संसार से उद्धार का सर्वोत्कृष्ट साधन है।

-२०/३३, रेणु पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

इंजेक्शन से दूध

आजकल हर गाँव, हर प्रांत में अधिक मात्रा में दूध हासिल करने के लिए दुधारू पशुओं को ऑक्सीटोसिन का इंजेक्शन लगाकर दूध निचोड़ने का सिलसिला तेजी से बढ़ रहा है। आलम यह है कि यह इंजेक्शन अब परचून की दुकानों पर भी धड़ल्ले से बिक रहा है। इंजेक्शन से निकाला गया दूध मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक होता है। पशुओं के शरीर से बड़ी संख्या में 'पिट्यूटरी हार्मोन' निकलता है, जो मनुष्य के शरीर में घातक बीमारियों को अंजाम देता है। चिंता की बात यह है कि इसे रोकने का अधिकार न तो खाद्य नियंत्रण अधिकारी के दायरे में आता है और न ही औषधि विभाग के, अगर इसे औषधि विभाग के अधिकार क्षेत्र में दे दिया जाए तो इस पर रोक लग सकती है।

पाठक पीठ, राजस्थान पत्रिका दिनांक ५ अप्रेल २००६ से साभार

सर्वाङ्गीण विकास का साधन : सामायिक व्रत(४)

श्री प्रेमचन्द कोठारी

जिज्ञासा- आज जीवन इतना व्यस्त है कि सामायिक के लिए समय ही कैसे निकाला जाए?

समाधान- जैसे नित्य शौच के लिये, मंजन के लिये, स्नान के लिये, भोजन के लिये, विश्राम आदि के लिये चाहे जितनी व्यस्तता होने पर भी समय निकालते ही हैं, वैसे ही सामायिक के लिए भी समय निकल सकता है। शौचादि कार्य तो शरीर से संबंधित हैं। शरीर का जीवन में महत्त्व ध्यान में होने के कारण हम उसके लिए समय निकालते हैं, लेकिन वास्तव में शरीर या जीवन का महत्त्व आत्मा के अस्तित्व पर ही निर्भर है, आत्मा के अभाव में शरीर को जला या गाड़ दिया जाता है। अतः शरीर से भी अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका हमारे जीवन में आत्मा की है। अतः हमें आत्मा के विकास व संरक्षण की आवश्यकता ध्यान में रखकर इसके लिये अवश्य समय निकालना चाहिये। (आत्मा के संरक्षण, विकास व समाधि के लिये सामायिक अत्यावश्यक व सरल प्रक्रिया है) चाहे जितना व्यस्त जीवन होने पर भी प्रत्येक प्राणी विश्राम के लिये अवश्य समय निकालता है, क्योंकि विश्राम से कार्य करने की क्षमता प्राप्त होती है, थकान मिटती है, ताज़गी बनी रहती है, ठीक इसी प्रकार सामायिक भी पूर्ण वैज्ञानिक विश्राम है। निर्दोष सामायिक करने से एक घंटे में उतनी ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है जितनी ३ घंटे सोने पर भी मिलनी कठिन है। महात्मा गाँधी को जब भी समय मिलता वे थोड़ी देर के लिये शांत हो जाते थे या भगवत् स्मरण करने लगते थे। उनका कहना था कि इससे कार्य करने की क्षमता प्राप्त होती है, नींद की आवश्यकता कम हो जाती है, थकान मिट जाती है। आजाद हिन्द फौज के नायक सुभाषचन्द्र बोस से एक बार उनके सचिव ने कहा कि आप रोज १ घंटे ईश्वर भजन में निकालते हैं, यह कृपया बंद कर दें, एक बार देश आजाद करवा दीजिये फिर भले ही संन्यासी बनकर दिन-रात ईश्वर भक्ति में ही रहिए। इस समय आपका एक-एक क्षण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व मूल्यवान है। सुभाष बाबू ने उत्तर दिया कि आज तो तुमने यह सलाह दी है, भविष्य में ऐसी सलाह न दें। एक घंटे ईश्वर-भक्ति से इतनी ऊर्जा प्राप्त होती है जिससे मैं २३ घंटे सब काम सुव्यवस्थित कर लेता हूँ, मेरी डिस्चार्ज हुई बेटरी को चार्ज करने की यह सुन्दर

प्रक्रिया है। वास्तव में जो अपने जीवन में आत्मा के लिये समय नहीं निकालता है, उसका जीवन चमार की तरह या मात्र रोटी-कपड़े के एवज में नौकरी करने वाले नौकर के समान है। जैसे चमार दिन-रात चमड़े की सफाई, पॉलिश आदि कार्य करता है उसी प्रकार हम भी दिन-रात चमड़े व हड्डी को सुरक्षित, विकसित एवं नीरोग बनाये रखने के लिये कभी शौच, कभी भोजन, कभी स्नान, कभी मंजन, कभी विश्राम, कभी मालिश आदि करते हैं। अतः हमको चमार जैसे जीवन से ऊपर उठकर आत्म-साधना के महत्त्व को समझकर अपने दैनिक जीवन में सामायिक को अवश्य स्थान देना चाहिये। जैसे बिना वेतन लिये रोटी-कपड़े में काम करने वाला नौकर नहीं मिल सकता, वेतन व रोटी-कपड़े के साथ उसकी नौकरी की सीमा भी होती है, हम अगर जीवन में आत्म-साधना को स्थान नहीं देते हैं तो हम चौबीस घंटे के मात्र रोटी-कपड़े के नौकर से बढ़कर और कुछ नहीं हैं। अतः हमको सब कार्यों को गौण कर सामायिक को अवश्य स्थान देना चाहिये।

लाख खंडी सोना तणी, लाख वर्ष दे दान।
सामायिक तुल्य नहीं, भाख्यो श्री भगवान्॥

जिज्ञासा- सामायिक के लिये समय भी निकालें, लेकिन कोई चमत्कार तो दिखाई नहीं देता है, फिर क्यों समय निकाला जाए?

समाधान- आज आम आदमियों का झुकाव व आकर्षण भौतिकता, धन-वैभव पर ही रह गया है, आदर भी धनवान या वैभव सम्पन्न का होता है, अतः जिस कार्य से भौतिकता, धन-वैभव की प्राप्ति हो, वृद्धि हो उस कार्य को चामत्कारिक माना जाता है। जैसे आम्रवृक्ष लगाने वाला आम देर से प्राप्त करता है, लेकिन शीतल छाया स्वास्थ्यवर्द्धक वायु द्वारा प्रदूषण-निवारण का कार्य तो पहले ही होने लग जाता है तथा समय आने पर आम भी प्राप्त होते हैं, बागवान पेड़ की जड़ों में खाद पानी आदि डालता है वह जड़ के महत्त्व को जानता है। यह सारी पेड़ की खुशहाली फल-फूल आदि जड़ के कारण ही है। कोई नादान इन आडी-टेढ़ी जड़ों को महत्त्वहीन समझ कर हटा दे तो वृक्ष की खुशहाली से वंचित हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार आत्म-साधना से शुद्ध सामायिक करते ही शांति, तनाव-मुक्ति विश्राम आदि प्राप्त हो ही जाते हैं तथा आत्मारूपी जड़ में ज्यों-ज्यों वीतराग भाव की वृद्धि होती है, त्यों-त्यों दृश्यमान जगत का आकर्षण, आसक्ति, ममता आदि हटने लगते हैं, वस्तुओं के पीछे दौड़ने वाली,

चिपकने वाली वृत्तियाँ पलायन करने लगती हैं और संतोष, निःस्वार्थता, निर्मलता, निर्भयता, सजगता आदि गुण बढ़ने लगते हैं। यही सच्चा चमत्कार है। आध्यात्मिकता के अभाव में धन-वैभव की आसक्ति से दिल की बीमारी, ब्लडप्रेशर, मानसिक विकार, अनिद्रा आदि अनेक राजरोगों की समस्याएँ पैदा हो जाती हैं, जो आज भौतिकता से सम्पन्न व्यक्तियों व देशों में स्पष्ट दिखाई दे रही हैं। आध्यात्मिकता के सद्भाव में प्रत्येक परिस्थिति में व्यक्ति आनन्द में रहता है, राजरोगों से दूर रहता है, यही धर्म का प्रभाव है। शुद्ध सामायिक करने वाले पुनिया श्रावक के सामने राज्य के प्रधानमंत्री अभयकुमार या राजा श्रेणिक को शांति कम थी। सूर्य से विकसित कमल दिन में खिलता है रात में नहीं, चन्द्र से विकसित कमलिनी रात में खिलती है, दिन में नहीं, लेकिन अन्तर्मुखी व्यक्ति प्रत्येक समय, सभी परिस्थितियों में सदा खिलता है, आनन्दित रहता है। वह किसी की अपेक्षा नहीं करता, लेकिन संसार उसकी अपेक्षा करता है। वह जहाँ रहता है वहाँ स्वयं सुखी रहता है उसके कारण अन्यों को भी शांति का अनुभव होता है, उसकी उपस्थिति सब चाहते हैं, उसकी अनुपस्थिति परिवार में, समाज में तथा सभी कार्यक्षेत्रों में खटकती है, यह शुद्ध सामायिक की साक्षात् उपलब्धि है। मनोवैज्ञानिक धारणा है कि समभाव वाले, आचरण सम्पन्न व्यक्ति के आसपास के वातावरण में भी शांति एवं सौम्य वातावरण अपने आप होने लगता है। उनके शरीर में से मानसिक प्रदूषण निवारक अल्फा तरंगे निकलती हैं।

(क्रमशः)

-चौगान गेट, बूंदी (राज.)

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-४ की परीक्षा तिथि आगे बढ़ी

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं ग्रन्थ' की परीक्षा के कारण अनेक महानुभावों के पत्र प्राप्त हो रहे हैं कि वे दोनों परीक्षाएँ इतनी कम अवधि में देने में असमर्थ हैं। इसी कारण हमारे पास अब तक बहुत कम फार्म आये हैं। हमारा उद्देश्य है कि अधिक से अधिक लोग इतिहास को पढ़ें अतः लोगों के विशेष आग्रह पर परीक्षा की तिथि २४ जून २००७ कर दी गई है। आवेदन पत्र ३० अप्रेल २००७ तक भिजवाये जा सकते हैं। *सम्पर्क सूत्र- श्री रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट, सुभाष चौक, जलगाँव-४२५००१ (महा.), फोन नं. ०२५७-२२२३९०३, २२२५९०३*

मृत्युवरण में श्रेष्ठ है समाधिमरण

डॉ. सोहनलाल संचेती

जन्म-मरण सांसारिक चक्र है। जन्म के साथ मृत्यु और मृत्यु के साथ जन्म का अनादि संबंध है। संसार का यह चक्र अनादि काल से चला आ रहा है, वर्तमान में भी है, भविष्य में भी रहेगा। जब कोई जन्म लेता है तो उसका जन्मोत्सव मनाकर हर्ष प्रकट करने वाले एवं मृत्यु पर दुःख प्रकट करने वाले बहुत होते हैं। परन्तु मृत्यु को महोत्सव बनाने वाले विरले ही होते हैं। मृत्युवरण के विविध रूप हैं।

१. सामाजिक-व्यवस्था हेतु विभिन्न देशों में कषाय आदि से रंजित हत्यारों में से किसी को फाँसी देकर, तो किसी को विद्युत कुर्सी पर बेल्ट आदि से कसकर ५०० से २००० वोल्ट की विद्युत तरंगों से, तो किसी को क्लोराइड से, तो किसी को जहरीली गैस कक्ष में ले जाकर, तो किसी को बन्दूक की गोली से फायरिंग कर मृत्यु की गोद में सुला दिया जाता है। यह मृत्यु दण्ड के फलस्वरूप प्राप्त होती है।

२. ब्रिटेन से प्रकाशित साप्ताहिक पत्रिका The Lancet के अनुसार यूरोपियन देशों में वर्तमान में डॉक्टर अत्यधिक रुग्ण और गंभीर रोगों से पीड़ित रोगियों को उनकी वृद्धावस्था एवं सामाजिक-व्यवस्था के कारण कष्टमय या दुःखित जीवन से मुक्ति हेतु उनकी भावनानुसार अतिशीघ्र शान्ति से मृत्यु पाने में सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पीड़ा से मुक्ति हेतु इच्छानुसार मृत्यु पाने वाले रोगियों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। डॉक्टर ऐसे रोगियों के उपचार की औषधि की मात्रा घटाकर दर्द-पीड़ा आदि को कम करने वाली औषधि के साथ अतिशीघ्र मृत्यु लाने वाली औषधि मिश्रित कर देते हैं जिससे आराम के साथ रोगी चिरनिद्रा में सोते हुए मृत्यु की गोद में पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार आस्ट्रेलिया में यूथेनेसिया ग्रुप नामक संस्था के सदस्य इस प्रकार के रोगियों को एक प्रकार की प्लास्टिक से बनी थैली (एक्जिट बैग) का निःशुल्क वितरण करते हैं। यह थैली गाढ़े प्लास्टिक से बनी होती है। इस थैली को देने से पहले इसका उपयोग सिखाया जाता है। ऑक्सीजन युक्त यह थैली मनुष्य के सिर से गले तक पहनाई जाती है। पहनने पर

व्यक्ति को आराम से निद्रा आ जाती है। कुछ समय बाद यह थैली गर्दन को कसने लगती है। शनैः शनैः ऑक्सीजन समाप्त होने पर मनुष्य स्वतः ही चिरनिद्रा में सो जाता है। आस्ट्रेलिया में कुछ संस्थाएँ इसके वितरण का विरोध भी कर रही हैं। यह इच्छा मृत्यु (Euthanasia) आध्यात्मिक दृष्टि से उचित नहीं है।

३. इच्छामृत्यु पाने वाले ऐसे रोगियों की संख्या यूरोप के अन्तर्गत स्विट्जरलैण्ड में सर्वाधिक है और इटली में सर्वथा कम है। बेल्जियम, डेनमार्क, नीदरलैण्ड में ऐसे रोगियों की संख्या स्विट्जरलैण्ड से कम है।

उपर्युक्त देशों में रोगी द्वारा अपने कष्ट, रोग आदि से मुक्ति पाने व शान्तिमय मृत्यु हेतु डॉक्टर को निवेदन करने पर डाक्टर उसको इंजेक्शन या अन्य औषधि द्वारा मर्सी किलिंग के लिए सहयोग कर सकता है। ऐसा सरकारी कानून में प्रावधान है। इस कानून के अनुसार डॉक्टर किसी प्रकार से गुनाहगार नहीं होता। किन्तु मृत्यु का इस प्रकार वरण करना नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अनेक प्रश्न खड़े करता है।

एक अवस्था को त्यागकर दूसरी अवस्था धारण करना मरण कहलाता है। शास्त्रकारों ने मृत्यु के १७ प्रकार बताये हैं-

१. आवीचिमरण	२. तद्भवमरण	३. अवधिमरण
४. आद्यन्तमरण	५. बालमरण	६. पण्डितमरण
७. आसन्नमरण	८. बाल-पण्डितमरण	९. सशल्यमरण
१०.प्रमादमरण	११.वशार्तमृत्यु	१२.वैहायस मरण
१३.गृद्धपृष्टमरण	१४.भक्तप्रत्याख्यानमरण	
१५.इंगिनीमरण	१६.पादोपगमनमरण	१७.केवलीमरण

इसी प्रकार जैन शास्त्रों में संक्षेप में शरीर का त्याग तीन तरह से भी बताया गया है-

१. **च्युत** - स्वतः आयु पूर्ण होने पर शरीर छूटता है, वह च्युत कहलाता है।

२. **च्यावित**- जो विष-भक्षण, शस्त्रघात, संक्लेश, अग्निदाह, जलप्रवेश आदि निमित्त कारणों से शरीर छोड़ा जाता है, वह च्यावित कहलाता है।

३. **त्यक्त**- जो असाध्य रोगादि हो जाने पर अथवा मरणकाल निकट होने पर संलेखना या अनशनपूर्वक शरीर छोड़ा जाता है, वह त्यक्त कहलाता है।

त्यक्त भाव से शरीर त्याग सर्वश्रेष्ठ और उत्तम माना गया है। क्योंकि त्यक्त अवस्था में आत्मा पूर्णतया जागृत एवं सावधान रहता है तथा कोई संक्लेश पैदा नहीं होता। इस त्यक्त शरीर त्याग को ही समाधिमरण, सकाम मरण और वीर मरण भी कहा गया है और यही मृत्यु महोत्सव का शुभावसर है।

संलेखना या अनशनपूर्वक जागृत अवस्था में किए गए मृत्यु वरण को दूसरे शब्दों में सकाम मरण भी कह सकते हैं। जीवन भर दया धर्म का पालन करने वाला मेधावी पुरुष समय आने पर श्रद्धापूर्वक गुरु के सामने विषाद का परित्याग करके ३ प्रकार के सकाममरण में से एक प्रकार से शरीर को त्याग देता है। सकाम मरण के ३ प्रकार हैं- १. भक्त प्रत्याख्यान २. इत्वरिक मरण ३. पादोपगमन।

ऐसे ज्ञानी महापुरुष जीवित रहने व परलोक के परमोत्तम सुख की या मृत्यु की कामना नहीं करते। इस प्रकार जन्म और मृत्यु के रहस्य को वास्तविक रूप से जानने वाले मेधावी पुरुष मृत्यु से घबराते नहीं हैं। वे मृत्यु को महोत्सव के रूप में इतना उत्तम रूप देते हैं कि उन्हें जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिल जाती है।

सकाम मरण बाह्य-आभ्यंतर तप का आचरण है। संथारा संलेखना आदि में शरीर पर द्वेष का भाव नहीं होता और न ही वह आत्महत्या है। यह तो एक विशिष्ट धर्म साधना है। विशिष्ट धर्म साधना करने से व्यक्ति शरीर से स्वतः कृश हो जाता है। शरीर की यह कृशता विशिष्ट साधना को सूचित करती है। तपस्विता का भूषण है। यह मृत्यु को महोत्सव बना देता है।

संलेखना संथारा द्वारा इन्द्रियों का दमन कर उन्हें नष्ट करना या बेकार बना देना भी नहीं है। इन्द्रियों का स्वामी बनकर रहना ही सही मायने में इन्द्रिय दमन का अर्थ है। इन्द्रियों का स्वामी बनकर बाह्य पदार्थों से मुँह मोड़ना, राग-द्वेष पर विजय प्राप्त कर आत्म-साक्षात्कार की अवस्था में पहुँचना है। आत्मा के साथ संबंध स्थापित करना है। इस प्रकार समाधिमरण आत्म-रमण पूर्वक मृत्यु महोत्सव के अद्भुत, अपूर्व, अवर्णनीय आनन्द की उपलब्धि प्राप्त करना है।

इच्छामृत्यु अथवा करुण मृत्यु को नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता, जबकि पण्डितमरण या समाधिमरण इन दोनों दृष्टियों से भी समुचित है। *-केसरवाड़ी, चाँदी हॉल, जोधपुर*

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः-लम्बे वाद-प्रतिवाद के पश्चात् जम्बूकुमार के साथ प्रभव को दीक्षा हेतु उद्यत देखकर समुद्रश्री अत्यन्त क्रुद्ध हो उठी और स्वयं ही अपने प्राणनाथ को समझाने का प्रयत्न करने लगी। उसने बग नामक किसान की कथा के माध्यम से अप्रत्यक्ष सुख रूपी मोक्ष को त्यागकर प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त सांसारिक सुख भोगने की विशेष प्रेरणा की, किन्तु उसके प्रत्युत्तर में जम्बूकुमार कहते हैं-

समुद्रश्री की बात सुनकर जम्बूकुमार ने अत्यन्त गंभीरता के साथ कहा- प्रिये! तुम मुझे प्यार करती हो यह मैं जान रहा हूँ। पर मनुष्य को सदा अपने असली और उच्च उद्देश्य की ओर लक्ष्य रखना चाहिए। हम लोग छोटी-छोटी और तुच्छ बातों में पड़ कर उद्देश्य की बातों को भूल जाते हैं। ऐसा करने से मानव-जीवन निरर्थक हो जाता है। अत्यन्त प्रबल पुण्य के योग से यह जीवन प्राप्त होता है। एक बार वृथा खो देने पर फिर कब इसकी प्राप्ति होगी, यह जानना भी कठिन है। अतएव सौभाग्य से अभी जो सुअवसर हमें प्राप्त है उसका सदुपयोग क्यों नहीं करना चाहिए? भोगोपभोग में ही जीवन व्यतीत कर दिया जाय तो तुम्हीं सोचो, मनुष्य और पशु में क्या अन्तर रह जाएगा। आहार, निद्रा, भय और विषयभोग, इन सबका सेवन तो पशु भी करते हैं। मनुष्य में यही विशेषता है कि वह धर्म का आचरण कर सकता है। यदि धर्माचरण न किया तो मनुष्य आकार से भिन्न होते हुए भी पशु ही है। कहा भी है-

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च,
सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषः,
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥

क्या तुम यह उचित समझती हो कि मनुष्य पशु होकर जीवित रहे? या उसे सच्चे मनुष्य के गुण प्राप्त करके जीवित रहना चाहिए?

प्रिये! भोगोपभोग अग्नि के समान हैं। अग्नि में जितना काष्ठ आदि

ईंधन डालो, वह उतनी ही अधिक प्रबल होती है, शान्त नहीं होती। विषयभोग भी ज्यों-ज्यों भोगे जाते हैं त्यों-त्यों उनके भोगने की अभिलाषा बढ़ती है। भोग भोगने वाला वृद्ध हो जाता है पर भोगों की कामना सदा नवयुवती बनी रहती है। जीवन का अन्त आ जाता है, पर कामना का कभी अन्त नहीं आता। सच तो यह है कि हम भोग नहीं भोगते वरन् भोग ही हमें भोग लेते हैं। भोगों की अभिलाषा में मारा-मारा फिरने वाला प्राणी स्वप्न में भी सुख और शांति नहीं पा सकता। भोगी को अगर शान्ति मिलती तो अनादि काल से विपुल 'भोग' भोग चुकने पर अब तक सभी मनुष्यों, पशु-पक्षियों तथा अन्य जीवों को शांति मिली होती, वे पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गए होते। पर संसार में इसके विपरीत ही अवस्था दृष्टिगोचर होती है। लगभग सभी प्राणी विषयों के दास बने हुए हैं, कामनाओं के शिकार हो रहे हैं और नित-नई अभिलाषाएँ उन्हें कठपुतली के समान नचा रही है।

प्रिये! क्या तुम्हारा विश्वास है कि इस जन्म में 'भोग' भोग लेने के बाद फिर कभी भोगों की अभिलाषा नहीं उदित होगी? ऐसे अनन्त जीवन व्यतीत हो गए फिर भी यह असंतोषी आत्मा कभी संतुष्ट नहीं हुआ। अतएव यदि इसे संतुष्ट करने की सचमुच तुम्हारी इच्छा हो तो उसके लिए कुछ उपाय करना चाहिए। वह उपाय यही है कि भोगों की अभिलाषा को जड़ से उखाड़ फेक दिया जाय। इसी में सुख है, संतोष है, शांति है और यही शाश्वत कल्याण का एकमात्र उपाय है।

तुम कहती हो कि मुक्ति का सुख कल्पना मात्र है। यह तुम्हारा प्रगाढ़ अज्ञान है। तुम्हें पता नहीं है कि आत्मा इस समय कर्मों से लिप्त होने के कारण अपने असली स्वरूप से च्युत हो रही है। नाना प्रकार के विकार उसे विकृत बनाए हुए हैं। फिर भी उसके गुणों का थोड़ा-थोड़ा अंश अब भी प्रकट है। जैसे सघन से सघन बादल भी सूर्य के सम्पूर्ण प्रकाश को रोकने में समर्थ नहीं होते, उसी प्रकार प्रबल से प्रबल कर्म भी आत्मा के समस्त गुणों का सर्वथा घात नहीं कर सकते। यही कारण है कि फिर आत्मा की वर्तमान कर्मवेष्टित अवस्था में भी आत्मिक गुणों का थोड़ा बहुत प्रकाश दिखाई पड़ता है। ज्ञान, दर्शन, सुख

और शक्ति अब भी इसमें विद्यमान हैं, यह आत्मा के वास्तविक गुण हैं। जब आत्मा इन गुणों के स्वभाव वाला है तो शुद्ध रूप में आने पर इन गुणों का सम्पूर्ण विकास अवश्य होगा। विकास की यही अवस्था मुक्ति कहलाती है। मुक्ति न तो किसी स्थान को कहते हैं और न जाने को। सम्पूर्ण विकास को प्राप्त आत्मा ही मुक्तात्मा कहलाता है। उसमें सुख का भी पूर्ण विकास हो जाता है। वह सुख अनिन्द्रिय है, असीम है, अनन्त है, विषयजन्य नहीं है। मुक्तात्मा उस परम सुख का सदा काल अनुभव करती है। यह सुख काल्पनिक नहीं है। संसार का सुख ही काल्पनिक है, क्योंकि वह अनन्त दुःखों का कारण है। संसार के सुखों का वेदन करना मधु से चुपड़ी हुई तलवार की धार को चाटने के सुख के समान है। मधु-लिप्त तलवार की धार को चाटने से क्षण भर माधुर्य की अनुभूति हो सकती है, पर उसका परिणाम अत्यन्त भयानक होता है। जिह्वा के कटने की तीव्र वेदना का वह कारण है। यही हाल समस्त सांसारिक सुखों का है।

सांसारिक सुख कर्मों के आधीन है। जब तक शुभ कर्म का उदय रहता है तब तक सुख रहता है। अशुभ कर्म का उदय होते ही वह कपूर की तरह उड़ जाता है। उसके वियोग से प्राणी को घोर संताप होता है। वह संताप इतना अधिक और आजीवन स्थायी है कि उसके सामने वह तुच्छ सुख नगण्य हो जाता है। इस प्रकार क्षणिक होने के कारण वह त्याज्य है। इसके अतिरिक्त उस सुख के बीच-बीच में भी दुःख भोगना पड़ता है। वह पाप का भी बीज है। ऐसे सुख को काल्पनिक सुख कहना चाहिए। जो सुख शाश्वत है, बाधा रहित है, अनन्त है, जिसमें दुःख का लवलेश भी संसर्ग नहीं है, उस मुक्ति के परमोत्तम सुख को काल्पनिक नहीं कहा जा सकता।

तुम कहती हो मेरा शरीर कोमल है, अतएव मैं साधुवृत्ति के कष्टों को सहन नहीं कर सकूँगा। यह कथन भी ठीक नहीं है। मैं आत्मा हूँ और आत्मा अनन्त शक्ति का धनी होता है अतएव मुझ में भी अनन्त शक्ति है। इस आत्मा ने अनन्त बार नरकगति की अपार और वचनागोचर यातनाएँ सहन की हैं। इसने तिर्यक् योनि के अपरिमित दुःखों का सामना किया है। फिर साधुवृत्ति के कष्ट सहना क्या बड़ी बात है।

प्रिये! तुम यदि चाहती हो कि मुझे कष्ट न उठाना पड़े और मैं सुख का भागी बनूँ तो फिर आग्रह करके मुझे ऐसे पथ पर क्यों घसीट ले जाना चाहती हो जो पथ सीधा नरक की ओर जाता है? विषयभोग भोगने से तो भयंकर दुःख भोगने पड़ेंगे उन दुःखों को मैं कैसे सह सकूँगा? अतएव मुझ पर यदि तुम्हारा सच्चा अनुराग है तो मुझे दुःखों की तरफ न ले जाओ, दुःखों से बचाने का प्रयत्न करो। तुम क्षणभंगुर सुख के लिए मुझे दुःख के मार्ग का मुसाफिर बना रही हो, यह उचित नहीं है।

बग कृषक का उदाहरण देकर तुमने भूल की है। बग कृषक तो पौद्‌गलिक सुखों का लोलुप था। इसीलिए वह दुःखों का पात्र बना। मैं पौद्‌गलिक सुखों का परित्याग करना चाहता हूँ। बग का उदाहरण उन पर लागू होता है जो सांसारिक सुखों के भुलावे में पड़ कर अपने हिताहित को भूल जाते हैं। सचमुच सब संसारी जीवों की अवस्था बग के समान है। वे सुख की प्राप्ति के लिए दुःखों के पथ पर चलते हैं और अन्त में पश्चात्ताप करते हैं। **(क्रमशः)**

(जम्बूकुमार समुद्रश्री को अन्य उदाहरणों द्वारा भी समझाते हैं, जो अगले अंक में प्रस्तुत होंगे)

नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं की नई आवृत्ति में प्रकाशन सहयोगी बनने का सुअवसर

अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जीवनी प्रकाशन में संघ सदस्यों ने अपना सहयोग किया, फिर भी कई सदस्य आचार्य भगवन्त की जीवनी प्रकाशन में अर्घ्य अर्पण से वंचित रह गये।

"आचार्य श्री हस्ती जीवन-दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता" के कारण जीवनी की निरन्तर बढ़ती माँग को ध्यान में रखकर जीवनी की तृतीय आवृत्ति के प्रकाशन का संघ ने निर्णय किया है। तीसरी आवृत्ति प्रेस में दी जा रही है। जो भी संघ सदस्य आचार्य भगवन्त की जीवनी में प्रकाशन सहयोगी बनना चाहें वे अपने नाम दिनांक १५ मई २००६ तक संघ के प्रधान कार्यालय तक पहुँचाने का कष्ट करें। (सहयोग राशि बीस हजार रुपये है)

-नवरतन डागा, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००३ (राज.), फोन एवं फैक्स-०२९१-२६३६७६३

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(काय स्थिति-४)

श्री धर्मचन्द जैन

प्र.१८९ दो समय की कायस्थिति किसकी होती है?

उत्तर छद्मस्थ अनाहारक जीव की उत्कृष्ट कायस्थिति दो समय की होती है। जब कोई छद्मस्थ जीव काल करके एक गति से दूसरी गति में जाता है, तब बीच की अवस्था को बाटा बहती अवस्था (अन्तराल गति) कहते हैं। इस अवस्था में जीव जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो समय् तक अनाहारक रह सकता है। यह कथन प्रज्ञापना सूत्र के अठारहवें पद की अपेक्षा से कहा गया है। अन्यथा भगवती सूत्र शतक ७ उद्देशक १ के अनुसार तो उत्कृष्ट तीन समय तक छद्मस्थ अनाहारक की कायस्थिति हो सकती है।

प्र.१९० छद्मस्थ अनाहारक की उत्कृष्ट स्थिति प्रज्ञापना सूत्र में दो समय तथा भगवती सूत्र में तीन समय किस अपेक्षा से बतलाई गयी है?

उत्तर प्रज्ञापना सूत्र में जो दो समय की उत्कृष्ट कायस्थिति छद्मस्थ अनाहारक की बतलाई, वह अधिकांश जीवों की अपेक्षा से है। अर्थात् अधिकांश जीव दो समय से अधिक बाटा बहती अवस्था में अनाहारक नहीं रह पाते। भगवती सूत्र में तीन समय की जो स्थिति बतलाई है वह एकेन्द्रिय जीवों की अपेक्षा से है। कोई-कोई एकेन्द्रिय जीव जो विदिशा में रहे हों, त्रसनाल को पार करके उत्पन्न होते हों, ऐसे जीव तीन समय तक अनाहारक रह जाते हैं। परन्तु ऐसे जीव बहुत ही कम होते हैं, अतः प्रज्ञापना सूत्र में इनको गौण कर दिया गया है।

प्र.१९१ क्या सभी छद्मस्थ जीव बाटा बहती अवस्था में अनाहारक होते हैं?

उत्तर सभी छद्मस्थ जीव बाटा बहती अवस्था में अनाहारक नहीं होते हैं। जीव काल करके दो प्रकार की गति से अपने उत्पत्ति स्थान में जाता है- १. ऋजुगति २. विग्रह गति। ऋजुगति से जाने में एक समय ही

लगता है, अतः इसमें जीव अनाहारक नहीं बन पाता, आहारक ही रहता है। विग्रह गति अर्थात् मोड़वाली गति, इसमें जीव अनाहारक होता है। जितने मोड़ (घुमाव) होते हैं, उससे एक कम समय अनाहारक रहता है। जैसे तीन मोड़ होने पर दो समय तथा चार मोड़ होने पर तीन समय अनाहारक रहता है।

इस संबंध में यह ध्यातव्य है कि भगवती सूत्र के अनुसार अन्तराल गति में यदि चार समय लगते हैं तो प्रथम के तीन समय अनाहारक मानने चाहिये, जबकि तत्त्वार्थसूत्र अध्याय ५ सूत्र ३.१ के अनुसार- **एकं द्वौ वाऽनाहारकः।** अर्थात् जीव एक या दो समय तक अनाहारक रहता है तथा इस सूत्र की विवेचना में पण्डित सुखलाल जी संघवी ने किसी किसी जीव के तीन समय की अनाहारक दशा होने का भी उल्लेख किया है।

तत्त्वार्थसूत्रानुसार विग्रह गति में जितने मोड़ हैं, उससे दो समय कम अनाहारक होता है तथा उसमें भी मध्य के समयों में अनाहारक माना है। जैसे कि तीन मोड़ वाली विग्रह गति हो तो उसमें चार समय लगेंगे। चार समयों में से प्रथम व अन्तिम समय में जीव आहारक रहेगा तथा मध्य के दो समयों में (दूसरे-तीसरे समय में) जीव अनाहारक रहेगा। चार मोड़ वाली विग्रहगति में पाँच समय लगने पर प्रथम एवं अन्तिम समय को छोड़कर मध्य के तीन समयों में जीव अनाहारक रहेगा।

तत्त्वार्थ सूत्रानुसार दो समय की एक मोड़ वाली गति से जाने वाले जीव अनाहारक नहीं होते, क्योंकि इनमें पहला समय पूर्व शरीर के द्वारा ग्रहण किये हुए आहार का है तथा दूसरा समय नये उत्पत्ति स्थान में पहुँचने का है, जिसमें नवीन शरीर धारण करने के लिये आहार किया जाता है। किन्तु भगवती सूत्र ७.१ के अनुसार दो समय की एक मोड़ वाली विग्रह गति में जीव प्रथम समय में अनाहारक तथा दूसरे समय में आहारक रहता है।

उक्त दोनों मान्यताओं में से हमें भगवती सूत्र की मान्यता को प्रमुखता देनी चाहिये। यह भी ध्यातव्य है कि बाटा बहती अवस्था में

जीव के आगामी भव की आयु प्रारम्भ हो जाती है। बाटा बहती अवस्था में ही छद्मस्थों में कार्मण काय योग पाया जाता है। बाटा बहती अवस्था में भी यह कार्मणकाय योग विग्रह गति वाले जीवों में ही पाया जाता है, ऋजुगति वाले जीवों में नहीं। जैसाकि तत्त्वार्थ सूत्र अध्ययन २ सूत्र २६ में भी कहा है- **विग्रहगतौ कर्मयोगः**। छद्मस्थ जीव बाटा बहती अवस्था के अलावा कहीं भी अनाहारक नहीं बन पाता है।

प्र.१९२ अनाहारक किसे कहते हैं?

उत्तर जब जीव किसी भी प्रकार का आहार ग्रहण न करे, तब उसे अनाहारक कहते हैं। प्रज्ञापना सूत्र में आहार चार प्रकार का बतलाया है- १. ओज आहार (उत्पत्ति के प्रथम समय में गृहीत आहार) २. रोम आहार (त्वचा में रहे छिद्रों द्वारा गृहीत आहार) ३. कवल आहार (मुँह आदि से गृहीत आहार) ४: मनोभक्षी आहार (देवताओं द्वारा मन से वैक्रिय पुद्‌गलों को ग्रहण करना)

कवल आहार के चार भेद होते हैं- अशन, पान, खादिम और स्वादिम।

उक्त सभी प्रकार के आहारों में से जब जीव किसी भी प्रकार का आहार ग्रहण नहीं करे तब उसे अनाहारक कहा जाता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

प्रवचन-कण

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

१. अपना अहित किये बिना जीव किसी का अहित नहीं कर सकता।
२. आत्म विस्मृति सबसे बड़ी हिंसा है।
३. उपाय की उपस्थिति ही नहीं, उपादेय की प्राप्ति के लिए अपाय की अनुपस्थिति भी अनिवार्य है। वह अनायास नहीं, प्रयास-साध्य है।
४. निर्बल आत्माओं में सत्य का प्रकाश जुगनू की तरह है।
५. जिससे आत्मबल बढ़े व मनोबल दृढ़ हो, वह तप है।

- श्री जिनेन्द्र जैन द्वारा संकलित

दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(६)

प्रश्न १३. कल्याणार्थी साधक के लिए विशुद्धि के स्थान कौन-कौन से हैं?

उत्तर- **'लज्जा दया संजम बंभचेरं कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं'** इस गाथा में चार विशुद्धि के स्थान बताये हैं, जो कर्म-मल को दूर करने के स्थान हैं।

१. लज्जा- जो अकरणीय या अपवाद का भय (१. 'अकरणिज्ज संकल लज्जा' अ.चू., २. 'लज्जा अपवाद भयं' चि.चू., ३. 'लज्जा अपवाद-भयरूपा' हा.टी.) करता है, वह व्यक्ति पापकर्म से रुक जाता है।

२. दया- प्राणी के प्रति दया के कारण भी (सत्ताणुकंपा दया) व्यक्ति हिंसादि में प्रवृत्त नहीं होता।

३. संयम- सत्रह प्रकार के संयम से भी साधक जीवों की रक्षा करता है (सत्तरस विही संजमो)

४. ब्रह्मचर्य- साधक आत्मभावों में रमण रूप ब्रह्मचर्य से परभाव या विभाव में प्रवृत्त होने से रुक जाता है। (मेहुणो विरति बंभचेरं)

ये सभी आत्मा को विशुद्ध बनाने के कारण हैं। इन चारों ही स्थानों का उपदेश गुरु देते हैं। उन गुरुओं की सदैव शुद्ध चित्त से पूजा करनी चाहिए। सारांश यही है कि जिसकी शिक्षा से लज्जा, दया, संयम और ब्रह्मचर्य की परिवृद्धि होती है, उस शिक्षक-गुरु के प्रति विनय-भक्ति को सुदृढ़ करना चाहिए।

प्रश्न १४. दशवैकालिक सूत्र में 'अबोधि' शब्द कहाँ-कहाँ आया है?

उत्तर- (१) अबोहि कलुसं कडं -अ.४ की २०-२१वीं गाथाओं में

(२) इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं- अ. ६ गाथा ५६वीं में

(३) अबोहि-आसायण नत्थि मोक्खो-अ.९, उद्देशक १, ५वीं व १०वीं गाथा में

प्रश्न १५. अबोधि के क्या-क्या कारण हैं?

उत्तर- (१) गुरु आदि की आशातना, हीलना, अवज्ञा करने से अबोधि प्राप्त होती है। गुरु भले ही वयोवृद्ध हो, अल्पप्रज्ञाशील हो, फिर भी अनाबाध सुख रूप मोक्ष की अभिलाषा करने वाले साधक को उनका अविवेक नहीं करना चाहिए। गुरु के अप्रसन्न होने पर बोधि-लाभ नहीं होता तथा उनकी

आशातना से मोक्ष नहीं मिलता। उनके विनय, बहुमान तथा उनकी प्रसन्नता (कृपा) से ही मोक्ष प्राप्त होता है अन्यथा वह अबोधि को प्राप्त करता है।

(२) जो साधु होकर भी तप का चोर, वचन का चोर, रूप का चोर है, आचार तथा भाव का चोर है, वह किल्विषिक देवत्व के योग्य कर्म करता है। देवभव प्राप्त करके भी वह यह नहीं जानता कि यह मेरे किस कर्म का फल है। वहाँ से च्युत होकर वह मनुष्य भव में एड़मूकता (बकरी या भेड़ की तरह गूंगापन) अथवा नरक या तिर्यंच योनि को प्राप्त करता है, जहाँ उस बोधि की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है। इस तरह तप, वचन, रूप, आचार तथा भाव की चोरी से अबोधि की प्राप्ति होती है।

(३) गृहस्थ के घर बैठने या कथावार्ता करने से साधु का साध्वाचारपथ से गिरकर अनाचार पथ पर पहुँच जाना संभव है। एक बार अनाचार प्राप्त होने से साधक किसी भी तुच्छ निमित्त को पाकर सम्यक्त्व से भ्रष्ट हो जाता है। क्षायिक, क्षायोपशमिक भाव, जो अत्यन्त सद्प्रयत्नों से प्रांप्त होते हैं, वे नष्ट हो जाते हैं और साधक औदयिक भाव में पहुँचकर मिथ्यात्वग्रसित हो जाता है अर्थात् उसे 'अनाचारों के सेबन से' अबोधि प्राप्त होती है।

(४) प्रभु आज्ञानुसार चलना, बैठना, उठना, खाना, सोना, बोलना आदि क्रिया नहीं करने से तथा भिक्षाचर्या, आहार-गवेषणा, भण्डोपकरण-उठाना, रखना, मलमूत्रादि विसर्जन, स्वाध्याय, प्रतिलेखन, प्रतिक्रमण आदि सभी क्रियाओं में यतना न रखने से शास्त्रविहित नियमों का उल्लंघन होता है और उल्लंघन करने वाला अयतनाशील कहलाता है। अयतनाशील प्रमादी व्यक्ति के मोह आदि कारणों से पापकर्म का बंध होता है, जिसका विपाक अतीव दारुण होता है। ऐसे प्रमत्त को कुदेव, कुमनुष्य आदि कुगतियों-कुयोनियों की प्राप्ति होती है, जहाँ उसको बोधि प्राप्त होना दुर्लभ है।

भूल-सुधार

जिनवाणी के माह फरवरी के अंक में प्रकाशित दशवैकालिक प्रतियोगिता के परिणाम में-

१. बेस्ट टॉप टेन (शीघ्र प्रतियोगियों में से) में रेखा श्रीश्रीमाल, जयपुर की जगह रेखा श्रीश्रीमाल, बालोतरा पढ़ा जाए।

२. पेज नं. ६३, लाइन नं. १५ में रानी जैन, फरीदकोट को रजनी जैन, फरीदकोट पढ़ें।

युवा-स्तम्भ

सम्पत्ति और सजगता

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी महाराज

पति ने घर आकर पत्नी से कहा-

"मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ।" "पूछिए।"

"तुमने आज कितने लोगों का भोजन तैयार किया है?"

"मेरा और आपका"

"क्या हम दोनों के अलावा और एक आदमी हमारे साथ सम्मिलित हो सकेगा?"

"आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?"

"आज रास्ते में मुझे एक अंधा व्यक्ति मिल गया। मुझे उसके प्रति सहानुभूति पैदा हो गई और मैंने उसे भोजन के लिए निमंत्रण दे दिया। शायद एक घण्टे में वह हमारे घर पर पहुँच जायेगा। तुम्हें नया भोजन तो नहीं तैयार करना पड़ेगा?"

"भोजन तो नया ही बनाना पड़ेगा।"

"क्या एक आदमी भी भोजन में हमारे साथ नहीं जुड़ सकता?"

"एक आदमी होता तो जुड़ जाता, परन्तु आप तो दो आदमियों को निमंत्रण दे आये हैं और दो आदमी के भोजन में दूसरे दो आदमियों का भोजन नहीं निकल सकता यह तो सहज समझ में आये जैसी बात है।"

"किन्तु मैं तो एक ही आदमी को निमंत्रण देकर आया हूँ।"

"आपकी बात सही है, लेकिन नैन-हीन अकेला कैसे आयेगा? अपना घर दिखाने हेतु उसके साथ एक और आदमी तो आयेगा ही ना।"

संपत्ति इस नैन-हीन जैसी है। आप इसे अपने जीवन में प्रवेश करने के लिए निमंत्रण देंगे तो यह समझकर ही चलें कि यह कभी अकेली नहीं आयेगी। यह अपने साथ भय को भी लायेगी और चिन्ता को भी। अविश्वास की वृत्ति को भी लायेगी और अपेक्षाओं की भरमार को भी।

आपको क्या बताऊँ? नैन-हीन के साथ आनेवाला आदमी सज्जन हो सकता है, किन्तु सम्पत्ति अपने साथ जिस परिवार को लेकर आती है वह परिवार इतना खतरनाक है कि आप यदि सज्जन होंगे तो संभव है वह आपको दुर्जन भी बना दे। आपका चोला यदि मनुष्य का होगा तो संभव है वह आपको मनुष्य के चोले में राक्षस भी बना दे।

सोच-समझकर संपत्ति को निमंत्रण दें। यह अकेली नहीं आयेगी, परिवार को लेकर आयेगी और क्या पता यह परिवार शायद आपके सद्गुणों की पूँजी को खत्म भी कर दे। सावधान।

-'कमाल' पुस्तक से साभार

प्रार्थना

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

प्रभु हमारे जीवन का उत्थान कीजिये,
सुखमय हो संसार, यह आशीष दीजिये।
मंगल करना मंगलदाता, करते हैं फरियाद,
तम में डूबी इस दुनियाँ को, आलोक दीजिये।।
प्रभु हमारे जीवन..... ।।टेर।।

मानवता की पगडंडी पर, बढ़ते रहें सदा,
मानवता हो इस जीवन में, वरदान दीजिये।
प्रभु हमारे जीवन..... ।।१।।

गुरु चरणों में सदा करें हम, जीवन का निर्माण,
जीवन में कुछ कर जाएँ, नव विश्वास दीजिये।
प्रभु हमारे जीवन..... ।।२।।

प्रभु चरणों में सदा सदा है, वंदन शत शत बार,
भक्ति में रम जाए यह मन, अनुराग दीजिये।
प्रभु हमारे जीवन..... ।।३।।

-दुर्ग (छत्तीसगढ़)

सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया

प्रमुदित सारा कुंडग्राम है, सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है।।टेर।।

जन्म आखिरी, मरण आखिरी,
घर-घर में हैं खुशियाँ बिखरी।
रतनन की बरखा ने सबके, जीवन को खुशहाल किया है।
प्रमुदित सारा कुंडग्राम है, सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है।।१।।

दास-प्रथा का अन्त हो गया,
समता का शुभ बीज बो गया।
सबके मान समान हो गए, नारी को सम्मान दिया है।
प्रमुदित सारा कुंडग्राम है, सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है।।२।।

व्यसन-मुक्त सारा समाज हो,
सुखी रहें, ऐसा रिवाज हो।
नहीं सतायें किसी जीव को, मिलकर सबका दुःख पिया है।
प्रमुदित सारा कुंडग्राम है, सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है।।३।।

आध्यात्मिक अंकुर फूटे,
मोह और माया हैं छूटे।
अपरिग्रही भावना जागी, निर्मल सारा हुआ हिया है।
प्रमुदित सारा कुंडग्राम है, सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है।।४।।

जीवन में संयम अपनाया,
सत्त्व और सम्यक्त्व जगाया।
'अप्पा सो परमप्पा' जागा, ऐसा आखिर समय जिया है।
प्रमुदित सारा कुंडग्राम है, सन्मति प्रभु ने जन्म लिया है।।५।।

-मंगल कलश, अलीगढ़-२०२००१ (उ.प्र.)

॥ श्री महावीराय नमः ॥

पूज्य कुशलगणी की जय ॥ जय गुरू हस्ती ॥ श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य

आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०६३

वीर सम्वत् २५३२-३३ (निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित) सन् २००६-२००७

क्र. सं.	मास–पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र
१	चैत्र सुदि	१४ बुध	१२.४.२००६	३५.३	४	६	६ सोम	द्वि६शुक्र
२	वैशाख वदि	३० गुरू	२७.४.२००६	४७.४७	१४	-	-	-
३	वैशाख सुदि	१४ शुक्र	१२.५.२००६	१४.५५	-	११	३ रवि	७ गुरू
४	ज्येष्ठ वदि	१४ शुक्र	२६.५.२००६	१६.४७	६	-	-	-
५	ज्येष्ठ सुदि	१४ शनि	१०.६.२००६	४७.३	-	-	१ रवि	५ गुरू
६	आषाढ़ वदि	३० रवि	२५.६.२००६	३६.२०	६	-	१४ शनि	-
७	आषाढ़ सुदि	१४ सोम	१०.७.२००६	१२.२३	-	६	-	३ बुध
८	श्रावण वदि	१४ सोम	२४.७.२००६	७.२०	१	-	११ शुक्र	३० मंगल
९	श्रावण सुदि	१४ मंगल	८.८.२००६	३३.४०	-	-	-	-
१०	भाद्रपद वदि	३० बुध	२३.८.२००६	४५.५५	३	-	६ गुरू	१४ मंगल
११	भाद्रपद सुदि	१५ गुरू	७.९.२००६	४४.३०	१४	३	-	-

विशेष विवरण

-आयंबिल ओली प्रारम्भ चैत्र सुदि ८ बुधवार ५.४.२००६ ।

-भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ मंगलवार ११.४.२००६ ।

-आयंबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ गुरूवार १३.४.२००६ ।

-अक्षय तृतीया वैशाख सुदि ३ रविवार ३०.४.२००६ ।

शुक्रवार ५.५.२००६

-भगवान महावीर केवल कल्याणक वैशाख सुदि १० रविवार ७.५.२००६ ।

-संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि ११ सोमवार ८.५.२००६ ।

-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का १६वां आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ गुरू ता. १८.५.२००६ ।

-परम्परा के मूल पुरूष पूज्य श्री कुशल चन्द्रजी म. सा. की २२३वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ गुरूवार दि. १८.५.२००६ ।

-क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्रीरतन चन्द जी म. सा. की १६१वीं पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १४ शनिवार १०.६.२००६ ।

आद्रा नक्षत्र आषाढ़ वदि १२ गुरू २२.६.२००६, प्रातः ९.२३ बजे को लगेगा। इसके बाद गाजबीज होने पर सूत्र की, असज्झाय नही रहेगी ।

-पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म. सा. की ८०वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि

श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

सूर्यनगरी जोधपुर में

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव

आदरणीय धर्मप्रेमी बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र!

आपको सूचित करते हुए परम प्रसन्नता है कि **आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार क्रान्ति के सूत्रधार आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा, साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में**

विरक्त बन्धु श्री ललित हुण्डीवाल

एवं

विरक्ता बहिन सुश्री सीमा हुण्डीवाल

की भागवती दीक्षा

वि.सं. २०६३ वैशाख शुक्ला षष्ठी, बुधवार, दिनांक 3 मई २००६को

अग्राङ्कित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होंगी।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि दीक्षा महोत्सव के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्रत-नियमयुक्त श्रद्धा समर्पण के साथ जैन भागवती दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त करें।

दीक्षा स्थल

तारघर के पास, सरदारपुरा, जोधपुर

आयोजक

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

एवं

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

विरक्त बंधु श्री ललित हुण्डीवाल
जन्मतिथि एवं स्थान-१.१२.१९८८, जलगाँव
निवास स्थान-जलगाँव

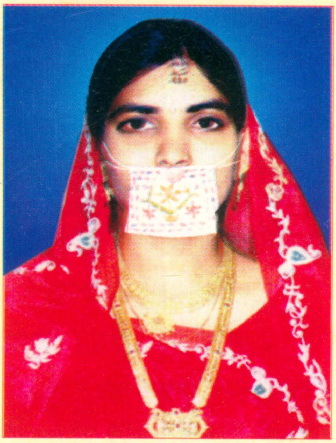

विरक्ता बहिन सुश्री सीमा हुण्डीवाल
जन्मतिथि एवं स्थान- २२.१२.१९८३, भोपालगढ़
निवास स्थान-जलगाँव

पारिवारिक परिचय

दादा-दादी	:	श्री भँवरलालजी-स्व. श्रीमती उमरावबाई जी
		श्रीमती भँवरीबाई जी-स्व. श्री चम्पालाल जी
		श्री सोहनलाल जी-श्रीमती पारसबाई जी
माता-पिता	:	श्री प्रकाशचन्दजी- श्रीमती निर्मला जी हुण्डीवाल
चाचा-चाची	:	श्री सुभाषचन्द जी-श्रीमती उषाजी
		श्री अशोककुमार जी- श्रीमती अनिता जी
		श्री अभयकुमार जी-श्रीमती आशा जी
भाई-भाभी	:	श्री नरेश जी- श्रीमती नीता जी
		श्री नितिन जी
भुआ-भुड़ोसा	:	श्रीमती कमलाजी- श्री डूंगरमल जी भूरट-जलगाँव
		रत्नसंघ में दीक्षित महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा.
		श्रीमती सुनिलाजी- श्री लालचन्द जी बाफना-चेन्नई
नाना-नानी	:	श्रीमती बिरलाबाई जी-स्व.श्री गणेशमल जी ललवाणी-गोगोलाव
मामा-मामी	:	श्री शेषकरण जी ललवाणी- श्रीमती दुर्गाबाई जी-राउरकेला
		श्री लूणकरण जी ललवाणी- श्रीमती कमलाबाई जी-गोगोलाव
		श्री प्रकाशचन्द जी ललवाणी- श्रीमती भारतीदेवीजी-बीकानेर
		श्री कन्हैयालाल जी ललवाणी- श्रीमती गुणमाला जी-चेन्नई
मौसा-मौसी	:	श्रीमती राजकुमारीजी- श्री सूरजमल जी चोरडिया-चेन्नई
		श्रीमती मंजुलाजी - श्री प्रेमचन्द जी मुणोत-हैदराबाद

विरक्त बन्धु श्री ललित हुण्डीवाल

आगम कण्ठस्थ	:	दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, नन्दीसूत्र, सुखविपाक पूर्ण, तत्त्वार्थ सूत्र, अणुत्तरोववाई सूत्र, आचारांग सूत्र (सम्प्रति प्रारम्भ)।
आगम वाचनी	:	अन्तकृद्दशांग, कल्पसूत्र।
स्तोक	:	२५ बोल, ६७ बोल, समिति-गुप्ति, लघुदण्डक, गति-आगति, ज्ञानलब्धि, थोक संग्रह भाग १ व २ के थोकड़े। कायस्थिति, गुणस्थान स्वरूप, जीवधड़ा, जीव पर्याय, कर्मप्रकृति, गमा, इन्द्रिय पद।
स्तोत्र	:	भक्तामर, कल्याणमन्दिर, उवसग्गहर स्तोत्र, पुच्छिसुणं, रत्नाकर पच्चीसी (संस्कृत-हिन्दी) आदि।
अन्य	:	स्वाध्यायी के रूप में २ वर्ष सेवा। शिक्षण बोर्ड की जैन धर्म विशारद परीक्षा उत्तीर्ण, भाषा ज्ञान- हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी।
वैराग्यावधि	:	पाँच वर्ष।

विरक्ता बहिन सुश्री सीमा हुण्डीवाल

आगम कण्ठस्थ	:	दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, सुखविपाक, अणुत्तरोववाई सूत्र, निरयावलिका, कप्पवंडसिया, पुप्फचूलिया,वण्हिदसा।
आगम वाचनी	:	आचारांग, ज्ञाताधर्मकथांग, अन्तकृद्दशांग।
स्तोक	:	२५ बोल, ६७ बोल, ३३ बोल, समिति-गुप्ति, कर्मग्रन्थ भाग १, २, ३ के थोकड़े, ज्ञानलब्धि, गति-आगति, जीवधड़ा, ४७ बोल, ५० बोल की बंधी, ९८ बोल का बासठिया, १०२ बोल का बासठिया।
स्तोत्र	:	भक्तामर, कल्याणमन्दिर, महावीराष्टक।
अन्य	:	स्वाध्यायी के रूप में ४ वर्ष सेवा। शिक्षण बोर्ड की जैन सिद्धान्त शास्त्री पूर्वार्द्ध परीक्षा उत्तीर्ण, जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग २ व ३ की परीक्षा उत्तीर्ण, दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र एवं जैन तत्त्व प्रकाश की परीक्षाएँ उत्तीर्ण।
वैराग्यावधि	:	पाँच वर्ष।

दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम

वि.सं. २०६३ वैशाख शुक्ला षष्ठी, बुधवार, ३ मई २००६

शोभायात्रा	:	प्रस्थान समय प्रातः ८.१५ बजे से हुण्डीवाल परिवार के निवास स्थान २१-नेहरूपार्क से प्रस्थान कर सरदारपुरा 'डी' रोड़ होते हुए गाँधी मैदान, गोल बिल्डिंग आदि प्रमुख मार्गों से होकर साध्वीप्रमुखा एवं तदनन्तर उपाध्यायप्रवर के पावन श्रीचरणों में पहुँचकर मंगलपाठ श्रवण कर दीक्षा स्थल पर पहुँचेगी।
अभिनन्दन समारोह	:	प्रातः १०.३० बजे से स्थान-तारघर के पास, सरदारपुरा, जोधपुर
दीक्षा पाठ	:	मध्याह्न १.१५ बजे परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से।

विनीत

डॉ. सम्पतसिंह भाण्डावत — अध्यक्ष

अमरचन्द सदावत — सचिव

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

कैलाशचन्द हीरावत — अध्यक्ष

सुमेरसिंह बोथरा — कार्याध्यक्ष

नवरतन डागा — महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

विशेष प्रार्थी

भँवरलाल, सोहनलाल, गौतमचन्द, प्रकाशचन्द, प्रसन्नचन्द
एवं समस्त हुण्डीवाल परिवार, जलगाँव (भोपालगढ़ वाले)

पत्राचार सम्पर्क सूत्र

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.)
फोन एवं फैक्स-०२९१-२६३६७६३/२६४१४४५

१२	आश्विन वदि	१४ गुरू	२१.९.२००६	२०.१३	६	११	८ गुरू	द्वि११सोम
१३	आश्विन सुदि	१४ शुक्र	६.१०.२००६	१४.३५	-	-	-	-
१४	कार्तिक वदि	द्वि.१४शनि	२१.१०.२००६	४.१२	१	१४	५ बुध	६ रवि
१५	कार्तिक सुदि	१५ रवि	५.११.२००६	२६.००	१२	-	-	-
१६	मार्गशीर्ष वदि	३० सोम	२०.११.२००६	५१.५०	-	-	२ मंगल	६ शनि
१७	मार्गशीर्ष सुदि	१४/१५सोम	४.१२.२००६	२.३३	१५	-	-	-
१८	पौष वदि	१४ मंगल	१९.१२.२००६	३०.५०	-	८	१ मंगल	५ शनि
१९	पौष सुदि	१५ बुध	३.१.२००७	२६.५२	८	-	१३ सोम	-
२०	माघ वदि	१४ गुरू	१८.१.२००७	६.५	-	८	-	२ शुक्र
२१	माघ सुदि	१४ गुरू	१.२.२००७	८.०	१	-	१० रवि	१४ गुरू
२२	फाल्गुन वदि	१४ शुक्र	१६.२.२००७	४३.५	-	-	-	-
२३	फाल्गुन सुदि	१५ शनि	३.३.२००७	५४.१७	५	-	६ रवि	१३ गुरू
२४	चैत्र वदि	१४ रवि	१८.३.२००७	१२.२०	-	२	-	-

-चन्द्रग्रहण भाद्रपद सुदि १५ गुरूवार ७.९.२००६ ।
-आयंबिल ओली प्रारम्भ, आसोज सुदि ७ शुक्रवार २९.९.२००६ ।
-पूज्य आचार्य श्री भूधरजी म. सा. की पुण्य तिथि व दशहरा, आसोज सुदि १० सोमवार २.१०.२००६ ।
-आयंबिल ओली पूर्ण आसोज सुदि १५ शनिवार ७.१०.२००६ ।
-भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि ३०, रविवार २२.१०.२००६ ।
-वीर संवत् २५३३ प्रारम्भ कार्तिक सुदि १ सोमवार २३.१०.२००६
-स्वाति नक्षत्र कार्तिक सुदि २ मंगल २४.१०.२००६ प्रातः ६.५० पर
-ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ५ शुक्रवार २७.१०.२००६ ।
-आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ४४वां दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि ६ शनिवार २८.१०.२००६ ।
१५ रविवार ५.११.२००६ ।
-मौन एकादशी मार्गशीर्ष सुदि ११ शुक्रवार १.१२.२००६ ।
-भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि १० शुक्रवार १५.१२.२००६ ।
-फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व एवं खग्रास चन्द्र ग्रहण फाल्गुन सुदि १५ शनिवार ३.३.२००७ अस्वाध्याय १२ प्रहर ।
-भ. आदिनाथ जन्म कल्याणक एवम् आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का ६९ वां जन्म दिवस चैत्र वदि ८ सोमवार १२.३.२००७ ।
-सूर्यग्रहण चैत्र वदि ३० सोमवार १९.३.२००७ अस्वाध्याय १२ प्रहर

गुरू हस्ती के दो फरमान – सामायिक स्वाध्याय महान्

गुरू हीरा का यह सन्देश – व्यसन मुक्त हो सारा देश

प्रिय महानुभावो! शुद्ध चित्त से दोनों समय प्रतिक्रमण करने से निर्जरा होती है। उत्कृष्ट रसायन आने से तीर्थंकर गौत्र की उपार्जना होती है। अतः दोनो समय प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये। यदि प्रमाद वश न हो सके तो पक्खी का तो अवश्य करना चाहिये। पांचवे आवश्यक के काउसग्ग में देवसी को ४, पक्खी को ८, चौमासी को १२, और सम्वत्सरी को २० लोगस्स का चिन्तन करना अजमेर सम्मेलन का नियम है। सामायिक स्वाध्याय का घर–घर प्रचार करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें व व्यसनों का त्याग करें।

जैन धर्म की शान थी

श्री राजेन्द्र कुम्भट

(तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें.....)

दुनियाँ वालों तुम्हें सुनायें कहानी एक इन्सान की।
उस हस्ती को नमन करो, जो जैन धर्म की शान थी॥
जय जिनेन्द्रम्, जय जिनेन्द्रम्.... ॥टेर॥

जिनकी माता रूप कंवर थी, केवल कुल के तारे थे,
पौष सुदि चौदस को जन्मे रूपकंवर के दुलारे थे।
माता के संस्कार से पोषित गुरु शोभा के प्यारे थे,
माघ सुदि द्वितीया दिन पावन संयम में वो न्यारे थे।
शोभा गुरु ने शिष्य बनाया, वह हस्ती महान थी,
दुनियाँ वाले तुम्हें सुनाएँ, कहानी एक इन्सान की।
उस हस्ती को नमन करो, जो जैन धर्म की शान थी॥
जय जिनेन्द्रम्, जय जिनेन्द्रम्.... ॥१॥

सोलह वर्ष की आयु में, आगम सारे जाने थे,
बीस वर्ष की अल्पायु में संघ नायक कहलाये थे।
संयम जिनका अति विशुद्ध, साधक बिल्कुल न्यारे थे,
माघ सुदि तृतीया के दिन आयरियाणं कहलाए थे।
अनन्त जीवों के जीवन दाता, अहिंसा के गुणगान की,
दुनियाँ वालों तुम्हें सुनाए, कहानी उस इन्सान की॥
उस हस्ती को नमन करो, जो जैन धर्म की शान थी॥
जय जिनेन्द्रम्, जय जिनेन्द्रम्.... ॥२॥

सामायिक-स्वाध्याय का जिसने, जीवन में अलख जगाया था,
पैदा करदी नई चेतना, आत्मा को संधाना था।

धीर-वीर-गंभीर बड़े, अनुशासित और दयालु थे,
चारों तीर्थों के आश्रयदाता संतों में महान् थे।
अपना अन्तिम वचन निभाने हस्ती के प्रयाण की,
दुनियाँ वालों तुम्हें सुनाए, कहानी उस इन्सान की।।
उस हस्ती को नमन करो, जो जैन धर्म की शान थी।।
जय जिनेन्द्रम्, जय जिनेन्द्रम्.... ।।३ ।।

अन्त समय में तेला करके, संथारे को ठान लिया,
सौम्य और शान्तिमय चेहरा, तेरह दिन का संथारा था।
श्रद्धालुओं की भीड़ लगी थी, श्रद्धा के भगवान् थे,
वैशाख सुदि अष्टम को हस्ती की देवलोक की धाम थी।
जिसका जीवन, जीवन गाथा, उस हस्ती के गुणगान की,
दुनियाँ वालों तुम्हें सुनायें, कहानी उस इन्सान की।।
उस हस्ती को नमन करो, जो जैन धर्म की शान थी।।
जय जिनेन्द्रम्, जय जिनेन्द्रम्.... ।।४ ।।

-'सौभाग्य' १२-१३, तिलक नगर द्वितीय, भदवासिया रोड़, जोधपुर

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा २३ जुलाई २००६ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से १४ तक की आगामी परीक्षा २३ जुलाई २००६, रविवार को दोपहर १२.३० से ३.३० बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि २० जून २००६ है। परीक्षार्थी आगामी परीक्षा हेतु वेबसाइट www.jainratnaboard.com पर भी अपना पंजीयन करवा सकते हैं। जिन-जिन केन्द्रों पर शिक्षण बोर्ड की पुस्तकों की आवश्यकता हो, वे बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें, ताकि उन्हें वांछित पुस्तकें उपलब्ध करायी जा सकें। *-डॉ. राकेश कांकरिया, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.); फोन नं. ०२९१-२६३०४९०*

अविवाहित युवतियों से सप्रेम निवेदन

श्री युगराज जैन

टी.वी. की संस्कृति के प्रभाव एवं स्वयं की नासमझी के कारण जैन परिवारों की भी कुछ नवयुवतियाँ भावावेश में अन्य युवकों के साथ भाग जाती हैं। परिवार, समाज एवं उस युवति के लिए भी यह अच्छा संकेत नहीं है। युगराज जैन ने ऐसी युवतियों को संदेश देते हुए सावधान किया है। -सम्पादक

बहन! प्यार मोहब्बत की झूठी बातें मन से पूरी तरह त्यागना।
बाप के घर में मरना भी पड़े तो भी तू घर से कभी मत भागना।।

१. कई बहनें टी.वी. व फिल्मों की काल्पनिक दुनियाँ की चकाचौन्ध में दीवानी होकर समय से पहले ही अपने जीवन दर्पण को तोड़ देती हैं। मेरी बहन, जीवन क्या है तुम्हें इसके महत्त्व को समझना होगा। इसके लिये तुम्हें त्याग की भट्टी में तपना होगा। स्वयं को कुन्दन बनाकर वक्त की कसौटी पर कसना होगा। तभी जीवन की सार्थकता का भान होगा।

२. तुम्हारी आँखों में इतनी ज्वाला होनी चाहिये कि तुम्हारे ऊपर वासना की दृष्टि डालने वाला तुम्हारे तेज से भस्मीभूत हो जाये।

३. तुम्हें भगवान् महावीर और अपने माँ-बाप की कसम खाकर यह संकल्प लेना है कि तुम कभी घर से भाग कर जीवन नरक नहीं बनाओगी।

४. तुम अपने जीवन की कोई भी बात माँ से नहीं छुपाओगी।

५. तुम किसी को दोस्त बनाने से पहले सौ बार सोचोगी।

६. तुम शादी से पहले किसी को अपनी काया नहीं सौंपोगी।

७. तुम कभी वासना का शिकार नहीं बनोगी।

८. यदि तुम्हें स्वयं अपने जीवन साथी का चयन करना ही है तो तुम अपने माँ-बाप की राय लोगी।

९. तुम्हें अपने जीवन-साथी के चयन में अपने उज्ज्वल भविष्य की छवि देखने की कला विकसित करनी होगी।

१०.अपनी क्षणिक व काल्पनिक खुशियों के लिए तुम अपने परिवार की मानसिक चेतना को चिन्ता की ज्वाला में नहीं झोंकोगी।

११.माता-पिता की इच्छा के खिलाफ कभी कोई कदम नहीं उठाओगी।

१२.मेरी बहन बस यह निश्चय कर लो कि तुम घर से भागकर जीवन नरक नहीं बनाओगी।

-युगराज जैन, सम्पादक-युगप्रवाह, मुम्बई (महा.)

निन्दा बनाम प्रशंसा

श्री जशकरण डागा

एक बार जैन दर्शन के प्रखर विज्ञाता आचार्य उमास्वाति एक उपवन में विराजे हुए प्रसिद्ध ग्रन्थ 'तत्त्वार्थ सूत्र' की रचना जैन आगमों के आधार से कर रहे थे। वे पाँच अध्याय पूर्ण कर चुके थे। छठा अध्याय कर्म-सिद्धान्त व कर्म-प्रकृतियों के विषय में लिखा जा रहा था। तभी एक जिज्ञासु भक्त उनके समीप आया और शान्त-वीतराग मुद्रा में उन्हें लेखन में प्रवृत्त देख भक्तिपूर्वक वन्दन करने लगा। वाचक उमास्वाति ने भक्त की ओर देखा व पूछा- "कैसे आए हो?" आगन्तुक ने जिज्ञासा भाव से कहा- "गुरुदेव! कोई दूसरे की निंदा करे व अपनी प्रशंसा करे, तो उसका क्या फल होता है?" आचार्यप्रवर ने गंभीरतापूर्वक चिन्तन कर कहा- "हे भव्य आत्मन्! ऐसी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति नीच गोत्र कर्म को बाँधकर तदनुसार नीच गोत्र में जन्म लेता है।" आगन्तुक व्यक्ति ने पुनः पूछा- "गुरुदेव! कोई व्यक्ति दूसरे की प्रशंसा व अपनी निंदा करे तो उसका क्या फल होता है?" वाचक उमास्वाति ने पुनः भक्त की इस जिज्ञासा पर कर्मसिद्धान्त से चिन्तन कर कहा- "ऐसा व्यक्ति उच्च गोत्र का बंध कर, तदनुसार उच्च गोत्र में जन्म लेता है।" जिज्ञासु भक्त पूर्ण संतुष्ट हुआ। आचार्य उमास्वाति ने इन्हीं जिज्ञासाओं के उत्तर को तत्त्वार्थ सूत्र के छठे अध्याय के सूत्र २४-२५ में ग्रथित किया है, जो जिज्ञासुओं के लिए पठनीय है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हमें सदा स्वप्रशंसा व परनिंदा से बचना चाहिए तथा उचित प्रसंग पर पर-प्रशंसा व स्व दोषों को प्रकट करने में नहीं हिचकना चाहिए और साथ ही स्व-दोषों की आलोचना, निंदा व गर्हा कर उन्हें त्यागने का लक्ष्य रखना चाहिए। *-डागा सदन, संघपुरा, टोंक (राज.)*

संशयात्मा विनश्यति

उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० मई २००६ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को **श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर** द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। **पुरस्कारों की परिवर्तित राशि निम्नानुसार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। प्रतियोगिता में अब १० वर्ष से २१ वर्ष तक के छात्र-छात्रा भाग ले सकते हैं।**

"भाई! मेरी जबान कमल-दण्ड के समान कठोर हो गई है, शरीर पत्ते की तरह काँप रहा है, सिर चकरा रहा है, पूरे शरीर में पसीना आ रहा है।" बड़े भाई जय ने अपने छोटे भाई विजय से कहा।

"क्यों, आपका दिल क्यों घबरा रहा है?" विजय ने पूछा।

"तुम्हें मालूम ही है आज हमें विषान्न भोजन करना पड़ा।" जय ने कहा तथा वह और भी अधिक घबराने लगा।

बड़े भाई की यह दशा देख विजय अपनी शय्या पर से उठा और बड़े भाई को समझाने लगा-

"तात! मैंने भी तो आपके साथ ही भोजन किया है। जो भोजन आपने खाया, वही मैंने भी खाया; फिर मेरी ऐसी दशा क्यों नहीं हुई? आप अपने हृदय से सन्देह को निकाल दें। भोजन विषान्न नहीं था।"

"तुम जानकर भी अनजान बन रहे हो। हम दोनों के सामने ही तो महाराज गगनचन्द्र ने अपने रसोइये से से कहा था कि विषान्न भोजन तैयार करके लाओ।" जय ने कहा।

वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। राजा गगनचन्द्र ने अपने रसोइये से विषान्न भोजन बनाने को कहा था। राजा की आज्ञानुसार रसोइये ने वैसा ही भोजन बनाया भी था।

राजा गगनचन्द्र उज्जयिनीनरेश थे। उनकी महारानी का नाम गगनश्री था। राजा गगनचन्द्र न्याय-नीति-परायण और प्रजावत्सल थे। वे सुशासक थे। उनके शासन में प्रजा सुखी थी।

सिंहलद्वीप का शासक राजा गगनादित्य राजा गगनचन्द्र का मित्र था। उसकी रानी थी गगनसुन्दरी। गगन के चन्द्रमा के समान उसका सुन्दर मुख था। वह स्त्रियोचित कलाओं में प्रवीण थी।

राजा गगनादित्य के दो पुत्र थे- बड़ा जय और छोटा विजय। दोनों ही युवा, सुन्दर, बुद्धिमान, पराक्रमी और शूरवीर थे। किन्तु दोनों के ही चरित्र में एक मूलभूत अन्तर था- जय शंकालु स्वभाव का था जबकि छोटा भाई विजय शंका और सन्देह से दूर रहता था। वह विश्वसनीय पर विश्वास करता था, व्यर्थ का भ्रम और संदेह मन में नहीं पालता था।

दुर्भाग्यवश राजा गगनादित्य का स्वर्गवास हो गया। पिता के स्वर्गवास से दोनों भाई जय-विजय शोकाकुल हो गये। अपने मित्र के पुत्रों को राजा गगनचन्द्र ने अपने विश्वस्त दूतों के द्वारा बुलवाया और अपने पास रखा। उन्हें भाँति-भाँति से समझाया।

राजा गगनचन्द्र धार्मिक प्रकृति का था। अपना अधिकांश समय साधु-संगति में बिताता था। उनके उपदेश सुनता, धर्मचर्चा करता और धर्म के तत्त्व को, मर्म को समझता।

एक बार राजा गगनचन्द्र ने एक सन्त से आहार-विवेक के बारे में प्रश्न किया। पूछा-कैसा आहार करना उचित है?

सन्त ने बताया- सात्त्विक आहार करना ही उचित है। अधिक रसीला, मिर्च-मसाले वाला भोजन नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह कामभोग की ओर रुचि बढ़ाता है, उत्तेजक होता है। ऐसे भोजन से विषय भोगों की ओर मन दौड़ता है। इसीलिए सरस, स्वादिष्ट, गरिष्ठ और चटपटा मसालेदार खाद्य पदार्थ विषान्न भोजन कहा जाता है।

राजा गगनचन्द्र को 'विषान्न भोजन' शब्द बहुत पसन्द आया। वह सरस आहार के लिए इस शब्द का प्रयोग करने लगा। उसका रसोइया भी इस शब्द का रहस्य समझ गया था। जब भी राजा अपने रसोइये को 'विषान्न भोजन' बनाने को कहता तो रसोइया समझ जाता कि आज उसे गरिष्ठ स्वादिष्ट आहार

बनाना है।

अपनी इसी आदत के अनुसार राजा गगनचन्द्र ने विषान्न भोजन बनाने के लिए अपने रसोइये से कहा था, किन्तु जय राजा का अभिप्राय न समझ सका और उसने समझ लिया कि उन दोनों भाइयों को विषाक्त भोजन कराया गया है। उसके मन में शंका का नाग बैठ गया कि राजा हम दोनों भाइयों को मारकर सिंहलद्वीप का शासक भी बनना चाहता है। इन्हीं विचारों के कारण उसकी दशा ऐसी हो गई जैसे सचमुच ही उसने विषाक्त भोजन किया हो।

छोटा भाई विजय अपने बड़े भाई जय की बिगड़ती हुई दशा देख रहा था। उसने कहा-

"तात! आप विवेक से काम लीजिए। क्या हमारे स्वर्गवासी पिता के मित्र राजा गगनचन्द्र हमें विषाक्त भोजन दे सकते हैं?"

"राजनीति में सब कुछ संभव है।" बड़े भाई जय ने जवाब दिया।

विजय ने फिर समझाया-

"लेकिन ऐसा दिखाई तो नहीं देता। महाराज गगनचन्द्र धार्मिक वृत्ति वाले हैं, स्वभाव से सौम्य हैं, अपने पुत्र से भी अधिक हम से प्रेम करते हैं। हमें बहुत चाहते हैं।"

"यह सब दिखावा है।" जय ने कहा।

"नहीं तात! यह दिखावा नहीं है।" विजय ने अग्रज के हृदय से शंका का काँटा निकालने का प्रयास किया- "उनके व्यवहार को देखो, विचार करो। उन्होंने हमारे शोक संतप्त हृदय को धैर्य बंधाया है। उनके प्रेम के कारण ही हम अपने पिता के शोक को भूल सके हैं। उनके द्वारा हमारा कोई अहित हो सकता है, ऐसी शंका हृदय से निकाल दो।"

लेकिन एक बार जब शंका का नाग किसी के मन में प्रवेश कर जाता है तो वह शीघ्रता से निकलता नहीं। राजकुमार जय के हृदय से भी शंका न निकल सकी। उसे राजा गगनचन्द्र का सरल व्यवहार भी कुटिल दिखाई दे रहा था। उसके मन में यह बात पूरी तरह जम गई कि उसे भोजन में विष दिया गया है।

इसका परिणाम यह हुआ कि जय का प्राणान्त हो गया।

मानव की मृत्यु में बाह्य परिस्थितियाँ इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होती जितनी कि उसकी स्वयं की धारणा। यदि मानव रस्सी को साँप समझ ले तो उससे भी

भयभीत हो जाता है और भय की अधिकता के कारण उसके प्राण निकल जाते हैं। अपनी ही परछाई को भूत समझने वाले की भी अकाल मृत्यु हो जाती है। संशयग्रस्त व्यक्ति का तो विनाश हो ही जाता है- संशयात्मा विनश्यति'

संशय के कारण जय अकाल में ही मरण को प्राप्त हुआ जबकि दृढ़ आत्म-विश्वासी विजय उसी भोजन को खाकर चिरकाल तक जीवित रहा। उसने बहुत समय तक सिंहलद्वीप पर राज्य किया; फिर संयम ग्रहण करके मोक्ष प्राप्त किया।

प्रश्न

१. इस कथा में 'विषान्न' से क्या तात्पर्य है? यह शब्द भ्रामक क्यों बना?

२. जय के प्राणान्त का क्या कारण था?

३. जय एवं विजय के स्वभाव में भेद बताइए।

४. कथा में 'तात' शब्द किस अर्थ में आया है?

५. जय एवं विजय किसके पुत्र थे?

६. क्या व्यर्थ की शंका करना उचित है? समझाइए।

७. यदि आप विजय के स्थान पर होते तो जय को कैसे तर्क देकर समझाते? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

बाल-स्तम्भ [फरवरी-२००६] का परिणाम

जिनवाणी के फरवरी २००६ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'कृतघ्न एवं अहंकारी बेटा' कहानी के प्रश्नों के उत्तर १९ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। प्राप्तांक २५ में से दिए गए हैं। इस अंक की प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	कमलेश कुमार जैन-पादरु(बाडमेर)	२३.५
द्वितीय पुरस्कार-१५०/-	अक्षिता जैन-जोधपुर	२३.२५
तृतीय पुरस्कार- १००/-	सौरभ भण्डारी-पीपाड़ शहर	२३
सान्त्वना पुरस्कार-५०/-	सुनयना गेलड़ा-बोरावड़	२२.५
	श्वेता जैन-समदड़ी	२२.५
	यशवंत गोलेछा-ब्यावर	२२.५
	सिद्धार्थ जैन-मालपुरा	२२.५

व्यसन-मुक्त आदर्श समाज : आज की आवश्यकता

श्री नौरतन मेहता

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ के पचपदरा पदार्पण से उत्साही ओसवाल समाज ने सत्संग-सेवा और संत-समागम के सुअवसर का लाभ लेने की भावना से रविवार दिनांक १९ मार्च २००६ को उपाध्यायप्रवर का सार्वजनिक प्रवचन ओसवाल समाज भवन में रखा, जिसमें पचपदरा के आबाल-वृद्ध जैन-जैनेतर भक्तों ने तो भाग लिया ही, समीपवर्ती बालोतरा, सिवाना, समदड़ी, खण्डप, कनाना, पाटोदी, जालोर, जोधपुर, भोपालगढ़ आदि-आदि ग्राम-नगरों के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों के प्रेरक प्रवचनामृत का पान किया। स्थानीय ओसवाल समाज के अध्यक्ष श्री पुखराज जी छाजेड़ (मदाणी) ने एवं संघमंत्री श्री लक्ष्मीचन्द जी लूंकड़ ने उपाध्यायप्रवर के पावन श्रीचरणों में भावपूर्ण विनति रखकर विनम्र प्रार्थना की कि आपश्री हमें शेखेकाल का पूरा लाभ प्रदान कर पचपदरा नगर की भावना को साकार करें।

उपाध्यायप्रवर के प्रवचनों में जैन-जैनेतर जनता की नित्य-प्रति अच्छी उपस्थिति रहने से नगर में सार्वजनिक प्रवचन का वातावरण बना और रविवारीय प्रवचन में ओसवाल समाज भवन का विशाल प्रांगण भक्तों की महनीय उपस्थिति से अत्यन्त मनमोहन लग रहा था। प्रवचन का शुभारंभ सेवाभावी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ने किया। मुनिश्री ने जैनत्व के गौरव पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जनसमुदाय का आह्वान किया कि आप सभी श्रद्धानिष्ठ सुज्ञ श्रावक-श्राविकाएँ हैं अतः अपने गौरवशाली अतीत की सौरभ सुरक्षित रखते हुए व्यसन और फैशन से दूर रहें। व्यसन से व्यक्ति का ही नहीं, समाज और राष्ट्र का अहित होता है। व्यसन के दुष्परिणाम स्वयं के लिए दुःखद होते हैं, परिवारजनों के लिए कष्टदायी होते हैं, आप व्यसन से बचें।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्बोधन में फरमाया कि जहाँ समाज है वहाँ संस्कृति है, समाज है वहाँ सुरक्षा है, समाज है वहाँ समाचारी और मर्यादा पालन का वातावरण है। समाज हम-सबके लिए उपकारी है। समाज के कारण ही हमारी संस्कृति सुरक्षित है। मुनिश्री ने जैन समाज के खान-पान, रहन-सहन,

आचार-विचार के सुन्दर रूप की झाँकी रखते हुए फरमाया कि आप जैन संस्कृति के गौरव से गौरवान्वित हैं। व्यक्ति-व्यक्ति के व्यसन-मुक्त जीवन से सुन्दर समाज निर्मित होता है। समाज़ में व्यसन का प्रचलन देखा-देखी बढ़ता है, किन्तु व्यसन चाहे जो हो वह व्यक्ति को गिराता ही है। हम जैनत्व का मंत्र देते हैं उस समय सप्त कुव्यसन से दूर रहने की प्रतिज्ञा करवाते हैं। व्यक्ति-व्यक्ति के आदर्श जीवन से आदर्श समाज बनता है। आज व्यक्ति और समाज दोनों को संभालने की ज़रूरत है। आज घर-घर में भौतिक सुख-साधनों की भरमार बढ़ रही है। टी.वी. संस्कृति कितनी अनिष्टकारी है उसके दुष्परिणामों से आप चिन्तित हैं। समाज में क्या-क्या विकृतियाँ पनप रही हैं मुझे कहने की आवश्यकता नहीं। आपके मन में रही तड़फन से संकेत मिलता है कि आप व्यसन की मार से संत्रस्त हैं। व्यसन से हैरान-परेशान हैं तो व्यसन छोड़िये। व्यसन-मुक्ति के साथ आदर्श समाज का रूप स्पष्ट उभरने लगेगा।

मुनिद्वय के प्रवचन के पश्चात् प्रवचन-सभा का संचालन करते हुए सुश्रावक श्री ओमप्रकाश जी बाँठिया ने प्रखर वक्ता, प्रबुद्ध चिन्तक, प्रतिभा सम्पन्न श्रावकरत्न राजस्थान उच्च न्यायालय और पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा को आमंत्रित किया। चौपड़ा साहब ने समाज में व्याप्त आपा-धापी को आत्मघाती बताते हुए कहा कि हमारी मानसिकता में जब तक मोड़ नहीं आयेगा, समाज-सुधार नहीं होगा। समाज को सुधारने में संत-महापुरुषों के योगदान की चर्चा करते हुए चौपड़ा साहब ने कहा कि ये चलते फिरते तीर्थ हैं। संत-मुनिराजों की सन्निधि से जीवन में पवित्रता आती है। आज समाज का रूप जो कुछ भी दिखाई दे रहा है उसके पीछे महापुरुषों का हाथ है। जरूरत है हम व्यसनों से दूर रहकर समाज-सुधार के कार्यक्रम बनाएँ। व्यक्ति का जीवन सरल-सरस तभी रहेगा जबकि वह निर्व्यसनी हो।

बालोतरा के कविहृदय श्री कमलेश जी चौपड़ा ने गीतिका के माध्यम से विचार रखे। सुन्दर भावों में गीतिका की प्रस्तुति प्रभावी थी। जालोर श्रीसंघ के मंत्री श्री धनराज जी ने कहा कि उपाध्यायप्रवर के जालोर विराजने के समय नियम-प्रत्याख्यानों से व्यक्ति-व्यक्ति का जीवन नियमित-व्यवस्थित बना है। क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ की ओर से रत्नसंघ में निकट भविष्य में होने वाले दीक्षा-महोत्सव की विनति उपाध्यायप्रवर के पावन श्रीचरणों में श्री नेमीचन्द जी कर्णावट ने प्रस्तुत की। विरक्त बन्धु श्री ललित का पारिवारिक परिचय प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि भोपालगढ़ के लाल की विरक्त भावना प्रमोदजन्य है। दीक्षा महोत्सव के साथ उपाध्यायप्रवर के चातुर्मास की विनति भी श्रीचरणों में रखी गई।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया कि व्यसन विपत्ति का घर है। निर्व्यसनी निर्भय रहता है। आपके जीवन में व्यसन है तो अच्छा भला जीवन धीरे-धीरे खुद को भारी लगने लगता है, दूसरों को अखरता है।

व्यसन से व्यक्ति, घर, परिवार, समाज और राष्ट्र तक के नुकसान के अनेकानेक दृष्टान्त आपने पढ़े हैं- सुने हैं। व्यसन से होने वाली हानि आँखों से रोज देखते भी हैं। संत-सतीवृन्द निर्व्यसनी जीवन की प्रेरणा करते हैं। किन्तु यह अनुभव में आता है कि हमारी प्रेरणा हम रहते हैं तब तक तो फिर भी कुछ अंशों में दिखाई देती है हमारे जाने के बाद बात फिर से भुलाई में पड़ जाती है। आप सभी सुज्ञ हैं। सुख की सबकी चाहना है। व्यसन दुःख का कारण है। व्यसन-मुक्त जीवन सुखकर होता है। आप सभी सुख चाहते हैं तो व्यसन से किनारा कर लें। निर्व्यसनी जीवन से स्वयं को साता मिलेगी और वह दूसरों को खटकने वाला नहीं होगा। व्यक्ति-व्यक्ति के संकल्प से समाज का सुधार हो सकेगा। आप शराब, भांग, गांजा, बीड़ी, तम्बाकू आदि में से किसी भी व्यसन के आदि हैं तो हिम्मत करके उसे छोड़ दें आपका जीवन सुन्दर बनेगा। उपाध्यायप्रवर की प्रेरणा से अनेक जैन-जैनेतर बन्धुओं ने व्यसन त्याग संकल्प परिपत्र भरे और नियमबद्ध हो व्यसन से दूर रहने का नियम अंगीकार किया।

असंगता

यदि घड़े में प्रतिबिम्बित चन्द्रमा घड़े के पानी को उबलता हुआ जानकर यह माने कि मैं उबल रहा हूँ, पानी हिले तो समझे कि मैं हिला हूँ, घड़ा फूट गया तो समझे कि मैं मर गया तो यह उसका अज्ञान है, परन्तु उसको यह पता चल जाए कि पानी के उबलने से मैं नहीं उबलता, पानी के हिलने से मैं नहीं हिलता; मैं तो वह चन्द्रमा हूँ जो हजारों घड़ों में चमक रहा हूँ, कितने ही घड़े टूट-फूट गये, परन्तु मैं मरा नहीं, मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ा। मैं इन सबसे असंग हूँ, तो वह कभी दुःखी नहीं होगा, ऐसी मान्यता ही मिथ्यात्व से बचाती है।

इसी प्रकार यदि हम अपने असंगपने को जान लें अर्थात् 'मैं शरीर-मन-बुद्धि नहीं, अपितु आत्मा हूँ' यह हम जान लें तो फिर कितने ही देह रूपी घड़े बनें और टूटें-बिखरें, कितनी ही सृष्टियाँ बनें और उनका प्रलय हो जाये, हमको कोई भय नहीं होगा।

-'जीवनदर्पण' से साभार

आओ स्वाध्याय करें

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

द्वारा प्रायोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१०)

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के माध्यम से 'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता-परीक्षा का दशम आयोजन 'जिनवाणी' के जनवरी-फरवरी-मार्च २००६ के अंकों के आधार पर किया जा रहा है। इसमें कुल ५० प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके उत्तर **श्री गौतम जैन, सचिव-अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, १९२ बी, मीटर गेज रेलवे कॉलोनी, बजरिया-३२२००१, सवाईमाधोपुर, फोनं. ०७४६२-२२१८९१** के पते पर **१५ मई २००६** तक मिल जाने चाहिए। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को क्रमशः १००१ रुपये, ५०१ रुपये एवं २५१ रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा। १०० रुपये के १० प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए जायेंगे। परिणाम की सूचना जून २००६ के अंक में प्रकाशित की जाएगी। प्रतियोगी अपना पता अवश्य लिखें।

जो प्रतियोगी अपने प्राप्तांक शीघ्र जानना चाहते हों, वे प्रविष्टि के साथ जवाबी पोस्टकार्ड भेज कर परिणाम जान सकते हैं। सभी उत्तरदाताओं से निवेदन है कि वे उत्तर भेजते समय केवल प्रश्नक्रमांक व उत्तर ही भेजें। प्रश्न लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है। **-सम्पादक**

(क) अंकों में उत्तर दीजिये:

०१. नर कितने प्रकार की नादानियाँ कर नर-तन को वृथा गँवा रहा है?

०२. रात्रि-भोजन-त्याग का उल्लेख कितने आगमों में हुआ है?

०३. जीवन जीने की कितनी कलाएँ बतलाई गई है?

०४. द्रव्य/भाव सामायिक के साहचर्य को कितने उदाहरणों से सिद्ध किया गया है?

०५. नित्य एक सामायिक करने वाला एक वर्ष में कितने दिन साधु जैसा जीवन जीता है?

०६. एक विनय गुण के होने से बाकी कितने गुण स्वयं आ जाते हैं?

०७. 'जैन पत्रकारिता की दिशा' में कितनी जैन पत्रिकाओं का नामोल्लेख हुआ है?

०८. धन्ना अणगार आहार को कितनी बार धोकर प्रयोग में लेते थे?

०९. एकलविहारी को प्रश्रय न देने विषयक प्रस्ताव कब पास हुआ था?

१०. श्री लोढ़ाजी के लेख में 'लक्ष्मी' शब्द कितनी बार प्रयुक्त हुआ है?

(ख) मुझे पहचानिये-

११. मैं लालच की अधिकता एवं नैतिक मनोबल की न्यूनता का परिणाम हूँ।

१२. मुझे तेरहवाँ चक्रवर्ती बनने की धुन चढ़ी।

१३. संसार सागर से पार होने के लिए मैं नौका या जहाज की तरह हूँ।

१४. जब हम टकराते हैं तो चिंगारियाँ निकलती हैं।
१५. टूटे हुए लोगों को अपने पैरों पर खड़ा करने का मैंने विशेष प्रयास किया।
१६. मेरी प्रबलाग्नि में बड़े से बड़े पाप जल कर भस्म हो सकते हैं।
१७. भारतीय परम्परा में मेरा स्थान भगवान से भी ऊपर है।
१८. मुझमें स्थिर हो जाना ही सामायिक का अन्तिम लक्ष्य है।
१९. मेरे द्वारा मोक्ष का आरक्षण कराया जा सकता है।
२०. मैं धर्म के कार्य को प्रधानता देने का लक्ष्य रखता हूँ।
२१. मेरा फल सत्पुरुषों के मध्य प्रशंसा कहा है।
२२. जहाँ पक्षपात होता है, वहीं मैं अपना स्थान बना लेता हूँ।
२३. मुझे लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ माना जाता है।
२४. मेरे अभाव में कर्त्तव्यशील पुरुष भी लापरवाह हो जाता है।
२५. मैं प्रायः चील की तरह अचानक झपटती हूँ।
२६. मैं संसार को मायानगरी समझने लगता हूँ।
२७. वीतरागता की नींव।
२८. मैं व्यक्तिगत साधना को सुरक्षित रखने का कवच हूँ।
२९. मोक्ष तक पहुँचाने वाली परम एवं सरल प्रक्रिया।
३०. जनमा तो आनन्द मंगल नहीं, मरा तो कोई रोने वाला नहीं।

(ग) एक शब्द में उत्तर दीजिये

३१. आत्मा रूपी घड़ी की चाबी किसे कहा गया?
३२. जैन धर्म-दर्शन की आत्मा व प्राण के समान किसे कहा गया है?
३३. सज्जनों की सरणि का अनुगामी किसे कहा गया?
३४. १६७७७२१६ आवलिकाएँ किसके बराबर होती हैं?
३५. परम एवं चरम कल्याण का मार्ग किसे कहा गया?
३६. अंधश्रद्धा वाला दुराग्रही किस प्रकार का दुर्बोध्य कहा गया है?
३७. समय का भोग देना किस प्रकार का दान कहलाता है?
३८. गर्भस्थ बालक की मनःस्थिति जो माता के खान-पान को प्रभावित करती है।
३९. जीवन का सत्य क्या है?
४०. महती वैज्ञानिक उपलब्धियाँ किस अवस्था में मिलती हैं?

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये?

४१. मातृत्व की जिम्मेदारी सामान्य नहीं..........है।
४२. समय........और बहती हवा किसी का इंतजार नहीं करती।

४३. आर्यरक्षित से पूर्वकाल में...........प्रचलित था।

४४. श्री लोगस्स सूत्र आराधना केन्द्र की स्थापना..........की भूमि पर हुई है।

४५. अहिंसा परमो धर्मः का नारा मूलतः................का है।

(ङ) यह किसे लक्ष्य कर कहा गया है?

४६. बिना सींग पूँछ वाला जानवर।

४७. सूको कांठ टूट जावे पण निवै कौनी।

४८. नौ सौ चूहे खाय बिल्ली हज करने निकली।

४९. जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा।

५०. रास्ते का फूल शूल बन गया।

संशोधन

त्रैमासिक प्रतियोगिता (८) का परिणाम मार्च २००६ की जिनवाणी में प्रकाशित किया गया था। परिणाम में सही उत्तर भी दिए गए थे जिनमें कुछ संशोधन है, जो निम्न है-

उत्तर संख्या	गलत छपा	संशोधित
१४.	अक्टूबर/१०	अक्टूबर/३४
२४.	अक्टूबर/१०	अक्टूबर/३५
२८	अक्टूबर/४०	अक्टूबर/४९
३९	अक्टूबर/१०	अक्टूबर/७

त्रैमासिक प्रतियोगिता (९) का शेष परिणाम-

४७ अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी- अनिल शाह,उज्जैन-४७, हंसराज मोहनोत,जोधपुर-४७, रेखा जैन,कोटा-४७, मृदुला कुम्भट,जोधपुर-४७, पल्लवी जैन,जोधपुर-४७, आभा जैन,खेरली-४७, इन्दु कमलेश जैन,मुम्बई-४७, सुवालाल जैन,कुण्डेरा-४७, कुसुम अभिषेक ललवानी,वापी-४७, अरिहंत जैन,जयपुर-४७, विकास जैन,महवा-४७, स्वप्निका जैन,पीपाड़-४७, स्वर्णिम सालेचा,जोधपुर-४७, जया सिंघवी,चेन्नई-४७, सुनीता सुभाष धाड़ीवाल,भायंदर-४७, शान्ता जी मोदी, जयपुर-४७, भोपालचन्द सेठिया,जोधपुर-४७, प्रेम भण्डारी,जोधपुर-४७, राकेश जैन,सुमेरगंजमण्डी-४७, सुरेखा अभिनंदन भण्डारी,पिपलगांव बसवन्त-४७, सुनीता धर्मेन्द्र बाफना,इन्दौर-४७, विमलाबाई कांकरिया-४७, लक्ष्मीचन्द जैन,समदड़ी-४७, बसंती जैन,आचीणा-४७, राजेन्द्र कोठारी,जोधपुर-४७, वनमाला राठौड़,धुलिया-४७, विजयालक्ष्मी छाजेड़,धुलिया-४७, ममता डोसी,मेड़ता-४७, निर्मला एल.जेलमी,बुरहानपुर-४७, संगीता दिनेश जैन,जलगाँव-४७, अक्षिता जैन,जोधपुर-४७, पुष्पादेवी मुणोत,भटिण्डा-४७, सुनील जैन,मैसूर-४७, सुभाष धाड़ीवाल,भायंदर-४७, लता सतीश आंचलिया-४७, श्रीकांता भण्डारी,अहमदाबाद-४७, राजदुलारी सेठ,जयपुर-४७, एम.पी. जैन,धुले-४७, सरोज पारसमल रूणवाल,धुले-४७, दर्शिका कंवरलाल टाटिया,जलगाँव-४७, मुन्नालाल भण्डारी,जोधपुर-४७, चन्द्रकला मोहनलाल रूणवाल, धुले-४७

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

आचारदिनकर (आचार्य वर्द्धमानसूरिकृत):-प्रथम खण्ड-जैन गृहस्थ की षोडश विधि, द्वितीय खण्ड-मुनि-जीवन के विधि-विधान, अनुवादक- *साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी,* ***सम्पादक***- *डॉ. सागरमल जैन* ***प्रकाशक***-*प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड, शाजापुर-४६५००१(म.प्र.)* ***अन्य प्राप्ति स्थल***-*१. सरस्वती पुस्तक भण्डार, हाथीखाना, रतनपोल, अहमदाबाद(गुजरात) २. श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, मोती डूंगरी रोड, जयपुर,* ***प्रथम खण्ड पृष्ठ*** *२४+१३६,* ***मूल्य*** *४० रुपये , सितम्बर २००५,* ***द्वितीय खण्ड पृष्ठ*** *३९+१९३,* ***मूल्य*** *५० रुपये , फरवरी २००६*

जैन धर्म-दर्शन में आत्म-विशुद्धि एवं मोक्ष के प्रतिपादन का विशेष महत्त्व है, सामाजिक विधि-विधानों की पालना वैदिक-ब्राह्मण परम्परा के अनुसार होती रही है। कतिपय जैनाचार्यों यथा जिनसेन, सोमदेवसूरि, आशाधर आदि ने चार वर्णों, आश्रमों, एवं संस्कारों की जो चर्चा की है, उस पर वैदिक किं वा हिन्दू परम्परा का प्रभाव है। आचार्य वर्द्धमानसूरि ने विक्रम संवत् १४६८ तदनुसार सन् १४१२ में 'आचार दिनकर' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना कर इसमें जैन गृहस्थ के १६ संस्कारों की विधि, मुनि-जीवन के विधि-विधानों तथा गृहस्थ एवं मुनि-जीवन के सामान्य धर्मों का विवेचन किया है। यह ग्रन्थ अपने आपमें अद्भुत है। इसमें गृहस्थ के दो-तीन संस्कारों को छोड़कर शेष सब हिन्दू परम्परा के ही संस्कार वर्णित हैं, किन्तु उन्हें सम्पन्न करने हेतु जैन विधि दी गई है। हिन्दू परम्परा में जहाँ वानप्रस्थ संस्कार का उल्लेख है वहाँ वर्द्धमानसूरि ने व्रतारोपण संस्कार का निरूपण किया है। विवाह की जैन विधि भी दी गई है। अन्तिम संस्कार के पूर्व संलेखना व्रत की आराधना करने की प्रेरणा की गई है। मृतक का अग्नि संस्कार करने की बात कही गई है। आचार दिनकर के दूसरे खण्ड में मुनिजीवन से सम्बद्ध सोलह संस्कारों का निरूपण है, यथा- ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण विधि, क्षुल्लकत्व विधि, प्रव्रज्या विधि, उपस्थापना विधि आदि।

'आचार दिनकर' मूलतः संस्कृत भाषा में रचित है, किन्तु बीच-बीच में प्राकृत के उद्धरण एवं वाक्य भी हैं। इसका किसी भी भाषा में अनुवाद उपलब्ध नहीं था। प्राच्यविद्यापीठ के निदेशक एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् डॉ. सागरमल जी जैन के निर्देशन में साध्वी मोक्षरत्नाश्री जी ने इसका हिन्दी अनुवाद किया है। आचार दिनकर ४० उदयों में विभक्त है। प्रथम एवं द्वितीय खण्ड में १६-१६ उदयों का निरूपण है तथा तृतीय खण्ड में शेष ८ उदयों का प्रकाशन सम्भावित है।

दोनों पुस्तकों में हिन्दी अनुवाद है, कहीं-कहीं मूल पाठ भी दिए गए हैं। हिन्दी में आने से 'आचार दिनकर' का मूलहार्द सर्वजन सुलभ हो गया है। इसके लिए अनुवादक एवं सम्पादक बधाई के पात्र है।

श्री जैन विवाह विधि- श्री जीवदया मण्डल ट्रस्ट (रजि.), डागा सदन, संघपुरा, टोंक (राज.)-३०४००१, पृष्ठ ३२, मूल्य ५ रुपये, तृतीय संस्करण २००६

जैन विवाह विधि की चर्चा वर्द्धमानसूरि विरचित 'आचार दिनकर' ग्रन्थ में सबसे प्राचीन प्रतीत होती है। उसके पश्चात् समय-समय पर श्वेताम्बर एवं दिगम्बर परम्परा में विवाह-विधियाँ निर्मित होती रही हैं, उनमें से कुछ प्रचलन में आती रही हैं, किन्तु एकरूपता का अभी भी अभाव प्रतीत होता है। श्री जीवदया मण्डल ट्रस्ट, टोंक ने जो 'जैन विवाह विधि' प्रकाशित की है, वह स्थानकवासी जैन परम्परा के अनुरूप है, क्योंकि इसमें यज्ञ एवं सचित्त माला का उपयोग नहीं बताया गया है। विशेष बात यह है, जो सभी जैनों को मान्य होना चाहिए कि विवाह का आयोजन दिन में ही हो, रात्रि में नहीं। जैन विवाह विधि के महत्त्व को इस पुस्तक में प्रस्तुत करते हुए कहा गया है-

जैन विधि से विवाह कराना, हर जैनी का धर्म है,
छह काया की रक्षा होती, यह तो बड़ा शुभ कर्म है।
अर्थ बचेगा, पाप घटेगा, आडम्बर से होगी मुक्ति,
शुभ कार्यों में गति होयेगी, और मिलेगी नवशक्ति॥

जैनाचार के अनुरूप विवाह विधि की आवश्यकता का अनुभव अनेक व्यक्ति करते हैं। इस पुस्तक में गृह प्रवेश, पगड़ी दस्तूर आदि की भी विधि दी गई है। अतः पुस्तक की उपयोगिता असंदिग्ध है।

Workshop on "Jainism and Society" in University of London

School of oriental and African Studies (SOAS), University of London had organised a workshop on **'Jainism and Society'** on 23rd & 24th March, 2006 at Brunei Gallery Lecture Theatre. On 23rd March 2006 **Prof. Johannes Bronkhorst,** University of Lausanne delivered the Annual Jain lecture on **'Jainism, Window on Early India'.** The workshop started on 24th March at 9.00 a.m. 13 scholars from various countries presented their research papers during the workshop which was concluded at 7.00 p.m. speakers of this workshop were as follows-

1. **Robert Del Bontu (San Francisco) :-** From Herodotus to the late 18th century: descriptions of unidentified Jainas.
2. **Dharmchand Jain (University of Jodhpur):-** The concept of society in Jainism.
3. **Satya Ranjan Banerjee (University of Calcutta):-** Jain Society in the reigns of Jain Kings.
4. **Sushil Jain (Assumption University, Canada):-** Jaina contribution to the science of polity with respect to somadeva's Nitivakyamratam.
5. **Hampa P. Nagarajaiah (University of Bangalore):-** The concept of Sastradana in Jainism: Socio-cultural dimensions.
6. **Kornelius Krumpelmann (University of Munster):-** The sthanangasutra: An encyclopaedic text of the Svetambara canon.
7. **Werner Menski (SOAS) :-** Jainism as natural law.
8. **Peter Flugel (SOAS) :-** Jaina law and the jain community
9. **Ravindra K. Jain (Jawaharlal Nehru University, New Delhi):-** Religious response to social unrest: The rise of the Kanji Svami Panth in contemporary Jainism.
10. **Ulrich oberdieck (Freiburg):-**Caste identity of the agravals in an Uttaranchal market town.
11. **Jitendra B. Shah (L.D. Institute of Indology, Ahmedabad):-** Jain Societies in Ahmedabad.
12. **Anne Vallely (University of Ottawa) :-** You are what you eat : Negotiations of identity among contemporary Jains.
13. **Julia Hegewald (University of Heidelberg) :-** Domes, Tombs and Minarets : Islamic influences on Jaina architecture.

In addition to Academicians many persons of Jaina community of London were also present in the workshop.

सरल स्वभावी, अध्ययन प्रेमी वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान् जौहरीमल जी छाजेड़, जोधपुर

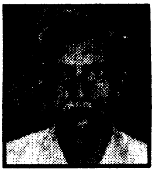

सरलता, सादगी, सेवा, सहयोग आदि गुणों से ओतप्रोत, अध्ययनप्रिय वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान् जौहरीमल जी छाजेड़ का जन्म जोधपुर निवासी श्री जुगराज जी छाजेड़ की धर्मपत्नी श्रीमती भूरीबाई छाजेड़ की कुक्षि से दिनांक २७.१०.१९३८ को सूर्यनगरी जोधपुर में हुआ। जोधपुर के श्री सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय से आपने बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण की।

राजस्थान में ही आपने विभिन्न पदों पर राजकीय सेवा में रहते हुए स्वाध्याय को भी जीवन का अंग बनाया। सन् १९७२ में आप स्वाध्यायी बने। वरिष्ठ निजी सहायक के पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात् अपना अधिकतम समय सामायिक और स्वाध्याय में व्यतीत कर रहे हैं। आप प्रतिदिन आठ सामायिक करते हुए सायंकालीन प्रतिक्रमण तथा थोकड़ों का पुनरावर्तन का प्रयास करते हैं।

दशवैकालिक सूत्र तथा उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन आपने कण्ठस्थ किये तथा विविध सूत्रों का वाचन करते रहते हैं। २५ बोल, ६७ बोल, जीवधड़ा, लघुदण्डक आदि कई थोकड़े, धार्मिक भजन व चौबीसियाँ आपको कण्ठस्थ हैं।

गत ३३ वर्षों में आपने बाड़मेर, पालासनी, नवाणियाँ, दासपां, बागली, सालावास, धनारीगाँव, परपोड़ी, कुआरियाँ, मोही, मावली जंक्शन, बागावास, खैरागढ़, गौतमपुरा, पीह, भानसोल गढवाडा, धनारीकलां, गोपालगढ़, खण्डप, अजीत, कुस्तला, खैराकला, आगोलाई, नवाणियां आदि क्षेत्रों में वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में पर्वाधिराज पर्युषण में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ देते हुए जिनशासन की महती प्रभावना की है। पर्युषण में आप दोनों समय प्रतिक्रमण, प्रार्थना, समुच्चय प्रत्याख्यान, अंतगड वाचन, विषयवार प्रवचन, चौपाई, कल्पसूत्र, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम कराते हैं।

संघ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक और नैतिक शिविरों में चाहे वे बच्चों के शिविर हों या महिलाओं के, अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं तथा स्वांध्यायी शिविरों में भी आप हमेशा भाग लेते रहते हैं।

गत बीस वर्षों से आप श्रावक के १२ व्रतों का पालन कर रहे हैं। समय-समय पर अपने द्वारा लिये गये व्रतों का निरीक्षण-परीक्षण कर दोष आदि लगने पर प्रायश्चित्त द्वारा शुद्धीकरण भी करते हैं। आपने सेवानिवृत्ति के पश्चात् से रात्रिभोजन का त्याग भी किया है। सघ द्वारा आयोजित स्वाध्यायी परीक्षा में भाग लेकर ज्ञानार्जन की ओर भी आप सदा तत्पर रहते हैं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की सातवीं कक्षा आप उत्तीर्ण कर चुके हैं। धार्मिक लेख लिखने में भी आपकी विशेष रुचि है। श्री जैन रत्न पुस्तकालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर में भी आपने निःशुल्क सेवाएँ प्रदान की है।

स्वाध्याय-संघ परिवार आपकी सुदीर्घ आयु तथा उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हुआ जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता है कि आप स्वस्थ रहें तथा जिनवाणी की प्रभावना करते रहें। ***-श्रीमती मोहनकौर जैन, सचिव***

जीना है ज्योति बनकर

मोनिका डांगी

जीना कैसे?

ज्वाला नहीं-ज्योति बनकर, काँटे नहीं-फूल बनकर,
अभिशाप नहीं-वरदान बनकर, छाया नहीं-साया बनकर,
तारा नहीं-सितारा बनकर।
ज्योति बनना है तो
स्वाध्याय करो, ध्यान करो व कायोत्सर्ग करो।
फूल बनना है तो
प्रायश्चित्त करो, विनय करो व सेवा करो।
वरदान बनना है तो
पीना अपमान को, पचाना देखी-सुनी बातों को व सहना गम को सीखो।
साया बनना है तो
नमना सीखो, निभना सीखो और निभाना सीखो।
सितारा बनना है तो
सम्यक् ज्ञान-दर्शन व चारित्र का आराधन करो।

-ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज (किशनगढ़)

समाचार-संकलन

विक्रम सम्वत् २०६३ के स्वीकृत चातुर्मास

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने ताम्बरम (चेन्नई) की प्रवचन सभा में चैत्र शुक्ला पंचमी, रविवार दिनांक २ अप्रेल २००६ को साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ विक्रम सम्वत् २०६३ के निम्न चातुर्मास घोषित किए हैं-

१. पीपाड़सिटी (जिला-जोधपुर)राज.	- परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा
२. घोड़ों का चौक, जोधपुर	- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा
३. जावला (जिला-नागौर)राज.	- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
४. पीपाड़ सिटी(सकारण)	- शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
५. जबलपुर (म.प्र.)	- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
६. कानपुर (उ.प्र.)	- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा (स्थान का निर्णय बाद में)
७. देई (जिला- बून्दी)राज.	- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा
८. कोटा (राज.)	- व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा
९. काचीगुड़ा, हैदराबाद (आ.प्र.)	- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा
१०.गदग (कर्नाटक)	- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा

११.आवासन मण्डल, - व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा.

सवाईमाधोपुर(राज.) आदि ठाणा

आचार्यप्रवर ने भोपालगढ़ श्रीसंघ की विनति पर क्षेत्र खाली नहीं रहने का आश्वासन दिया है। शेष चातुर्मासों की स्वीकृति होने पर सूचना की जा सकेगी।

-नवरतन डागा, महामंत्री

अक्षयतृतीया पुरुषवाक्कम् (चेन्नई) एवं जोधपुर में

तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया का माहात्म्य श्रवण करने एवं तप पूर्णाहुति समारोह में भाग लेने का सुअवसर

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रबल प्रेरक, समाज-सुधार क्रांति के सूत्रधार परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया की स्वीकृति पुरुषवाक्कम्-चेन्नई फरमाई है। आचार्यप्रवर की घोषणा से चेन्नई महानगर में एवं दक्षिणी प्रदेशों में एकान्तर तप-साधकों को एवं नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने वालों को हर्ष है। अक्षय तृतीया समारोह का आयोजन वैशाख शुक्ला ३, रविवार, दिनांक ३० अप्रेल २००६ को वैंकुट अपार्टमेन्ट, पुरुषवाक्कम्, चेन्नई में रखा गया है। सम्पर्क सूत्र एवं स्थान की जानकारी इस प्रकार है-

स्थान- वैंकुट अपार्टमेन्ट, १२५-ए, ब्रिक लेन रोड़, पुरुषवाक्कम्, चेन्नई-६००००७

सम्पर्क सूत्र- (१) श्री बादलचन्द जी बागमार, फोन नं. ०४४-२५६३६९०७, मो. ९९४००-७३४३४, (२) श्री सुगनचन्द जी बोथरा, फोन नं. ०४४-२५३६८०७०, मो. ९४४४३-६७९९५

नोट- एकान्तर तप साधक श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि वे तप और दान का माहात्म्य श्रवण करने एवं नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने हेतु चेन्नई पधारने की पूर्व सूचना निम्न पते पर करने का कष्ट करें-

१. **Shri Goutamchand Ji Hundiwal, 4/29, Shandy Road, Pallavaram, Chennai-43(T.N.) Ph. 044-22641554/22640915/ Mob.98401-12346/ 944388565, Fax : 044-22641569**

२. **Shri Mahendra Ji Kankaria, Mahendra Jewllers, 1000-1001, T.H. Road, Kaladipet, Chennai-19(T.N.) Ph. 044-259913 3/25994466 Mob.94440-51313**

जो तप-साधक एवं नवीन व्रत-नियम अंगीकार करने वाले श्रावक-श्राविकाएँ सुदूर दक्षिण चेन्नई नहीं पहुँच सकते हों। वे अक्षय तृतीया सूर्यनगरी-जोधपुर में आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल-पुरुषार्थी, परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा एवं साध्वीप्रमुखा परमविदुषी शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के मुखारविन्द से तप और दान का माहात्म्य श्रवण कर नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर सकेंगे।

स्थान - नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

सम्पर्क सूत्र-(१) डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, अध्यक्ष, फोन नं. ०२९१-२५४४१०९/ २५४५१०५, **(२) श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, मंत्री, फोन नं. ०२९१-२७२२१३६, २७४२१३८, २६३६७६३, (३) ३. श्री नवरतन जी डागा, महामंत्री, फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६५४६७२, २६५४४२७, ९८२८०-३२२१५**

विचरण-विहार एवं विहार दिशाएँ

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सेवाभावी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ का विचरण अभी चेन्नई के उपनगरों में चल रहा है। आचार्यप्रवर के लम्बे विहार की स्थिति नहीं होते हुए भी आत्मबल के सहारे विहार की क्रमबद्धता बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। आवड़ी-पुनमल्ली-पल्लावरम् क्षेत्रों को लाभान्वित करते हुए आचार्यप्रवर स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में आत्मबल और पुरुषार्थ के आधार पर १५ मार्च को क्रोमपेट पधारे। १६ मार्च को ताम्बरम, १७ मार्च को पैरंगलतूर और १८ मार्च को गुडवान्चेरी पधारे। १८ मार्च के ८ किलोमीटर विहार के कारण पाँवों में सूजन और अग्र विहार की स्थिति नहीं होने से गुडवान्चेरी विराजना पड़ा। स्वास्थ्य संबंधी स्थिति के परिप्रेक्ष्य में चेन्नई महानगर एवं विभिन्न क्षेत्रों के श्रीसंघों व श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का पुनः पुनः आग्रह रहा कि भगवन्! आपका स्वास्थ्य समीचीन नहीं है अतः आप महावीर जयन्ती, अक्षय तृतीया, आचार्य भगवन्त की पुण्य तिथि और चातुर्मास की हमारी विनति पर स्वीकृति फरमाने की कृपा करें। महावीर जयन्ती के लिए चंगलपेट, मदुरान्तकम्, तिण्डिवनम्, विलीपुरम, आलन्दूर, ताम्ब्रम, उत्तरपेरु, कांजीपुरम, नंगनल्लूर की विनतियाँ चल रही

हैं। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया के लिए बैंगलोर, चेतपेट, तिरुवन्नावल्ली, वेल्लूर, पुरुषवाक्कम् आदि स्थानों की प्राप्त विनतियों के उत्तर में आचार्यप्रवर ने तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया की सुखे-समाधे पुरुषवाक्कम् (चेन्नई) की स्वीकृति प्रदान की है।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ९ तथा व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ के पावन सान्निध्य में पल्लावरम् में चेन्नई महानगर के विभिन्न क्षेत्रों के श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में फाल्गुनी पक्खी चौमासी पर प्रार्थना, प्रवचन, दया-संवर, उपवास-पौषध जैसे कार्यक्रमों में श्रावक-श्राविकाओं की विशाल उपस्थिति देखने योग्य थी। सामायिक-स्वाध्याय के साथ तपाराधन में आबाल-वृद्ध सबका उत्साह प्रेरणादायी रहा। फाल्गुनी चौमासी पर श्रद्धालु भक्तों ने आचार्यप्रवर की चरण सन्निधि में अष्ट प्रहरीय पौषध एवं दयाव्रत की साधना की तो बहिनों ने व्याख्यात्री महासती मण्डल की सेवा में धर्म-साधना की।

आदिनाथ भगवान का जन्म-कल्याणक एवं रत्नसंघ नायक हस्ती पट्टधर गुरु हीरा का जन्म-दिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी दिनांक २३ मार्च को गुडवान्चेरी एस.एस. जैन प्रेयर हॉल में श्रद्धाभक्ति पूर्वक मनाया गया। अप्रेल के प्रथम दिन आचार्यप्रवर का पैरंगलतूर पदार्पण हुआ है।

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने कनाना से जानीयाना, मूंगड़ा आदि मध्यान्तर के ग्रामों में ज्ञान गंगा प्रवाहित करते ८ मार्च को पचपदरा नगर में मंगल-प्रवेश किया। पचपदरा नगर के सकल जैन समाज के श्रद्धालुओं ने उपाध्यायप्रवर के सामने आकर अगवानी की। राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति, अनन्य गुरुभक्त, दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्रावक श्री जसराज जी चौपड़ा की पुनः पुनः विनति पर उपाध्यायप्रवर पचपदरा शहर में करीब १२ दिन विराजे। फाल्गुनी चौमासी पर्व के साथ सत्संग सेवा और संत-समागम के सुयोग का आबाल-वृद्ध, जैन-जैनेतर जन-समुदाय ने अपूर्व लाभ लिया। पचपदरा के ओसवाल भवन में सार्वजनिक प्रवचन हुआ जिसका संक्षिप्त विवरण अलग से दिया गया है। पचपदरा में धर्मानुरागी लूंकड़ परिवार के श्री कांतिलाल जी लूंकड़ ने स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का लाभ लिया, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा सुनने को मिल रही है। पचपदरा से गोपड़ी, रिसोली आदि क्षेत्रों को पावन कर उपाध्यायप्रवर २३ मार्च को पाटोदी पधारे।

रिसोली में संघाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संघ महामंत्री श्री नवरतन जी डागा ने उपाध्यायप्रवर के दर्शन-वन्दन एवं सत्संग-सेवा का लाभ प्राप्त किया। बालोतरा के संघसेवी श्रावकरत्न श्री मीठालाल जी मधुर, श्री धर्मेश जी चौपड़ा एवं सिवांची पट्टी के श्रद्धालुओं ने विचरण-विहार में सेवा का लाभ लिया। पाटोदी में भगवान आदिनाथ जन्म-कल्याणक और आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर बालोतरा, सिवाना, पचपदरा एवं समीपवर्ती क्षेत्रों के करीब ३०० भक्तों ने आचार्यप्रवर के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। प्रवचन सभा में विशाल उपस्थिति को देखकर अजैन लोग विस्मित थे। उपाध्याय प्रवर जहाँ भी पधारते हैं वहाँ धर्म-ध्यान का ठाट लगा रहता है। पाटोदी से कालमकोट, सिमरकिया क्षेत्र पावन करते हुए उपाध्यायप्रवर बागावास पधारे, जहाँ श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से सेवा लाभ लिया। बागावास के पश्चात् मण्डली-कोरना क्षेत्र पावन कर उपाध्यायप्रवर का २ अप्रेल को आगोलाई मंगल प्रवेश हुआ। संघ-संरक्षक श्री सायरचन्द जी कांकरिया, संघ संरक्षक डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, जोधपुर संघ मंत्री श्री अमरचन्द जी सदावत मंडली में उपाध्यायप्रवर के दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित हुए। आगोलाई श्रीसंघ ने उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में महावीर जयन्ती आगोलाई करने की भावपूर्ण विनति रखी है।

आचार्य श्री हीरा के जन्म-दिवस पर तप-त्याग

आगमज्ञ, प्रवचनप्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार क्रांति के सूत्रधार परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ६८वाँ जन्म-दिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी, गुरुवार दिनांक २३ मार्च २००६ को भगवान आदिनाथ की जयन्ती के साथ त्याग-तपपूर्वक मनाया गया। आचार्यप्रवर गुडवान्चेरी विराजमान थे। अतः वहाँ महान् अध्यवसायी सेवाभावी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि संतरत्नों ने गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के गुणस्मरण-गुणकीर्तन करते हुए उनकी स्वास्थ्य-समाधि की मंगल कामना की। चेन्नई महानगर एवं उपनगरों के श्रद्धालुओं ने गुडवान्चेरी पहुँचकर दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा के साथ व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर त्याग-तप का आदर्श उपस्थित किया। भक्तों ने भगवन्त के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की मंगलकामना की। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. ने भी गुरु गुणगान किए।

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ रिसोली से विहार कर पाटोदी पधारे। जहाँ प्रवचन सभा में उपाध्याय प्रवर सहित संत-

मुनिराजों ने संघनायक के विशिष्ट गुणों पर प्रकाश डालते हुए आचार्यप्रवर के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की। सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने चिंगलपेट जिला मुख्यालय पर प्रवचन सभा में दीर्घद्रष्टा आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व-कृतित्व पर विशद प्रकाश डालते हुए फरमाया कि आचार्य श्री समाचारी का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाले निस्पृही महापुरुष हैं जिनकी कथनी-करणी में एकरूपता है। चेन्नई चातुर्मास में समाज-हित की दृष्टि से आचार्यप्रवर की प्रेरणा का सुपरिणाम है कि सामूहिक भोज में जमीकन्द का प्रयोग कम हुआ है, आडम्बर-प्रदर्शन की रोकथाम हुई है। सामायिक-स्वाध्याय, साधना और सेवा के सुन्दर रूप से आप परिचित हैं अतः आपसे यही अपेक्षा है कि आप त्याग-तप को जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करें। गुडवान्चेरी, पाटोदी और चिंगलपेठ में सामायिक-साधना के अलावा आयंबिल, एकाशन, उपवास, दया के प्रत्याख्यानों में आबाल-वृद्ध सबने भावनापूर्वक भागीदारी प्रदर्शित की।

साध्वीप्रमुखा परमविदुषी शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में वर्द्धमान भवन पावटा, जोधपुर में आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर अधिकांश श्रावक-श्राविकाओं ने पाँच-पाँच सामायिकें की और अष्टमी पर दया-संवर करने वालों के अलावा भी कुछ लोगों ने दयाव्रत का आराधन किया। सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में दांतड़ा में आचार्यप्रवर का जन्म-दिवस मनाया गया जहाँ जैन-जैनेतर जन-समुदाय ने भक्ति-भावना दर्शायी। शान्त-स्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. के सान्निध्य में पीपाड़वासियों ने भक्ति-भावना से पाँच-पाँच सामायिकें तो की ही व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार कर आचार्यप्रवर के स्वास्थ्य लाभ की भी कामना की। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में ओबेदुल्लागंज में आचार्यप्रवर का जन्म-दिवस मनाया गया। व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा विचरण-विहार करते हुए मादलिया पधारे, जहाँ आचार्यप्रवर के गुण-स्मरण, गुणकीर्तन के साथ व्रत नियमों के प्रति उत्साह रहा। विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ने वेल्लूर में आचार्यप्रवर का जन्म-दिवस भावनापूर्वक मनाया। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. ने आगरा नगर के वालुगंज क्षेत्र में गुण-स्मरण किए। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में किशनगढ़ शहर में आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर त्याग-तप की अच्छी प्रभावना रही। व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ने

मदनगंज में और व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा ने नसीराबाद में आचार्यप्रवर का जन्म-दिवस मनाया। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ने कोप्पल में, व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ने औद्योगिक क्षेत्र बीकानेर में, व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. ने गदग में तथा सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ने नाशिक के पास पंचवटी में आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर व्रत-प्रत्याख्यानों की प्रेरणा की, जिसमें सर्वत्र उत्साह दिखाई दिया।

मुम्बई- पंचरत्ना बिल्डिंग, मुम्बई के हॉल में आचार्य श्री की जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में सर्वश्री चाँदमल जी कर्णावट, श्री पार्श्वकुमार जी मेहता, श्रीमती शान्तिदेवी जी लुणावत, श्री प्रेमचन्द जी जैन, श्री कपूरचन्द जी जैन, श्रीमती प्रसन्नदेवी जी गांग, श्री गौतम एस. मेहता, श्रीमती हुकमकुँवर जी कर्णावट, श्री मदनलाल जी ललवाणी, श्री रतनलाल जी भण्डारी, श्री प्रेमचन्द जी जैन (मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल) आदि महानुभावों ने आचार्य भगवन्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रवीण कुमार कर्णावट ने किया। इस अवसर पर श्री पारसचन्द जी हीरावत, श्री रायचन्द जी हीरावत, श्री अजय जी हीरावत, श्री निहालचन्द जी ढड्ढा, श्री नरेन्द्र जी डागा आदि श्रावकरत्नों सहित अनेक श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर सामायिक-स्वाध्याय के साथ जन्म-जयन्ती का आयोजन सफल किया।

जयपुर- लालभवन में उपाध्यायप्रवर श्री पुष्करमुनि जी म.सा. के शिष्य श्रमण संघ के उपप्रवर्तक श्री नरेशमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का जन्म-दिवस सामायिक, पौषध, दया एवं तप के साथ मनाया गया। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए उपप्रवर्तक श्री नरेशमुनि जी ने कहा कि आचार्य पद आकांक्षा वालों को नहीं मिलता है, यह तो विनयवान को मिलता है और आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. में यह गुण विद्यमान है। मुनिश्री ने आचार्यश्री हस्ती एवं श्री पुष्करमुनि जी म.सा. के आत्मीय संबंधों का भी सजीव चित्रण किया। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक जयपुर संघ, जयपुर के मंत्री श्री विमलचन्द जी डागा ने कहा कि आचार्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. का व्यक्तित्व ही इस प्रकार का था कि उन्होंने गुरु के हृदय में अविस्मरणीय स्थान प्राप्त कर लिया था। इस अवसर पर संघ अध्यक्ष श्री गुमानमल जी चोरडिया, सुश्राविका श्रीमती मंजू जी कोठारी, श्री विनोद कुमार जी सेठ, श्री श्रीकान्त जी एवं श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के छात्रों ने आचार्यप्रवर के गुणों का उल्लेख किया। उपप्रवर्तक श्री नरेशमुनि

जी के शिष्य श्री शालिभद्र जी म.सा. ने 'आचार्य श्री जी के पद पंकज में नित उठ शीश झुकाऊँ मैं' काव्य की प्रस्तुति की।

देश के अन्य कई ग्राम-नगरों और महानगरों में भी आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस के प्रसंग से त्याग-तप के कार्यक्रम रखे गये। प्रश्नोत्तर प्रतियोगिताओं के साथ सामूहिक सामायिक-साधना में आबाल-वृद्ध सबने भावना प्रदर्शित करते हुए आचार्यप्रवर के स्वास्थ्य में समाधि की मंगल कामनाएँ की। देश के अनेक ग्राम-नगरों और महानगरों में श्रद्धालुओं ने स्व-प्रेरित भावना से आचार्यप्रवर के जन्म-दिवस पर त्याग-तप के कार्यक्रम आयोजित किए।

संघ एवं मण्डल की कार्यकारिणी बैठक जलगाँव में सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक आर.सी. बाफना गौ-सेवा अनुसंधान केन्द्र, जलगाँव में संघाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत की अध्यक्षता में रविवार ५ मार्च २००६ को सम्पन्न हुई। बैठक में मण्डल अध्यक्ष श्रीमती सुशीला जी बोहरा का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ।

मंगलाचरण के अनन्तर संघ-मण्डल की गत बैठक की कार्यवाही का पठन एवं अनुमोदन किया गया। वर्ष २००६-०७ के प्रस्तावित बजट स्वीकार किए गए। आचार्य श्री हस्ती जीवन-दर्शन प्रतियोगिता के अन्तर्गत 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ की देशभर में माँग पर प्रमोद प्रकट किया गया। मण्डल के नए प्रकाशित साहित्य की जानकारी भी दी गई। नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं की तृतीय आवृत्ति के संबंध में निर्णय लिया गया। शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत जैन वात्सल्य निधि कोष को समृद्ध करने हेतु अब तक के प्रयासों की जानकारी संघ कार्याध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने दी। बैठक में प्राप्त सुझावों पर चिन्तन भी किया गया। संघ में उच्च शिक्षण को प्रोत्साहन मिले एतदर्थ युवक परिषद् की छात्रवृत्ति योजना को सिद्धान्त रूप से स्वीकृति दी गई। धार्मिक पाठशालाओं पर भी विचार-विमर्श किया गया। जलगाँव के गो-सेवा केन्द्र की सुन्दर व्यवस्था एवं आतिथ्य सत्कार के लिए सदस्यों ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए एक लोगस्स का ध्यान किया गया।

-नवरतन डागा, महामंत्री

श्री नानाजी देशमुख का समता पुरस्कार के लिए चयन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर ने इस वर्ष समता पुरस्कार के लिए श्री नानाजी देशमुख का चयन किया है। यह निर्णय प्रख्यात विधिवेत्ता

डॉ. एल.एम. सिंघवी की अध्यक्षता में गठित आचार्य नानेश समता पुरस्कार निर्णायक मण्डल द्वारा लिया गया। -*भंवरलाल कोठारी, संयोजक*

महावीर इण्टरनेशनल का जोधपुर में २१वाँ अधिवेशन सम्पन्न

जोधपुर- महावीर इण्टरनेशनल का राष्ट्रीय अधिवेशन ११ व १२ फरवरी २००६ को महावीर कॉम्पलेक्स में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। देशभर के करीब १५०० प्रतिनिधियों ने अधिवेशन में भाग लिया। अधिवेशन का उद्घाटन जोधपुर के पूर्व नरेश महाराज गजसिंहजी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान के वन व खान मंत्री श्री लक्ष्मीनारायण जी दवे का सान्निध्य प्राप्त हुआ। राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा प्रमुख वक्ता थे। महावीर इण्टरनेशनल के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष वीर मंगल प्रभात जी लोढ़ा की अध्यक्षता में सम्पन्न अधिवेशन में जोधपुर केन्द्र के अध्यक्ष वीर माणकचन्द जी संचेती को 'कर्मवीर सम्मान' से सम्मानित किया गया। -*डॉ. जगदीशचन्द गांधी, सचिव*

श्राविका मण्डल द्वारा संस्कार निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, शाखा-जयपुर द्वारा बालक-बालिकाओं में संस्कार निर्माण एवं सद्गुणों में अभिवृद्धि करने हेतु संस्कार निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन श्रीमती कमलादेवी जी कोठारी, श्री नरेन्द्र जी कोठारी, श्री विरेन्द्र जी कोठारी, हांगकांग, बैंकांक के सौजन्य से किया जा रहा है। उक्त प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर १० ग्राम सोने का सिक्का, द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर ५ ग्राम सोने का सिक्का एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को ३ ग्राम सोने का सिक्का प्रदान किया जायेगा। इसके अतिरिक्त ५० ग्राम चाँदी के सिक्के के १० सुपर टॉप टेन पुरस्कार एवं २० ग्राम चाँदी के सिक्के के ४० अन्य पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। प्रतियोगिता के लिए प्रश्न-पुस्तिका सह उत्तरपुस्तिका सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-३०२००३(राज.), फोन नं. ०१४१-२५७५९९७ कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। प्रश्नपुस्तिका का मूल्य ३०/- रुपये एवं डाक द्वारा मंगाने पर ५०/- रुपये मात्र रखा गया है। प्रतियोगिता १५ अप्रेल २००६ से प्रारम्भ होगी। प्रश्नपुस्तिका प्राप्त करने की अन्तिम तिथि ३१ मई २००६ एवं जमा कराने की अन्तिम तिथि १५ जुलाई २००६ रखी गई है। इच्छुक प्रतियोगी प्रश्नपुस्तिका सह उत्तरपुस्तिका व्यक्तिगत रूप से उपर्युक्त पते से प्राप्त कर सकते हैं अथवा बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर 'अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, शाखा-जयपुर' के नाम से भेजकर मंगवां सकते हैं। -*उर्मिला बोथरा, अध्यक्ष, १९९७, पीतलियों का चौक, जौहरी बाजार, जयपुर*

लन्दन विश्वविद्यालय में जैनदर्शन का अध्ययन

लन्दन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ओरियण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज (SOAS) के अन्तर्गत सन् २००४ से जैन अध्ययन केन्द्र (Centre of Jaina Studies) प्रारम्भ हुआ है। इस अध्ययन केन्द्र के द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर शोध कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। यह केन्द्र विशेष व्याख्यान एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का भी आयोजन करता है। केन्द्र के द्वारा एक न्यूजलेटर भी प्रारम्भ किया गया है, जिसका प्रवेशांक मार्च २००६ में प्रकाशित हुआ है। केन्द्र के माध्यम से पुस्तकों एवं ऑनलाइन जर्नल का भी प्रकाशन किया जाता है। यह जैन अध्ययन केन्द्र धर्म अध्ययन विभाग के विकास का परिणाम है। भारत के बाहर लन्दन विश्वविद्यालय में ही यह नियमित केन्द्र है जो जैनदर्शन पर पाठ्यक्रम संचालित करता है। यहाँ यूरोप, अमेरिका, जापान से भी छात्र अध्ययनार्थ आते हैं। जैन विद्या में अध्ययनरतन छात्रों को पुरस्कार एवं छात्रवृत्तियाँ भी दी जाती हैं। जैन समाज यूरोप, **Jaina Spirit** पत्रिका एवं इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी लन्दन का भी इस केन्द्र के प्रारम्भ करने में योगदान रहा है।

अखिल भारतीय जैन पत्रकार सम्मेलन सम्पन्न

दिल्ली- १८ एवं १९ मार्च २००६ को जैन महासभा दिल्ली के तत्त्वावधान में आध्यात्मिक साधना केन्द्र, दिल्ली में अखिल भारतीय जैन पत्रकार सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर केन्द्रीय मंत्री ऑस्कर फर्नान्डिस ने कहा कि पत्रकार समाज की आँख और कान होते हैं, वे समाज के दिशा बोधक हैं, सद्मूल्यों को आगे बढ़ाने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। महासभा के अध्यक्ष श्री टोडरमल जी लालानी ने कहा कि जो समाज अपने चिन्तक और बौद्धिक वर्ग को सम्मान नहीं देता, वह अपना प्रभाव और गरिमा भी नहीं बचा पाता। सम्मेलन में लगभग ४० जैन पत्रकारों ने भाग लिया। प्रमुख निर्णय इस प्रकार रहे-

१. जैन पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों/संवाददाताओं तथा सार्वजनिक समाचार-पत्रों और टी.वी. चैनलों में कार्यरत जैन पत्रकारों की परिचय पुस्तिका तैयार की जानी चाहिए।

२. जैन पत्रकारों को निष्पक्ष और निर्भय होकर अपने दायित्व को पूरा करना चाहिए। पत्रकार की कलम की धार कुन्द नहीं पड़नी चाहिए। न पत्रकार की कलम बिकनी चाहिए और न ही गिरवी रखी जानी चाहिए। पत्रकारों को समाज में व्याप्त कुरूढ़ियों, गलत परम्पराओं एवं शिथिलाचार का विरोध करना चाहिए तथा उच्च मूल्यों एवं मर्यादाओं को प्रतिष्ठित करना चाहिए।

३. पत्र-पत्रिकाएँ 'सद्भावना के द्वार' की भूमिका निभाएँ। दूसरे वर्ग की मान्यताओं और भावनाओं पर आक्षेपात्मक समाचार या लेख प्रकाशित न करें। समाज के सभी वर्गों की अच्छी गतिविधियों को व्यक्तिगत और साम्प्रदायिक पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर अपनी पत्र-पत्रिकाओं में स्थान दें।

४. जैन पत्रकारों की एकता को प्रभावी स्वर देने के लिए गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, दक्षिणभारत और उत्तरभारत के अन्तर्गत हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश के जैन पत्रकारों के प्रादेशिक सम्मेलन आयोजित किए जायें।

सम्मेलन में 'विवाद समाधान पीठ' के गठन का प्रस्ताव हुआ तथा हिंसा पर नियन्त्रण को प्रभावी बनाने पर विचार हुआ। धन के भद्दे प्रदर्शन, फिजूलखर्जी और समाज के साधनों के अपव्यय को रोकने पर भी चर्चा हुई। सम्मेलन में अल्पसंख्यकता के मुद्दे पर निर्णय नहीं हो सका। *-प्रो. रतन जैन, दिल्ली*

जैन विश्वभारती, लन्दन में संक्षिप्त संगोष्ठी

जैन विश्वभारती, लन्दन के सभागार में रविवार, २६ मार्च २००६ को लन्दन विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में समागत विद्वानों की एक संक्षिप्त संगोष्ठी रखी गई। इस संगोष्ठी में डॉ. सत्यरंजन बनर्जी-कोलकाता, डॉ. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, डॉ. सुशील कुमार जैन-कनाड़ा, डॉ. जितेन्द्रभाई शाह-अहमदाबाद एवं डॉ. पीटर फ्लूगल-लन्दन ने जैन विद्या से सम्बद्ध विषयों पर अपने विचार अभिव्यक्त किए। समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी पुण्यप्रज्ञा की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन हर्षद भाई संघराजका ने किया।

प्रचारकों की आवश्यकता

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों हेतु प्रचारकों की आवश्यकता है। प्रचारक को १५ दिन जोधपुर कार्यालय में रहकर एवं १५ दिन अन्य ग्राम-शहरों में निर्देशानुसार कार्य करना होगा। प्रचारक धर्मिक ज्ञान का जानकार होना चाहिए। स्वाध्यायी को प्राथमिकता। प्रचारक का वेतन योग्यतानुसार देय होगा। - *श्री चंचलमल चोरडिया, संयोजक-स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००३, फोन नं. ०२९१-२६२४८९१*

आवश्यकता

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, रामपुरिया बाजार, बीकानेर को कार्यालय अधीक्षक, धार्मिक परीक्षा बोर्ड प्रभारी एवं साहित्य प्रकाशन हेतु प्रेस संबंधी

कार्य के जानकार व्यक्ति की आवश्यकता है।

शाकाहार विषयक श्रेष्ठ कृतियाँ पुरस्कृत

भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा आयोजित डॉ. नेमीचन्द जैन स्मृति पुरस्कार के अन्तर्गत हिन्दी भाषा में डॉ. कुसुम लूणिया, गाजियाबाद की कृति 'शाकाहार-श्रेष्ठ आहार' एवं डॉ. कल्याणमल गंगवाल की अंग्रेजी कृति 'शाकाहार-स्वस्थ जीवन की राह' चयनित की गई। इक्यावन हजार के पुरस्कार हेतु चयन पर डॉ. लूनिया व डॉ. गंगवाल को बधाई।

बधाई/चुनाव

डॉ. धर्मचन्द जैन 'बौद्ध अध्ययन केन्द्र' के निदेशक बने

जोधपुर- जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में बौद्ध अध्ययन केन्द्र का

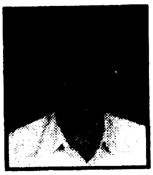

उद्घाटन ९ मार्च २००६ को मुख्यातिथि प्रो. गैसे एन. सामतेन, निदेशक केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ-वाराणसी ने किया। समारोह की अध्यक्षता सम्भागीय आयुक्त एवं विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बी.एल. आर्य ने की। समारोह में डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास-अध्यक्ष, जैन बौद्ध दर्शन विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवं डॉ. श्रीकृष्ण शर्मा अधिष्ठाता कला संकाय जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत इस केन्द्र के निदेशक का दायित्व विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. धर्मचन्द जैन को सौंपा गया है। समारोह में डॉ. जैन ने अतिथियों का स्वागत-सत्कार किया एवं केन्द्र की भावी कार्ययोजनाएँ स्पष्ट की। उद्घाटनकर्ता प्रो. सामतेन ने महात्मा बुद्ध के सिद्धान्तों पर चिन्तन प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति ने डॉ. जैन के निदेशन में केन्द्र की सफलता की कामना की।

युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री कवाड़ को पी-एच्.डी.

चेन्नई- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अशोक जी कवाड़

को मद्रास विश्वविद्यालय के द्वारा A Study Of Samayktav Parakram According to Uttaradhyayan Sutra विषय पर शोधकार्य करने के उपलक्ष्य में पी-एच्.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। श्री कवाड़ संघ-स्तम्भ स्वर्गीय श्री पृथ्वीराज जी

कवाड़ के सुपौत्र एवं श्रावकरत्न श्री दलीचन्द जी कवाड़ के सुपुत्र हैं। उन्होंने अपना शोधकार्य मद्रास विश्वविद्यालय के जैनॉलोजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. एन. वसुपाल के निर्देशन में पूर्ण किया है।

जोधपुर- सुश्री श्वेता जैन सुपुत्री श्री सायरचन्द जी कोटड़िया को जयनारायण व्यास

विश्वविद्यालय, जोधपुर ने 'जैनदर्शन में कारणवाद के संदर्भ में पंच समवाय' विषय पर पी-एच्.डी. की उपाधि प्रदान की है। श्वेता जैन ने संस्कृत-विभाग के ऐसोशिएट प्रोफेसर डॉ. धर्मचन्द जैन के मार्गदर्शन में शोधकार्य सम्पन्न किया है। डॉ. श्वेता जैन धर्मनिष्ठ एवं व्रतनिष्ठ श्राविका होने के साथ 'जिनवाणी' पत्रिका के प्रूफ संशोधन का कार्य भी कर रही है।

अजमेर- राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मकरेड़ा में कार्यरत श्री नवनीत जी जैन को उनके शोध ''कक्षा एक से पाँच के शिक्षार्थियों की ज्यामितीय आकारों से संबंधित दक्षताओं का अध्ययन'' पर पी-एच.डी. (शिक्षा) की उपाधि प्रदान की गई है।

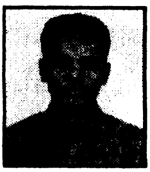

चेन्नई- जोधपुर मूल के रत्नसंघीय युवारत्न श्री निखिल कुमार सुपुत्र श्रीमती मीनाजी एवं श्री नरेन्द्र जी मुणोत ने ACCA (Association of Chartered Certified Accounts) यू.के. से प्रथम प्रयास में सफलता प्राप्त की, एतदर्थ हार्दिक बधाई।

हिण्डौन सिटी- सुश्री प्रतिक्षा जैन सुपुत्री श्री अशोक जी जैन (कन्जौली वाले) ने दशवैकालिक खुली पुस्तक प्रतियोगिता में ५०० में से ४९७ अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया, एतदर्थ बधाई।

पाचोरा- कुमारी प्रीति सुपुत्री श्री सुभाष बांठिया सी.ए. ने वर्ष २००५ में एम.काम. में ७६ प्रतिशत अंक अर्जित कर महाराष्ट्र विद्यापीठ जलगाँव में स्वर्णपदक प्राप्त किया हैं, एतदर्थ हार्दिक बधाई।

चेन्नई- अखिल भारतवर्षीय मानव-मिलन तमिलनाडु शाखा के अध्यक्ष श्री महावीर जी सिसोदिया ने श्री पदमचन्द जी ललवाणी को महामंत्री मनोनीत किया है।

चेन्नई- श्री एस.एस. जैन संघ, साहूकार पेट के चुनाव में श्री रिखबचन्द जी.लोढ़ा-अध्यक्ष, श्री ज्ञानचन्द जी नाहर व श्री विमलचन्द जी बेताला-उपाध्यक्ष, श्री अखेचन्द

जी भिड़कचा-मंत्री, श्री गौतमचन्द जी मेहता-सहमंत्री और श्री इन्द्रचन्द जी मुणोत कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। *-अखेचन्द भिड़कचा, मंत्री*

संक्षिप्त समाचार

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, महावीर इण्टरनेशनल एवं श्रीमती ताराबाई देसाई चेरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में २८ फरवरी को निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में रखा गया। शिविर में लगभग ६२० रोगियों ने लाभ उठाया। ३०० रोगियों के नेत्रों की जाँच की गई, २० ऑपरेशन योग्य रोगियों का चयन हुआ। करीब २०० रोगियों की अन्य जाँच की गई। लगभग १०० रोगियों को एक्युप्रेशर पद्धति की जानकारी दी गई।

टोंक- जीवदया मंडल ट्रस्ट, टोंक ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को नागपुर के पास ३८ एकड़ जमीन पर यांत्रिक कत्लखाने के प्रस्ताव का विरोध दर्ज करते हुए आग्रह किया है कि पशुधन के रक्षण हेतु प्रस्तवित यांत्रिक कत्लखाना नहीं खोला जाय। पशु हत्या भारतीय संस्कृति के विपरीत है, पर्यावरण को दूषित करने वाली है और अहिंसा सिद्धान्त के प्रतिकूल है।

जयपुर- दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी, नारायणसिंह सर्किल, जयपुर के 'पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' का आठवाँ सत्र १ जुलाई २००६ से प्रारम्भ होगा। नियमावली व आवेदन पत्र १५ अप्रेल २००६ तक प्राप्त किये जा सकते हैं। -डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक

डहरा (नदबई)- गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सरपंच श्री ज्ञानचन्द जी जैन एवं जीवन ज्योति संस्थान, हिण्डौन सिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में १९ व २० मार्च को नेत्र जाँच व लेंस प्रत्यारोपण शिविर डहरा जिला-भरतपुर में आयोजित किया गया। ८० नेत्र लेंस प्रत्यारोपण के अलावा २०० नेत्र रोगियों की जाँच विशेषज्ञों से करवाई गई।

दिल्ली- इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर (एनेक्सी) के सभागार में भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली द्वारा बुद्धिसागर सूरि (१०-११वीं शती) रचित 'पंचग्रन्थी व्याकरण' का ४ मार्च को लोकार्पण एवं समाज-सेवी प्रताप भोगीलाल का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। डॉ. कपिला वात्स्यायन (राज्यसभा सदस्य) ने पंचग्रन्थी व्याकरण का लोकार्पण किया। जैन परम्परा में ३० व्याकरण प्राप्त होते हैं, जिसमें २४ उपलब्ध एवं ६ अनुपलब्ध हैं। -डॉ. मोहन पाण्डेय

हैदराबाद- आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ द्वारा जैन तीर्थ कुलपाक में फाल्गुनी चौमासी

अवकाश पर तृतीय स्वाध्याय-प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। स्वाध्यायी सुश्रावक श्री नवरत्नमल जी भंसाली, श्री शांतिलाल जी बोहरा, श्रीमती सरोजाबाई जी पुनमिया, श्रीमती पुष्पादेवी जी भंसाली के सान्निध्य में ६० शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। -अनिल कुमार जैन

श्रद्धाञ्जलि

दिल्ली- समताविभूति आचार्य श्री नानेश के पट्टधर आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी महासती श्री सुलक्षणा श्री जी म.सा. का १२ मार्च को संथारे के साथ देवलोकगमन हो गया। विदुषी महासती जी पिछले करीब १२ वर्षों से कैंसर रोग से पीड़ित थी। दिल्ली में ऑपरेशन भी हुआ। कैंसर जैसे असाध्य रोग की वेदना समभाव पूर्वक सहन करते हुए महासतीजी ने संथारा पूर्वक नश्वर देह का त्याग किया।

-सूरजमल पींचा

जोधपुर- ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चन्दना जी म.सा. का २ अप्रेल २००६ की रात्रि में संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। उन्होंने २ मार्च को तेले की तपस्या के साथ भागवती दीक्षा अंगीकार की थी। महासती जी ने पहले तिविहार संथारा किया तथा २६ मार्च को चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान कर लिए थे। सौभाग्यशाली महासती जी ने श्री बसन्तमुनि जी म.सा. एवं अपने सांसारिक सुपुत्र तपस्वी संत श्री शालिभद्रमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में दीक्षा अंगीकार की थी।

सर्वोदय विचारक श्री सिद्धराज ढढ्ढा नहीं रहे

जयपुर- सर्वोदय विचारक, स्वतंत्रता सेनानी श्री सिद्धराज जी ढढ्ढा का जयपुर में ९ मार्च २००६ को ९७ वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनकी पार्थिव देह का राजकीय सम्मान के साथ अन्तिम संस्कार किया गया। गाँधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, जोधपुर द्वारा उन्हें १२ मार्च को श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर श्रद्धा समर्पित की गई।

सूरत- अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धाशील सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती किरणकंवर जी गांग धर्मपत्नी संघसेवी श्रावकरत्न श्री नौरतनमल जी गांग का ६७ वर्ष की आयु में १ अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। रत्नसंघीय श्राविकारत्न की गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति अनन्य आस्था और अगाध भक्ति थी। श्राविकारत्न का स्वास्थ्य विगत दो वर्षों से ठीक नहीं था। चलने की स्थिति नहीं होने से घोड़ों का चौक स्थानक वाली गली में किराये के मकान में रहकर भी श्राविकारत्न ने दर्शन-वन्दन और सेवा-भक्ति का लाभ लिया। विगत अनेक वर्षों से उनके चौविहार व जमीकन्द के त्याग थे। लकवे की अवस्था में भी

सामायिक-स्वाध्याय और जप-तप में उनकी भावना अनुकरणीय थी। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़ कर गई हैं।

इन्दौर- धर्मपरायणा सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती दाखीबाई जी धर्मपत्नी श्री

समरथमल जी आंचलिया का ७३ वर्ष की वय में १६ फरवरी को स्वर्गवास हो गया। वे सरल स्वभावी, मृदुभाषी और त्याग-तप में रुचिशील श्राविका थीं। विगत २७ वर्षों से रात्रि चौविहार त्याग करने वाली श्राविका के जीवन में परोपकार के कार्यों के प्रति अच्छी रुचि रही।

मुम्बई- पंजाब जैन मातृसभा के पूर्व अध्यक्ष तथा स्थानकवासी जैन समाज के

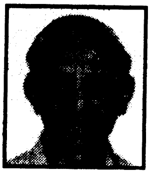

हितचिन्तक सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन का ८५ वर्ष की आयु में ३ मार्च को स्वर्गगमन हो गया। पंजाबकेसरी पूज्य आचार्य श्री कांसीराम जी म.सा. के प्रति आस्थावान श्रावकरत्न मृदुस्वभावी एवं दृढ़ निश्चयी थे। वे कर्त्तव्यपरायण, उदारमना और समाजहितैषी श्रावक थे। ५३ वर्षीय श्राविका प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण करती थीं और धर्म-साधना में विशेष भावना रखती थीं।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्री मांगीलाल जी सिंघवी (सुपुत्र स्व.

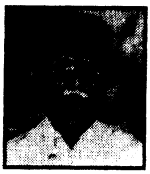

श्री मुकनचन्द जी सिंघवी, पीपाड़ सिटी वाले) का २४ मार्च २००६ को स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती, गुरु हीरा, गुरु मान के प्रति आस्थावान श्रावकरत्न की स्मरण-भजन और सामायिक-स्वाध्याय में सदा रुचि रही। वे अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- धर्मनिष्ठ सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती संतोषदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री

गुलाबचन्द जी नवलखा का ८८ वर्ष की आयु में २८ फरवरी २००६ को देहावसान हो गया। रत्नसंघीय सुश्राविका की गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति अटूट आस्था थी और सामायिक-स्वाध्याय के साथ तप-साधना में उनका विशेष उत्साह था। वर्षीतप के साथ श्राविकारत्न ने कई अठाइयाँ और पन्द्रह की तपस्या की। नवकारसी व रात्रि चौविहार-त्याग का वर्षों से उनके नियम था।

खाचरोद- समाजसेवी सुश्रावक श्री मिश्रीमल जी छाजेड़ का १ फरवरी को ८८ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्य परायण और सेवाभावी श्रावक थे। बसंत पंचमी को जन्मे श्रावकरत्न का बसंतपंचमी को ही स्वर्गगमन हुआ। वे विगत

करीब ६ दशक से गोशाला से जुड़े हुए थे। *-विजय छैगांववाला*

दिल्ली- सरल स्वभावी धर्मनिष्ठ श्री दौलतसिंह जी महमवाल सुपुत्र स्व. श्री सुरेन्द्र सिंह जी का ३० जनवरी २००६ को धर्मपत्नी से नमस्कार महामंत्र श्रवण करते-करते स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

जोधपुर- अनन्य गुरु भक्त श्रद्धानिष्ठ सेवाभावी सुश्रावक श्री मनरूपचन्द जी भंडारी

सुपुत्र स्व. श्री होशियारचन्द जी भण्डारी का ६७ वर्ष की आयु में २० मार्च को स्वर्गवास हो गया। गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति आस्थावान श्रावक ने व्यावहारिक क्षेत्र के साथ धार्मिक क्षेत्र में भी सेवा-लाभ लिया। **ICWA, MBA** जैसी डिग्रियाँ प्राप्त कर उन्होंने भारत में एवं विदेश में उच्च पदों पर कार्य किया। शिक्षण संस्थाओं से जुड़े भण्डारी साहब का जीवन प्रेरणादायी रहा।

मादलिया- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती पारसदेवीजी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री लालचन्द

जी मूथा का ७४ वर्ष की आयु में २१ फरवरी को स्वर्गवास हो गया। मरुधर केसरी के प्रति अटूट आस्थावान श्राविकारत्न मादलिया पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदा तत्पर रहती थीं। प्रतिदिन ३-४ सामायिक करने वाली श्राविका के वर्षों से रात्रि-भोजन त्याग और नवकारसी का नियम था। वे सरल स्वभावी, उदारमना और दयालु श्राविका थी। मादलिया में अस्पताल भवन बनवाने में श्राविकारत्न का योगदान रहा। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। *-ललित कोठारी*

चेन्नई- सुश्राविका श्रीमती बिदामीबाई चोरडिया धर्मपत्नी स्व. श्री विजयराज जी चोरडिया अलाय निवासी का ७६ वर्ष की आयु में ७ मार्च २००६ को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आचार्य श्री नानेश-आचार्य श्री रामेश के प्रति आस्थावान श्राविकारत्न ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सन्नद्ध रहती थी।

फतहगढ़- सुश्राविका श्रीमती उषाजी मुहनोत धर्मपत्नी श्री कमलेश जी सुपुत्र श्री गुलाबचन्द जी मुणोत का २० मार्च २००६ को मात्र ३० वर्ष की अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। सरलस्वभावी सुश्राविका की धर्मकार्य में एवं संत-सतियों के प्रति अटूट श्रद्धा थी।

भदेसर- दृढ़धर्मी श्राविका श्रीमती लक्ष्मीबाई धर्मपत्नी श्री मदनलाल जी सरूपरिया का ७२ वर्ष की आयु में चौविहार संथारे के साथ १९ फरवरी को स्वर्गवास हो गया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

११००० /- रुपये जिनवाणी पत्रिका की स्तम्भ-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१८६ Shri Sureshchand Ji Dilip chand Ji Surana, Aiynawaram (T.N.)

१८७ Shri Nagarmal Ji Prasanchand Ji Chajjed, Trivanmayur (T.N.)

१८८ Shri Lunchand Ji Kamalchand Ji Kumbhat, Chennai (T.N.)

१८९ Shri Ashok Kumar Ji Vijayraj Ji Kankaria, Chennai (T.N.)

५०० /- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१०३२३ श्री शरदचन्द जी जैन, किनारी बाजार, आगरा (उ.प्र.)

१०३२४ श्री मदन जी लोढ़ा, हिम्मतनगर, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

१०३२५ श्रीमती निर्मला जी संकलेचा, वेपेरी, चेन्नई (तमि.)

१०३२६ श्री कैलाशचन्द जी बोहरा, ब्यावर, अजमेर (राज.)

१०३२७ श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

१०३२८ श्री सुरेन्द्र जी भड़कत्या, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

१५००० /- श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर, जिनवाणी सहायतार्थ।

१००१ /- डॉ. सुशील सुधा जी भण्डारी, जोधपुर, अपने सुपुत्र अक्षित भण्डारी के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१००० /- श्री अनिल जी गांग, प्रवीण जी गांग, जोधपुर, पूज्य माताजी श्रीमती किरणकंवर जी गांग, धर्मपत्नी श्री नवरतनमल जी गांग का १.४.२००६ को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन-स्मृति में।

५०० /- श्री पुखराज जी कोचर, विशाखापट्टनम की ओर से सप्रेम भेंट।

५०० /- श्री दीपचन्द जी कैलाशचन्द जी नाहरसिंह जी बोहरा, ब्यावर, सुश्रावक श्री लालचन्द जी बोहरा का स्वर्गवास दिनांक २५.१.२००६ को हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

५०० /- श्री नरेन्द्र कुमार जी नवलखा, जयपुर, श्रीमती संतोष देवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री गुलाबचन्द जी नवलखा का स्वर्गवास २८.२.२००६ को हो जाने पर उनकी स्मृति में।

५०० /- श्री महावीरचन्द जी गौतमचन्द जी, जम्बूकुमार जी, प्रसन्नराज जी मुथा, मादलिया, पूज्य माताजी श्रीमती पारसीदेवी धर्मपत्नी श्री लालचन्द जी मुथा की पावन स्मृति में।

५०० /- श्री अरविन्द जी, महेन्द्र जी, नरेन्द्र जी, सुरेन्द्र जी सिंघवी, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री मांगीलाल जी सिंघवी की पुण्यस्मृति में भेंट।

५०० /- श्री देवीचन्द जी, दिलरूपचन्द जी, लखपतचन्द जी, महावीरचन्द जी एवं सूरज जी भण्डारी, जोधपुर, अपने भ्राता एवं सूरज के बड़े पापा श्री मनरूपचन्द जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री होशियारचन्द जी भण्डारी के २०.३.०६ को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में।

५०० /- श्रीमती सुमन-कमलजी छाजेड़, सीमा-प्रदीपजी कोठारी, सरिता-ललितजी आंचलिया, नीलू-संजयजी सिंघवी, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री मनरूपचन्द जी भण्डारी

सुपुत्र स्व. श्री होशियारचन्द जी भण्डारी के २०.३.०६ को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में।

३००/- श्री मदनलाल जी जैन सरूपरिया, भदेसर, चि. महावीर की माताश्री श्रीमती लक्ष्मीबाई जी की पुण्यस्मृति में भेंट।

२५०/- श्री नथमल जी दुग्गड़, पीह-नागौर, प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी म.सा. की ६३वीं दीक्षा जयन्ती के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

निम्नलिखित महानुभावों से भी साभार प्राप्त हुआ

श्री गणपतलाल जी सुराणा, भाकरी-नागौर, श्री कमलेश कुमार जी चंदन कुमार जी-बिणजारी वाले, प्रकाशचन्द जी डूंगरवाल-बैंगलोर, श्री ज्ञानमल जी विजयराज जी कोठारी-बागावास, पुष्पा जी लोढ़ा, जोधपुर।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

३००००/- श्री गुप्तदान, चेन्नई। ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

१००००/- श्रीमती मंजुला जी, श्री शैलेन्द्र जी जैन, जबलपुर, श्रीमान् मदनलाल जी राठौड़ (उज्जैन वाले) की पोती सौ. कां. पूनम (सौम्या) के अमेरिका के बोस्टन शहर में आयोजित प्रोजेक्ट चैलेंज २०/२० में संक्रामक रोगों पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया।

जीवदया हेतु साभार

१०००/- श्री नरेन्द्र कुमार जी नवलखा, जयपुर, श्रीमती संतोषदेवी जी नवलखा धर्मपत्नी श्री गुलाबचन्द जी नवलखा का स्वर्गवास दिनांक २८.२.२००६ को हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

१०००/- श्री चंचलबाई जी पुखराज जी जैन, विशाखापट्टनम।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार

३५०००/- श्री स्वाध्याय समिति, चेन्नई।

५०००/- श्री कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, संरक्षक सदस्यता।

२०००/- श्री कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर, साहित्य अनुदान हेतु।

१२००/- श्री जौहरीमल जी गजराज जी छाजेड़, जोधपुर, संवर्द्धक सदस्यता।

५००/- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, कालुखेड़ा। पर्युषण सहायतार्थ

५००/- श्रीमती वीणा जी पारख, जयपुर, अपने ५०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर, अपनी सुपौत्री प्रज्ञा के शुभ विवाहोपलक्ष्य में।

५००/- श्री ज्ञानराज जी अब्बानी, जोधपुर, सहयोगी सदस्यता।

२५०/- श्री रिखबचन्द जी मेहता, जोधपुर, साधारण सदस्यता।

सूचना- प्रतिक्रमण विशेषाङ्क हेतु जिन विद्वत्महानुभावों से लेख आमन्त्रित किए गए हैं, वे कृपया ३० अप्रेल २००६ तक अपने लेख सम्पादक के पते पर भिजवाने की कृपा करें। *-डॉ. धर्मचन्द जैन*

आगामी पर्व

वैशाख कृष्णा ८	शुक्रवार, २१.०४.२००६	अष्टमी
वैशाख कृष्णा १४	बुधवार, २६.०४.२००६	चतुर्दशी
वैशाख कृष्णा ३०	गुरुवार, २७.०४.२००६	पक्खी
वैशाख शुक्ला ३	रविवार, ३०.०४.२००६	अक्षय तृतीया एवं पूज्य आचार्य श्री कजोड़ीमल जी म.सा. की १२७वीं पुण्यतिथि, पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. ७७वाँ आचार्य पद चादर महोत्सव
वैशाख शुक्ला ८	शुक्रवार, ०५.०५.२००६	अष्टमी, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की १५वीं पुण्यतिथि
वैशाख शुक्ला ९	शनिवार, ०६.०५.२००६	उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का १६वाँ उपाध्याय पद ग्रहण दिवस।
वैशाख शुक्ला ११	सोमवार, ०८.०५.२००६	संघ स्थापना दिवस
वैशाख शुक्ला १३	गुरुवार, ११.०५.२००६	उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का ४४वाँ दीक्षा-दिवस
वैशाख शुक्ला १४	शुक्रवार, १२.०५.२००६	चतुर्दशी, पक्खी

मुक्तक-मुक्ता

श्री दिलीप धींग

सामायिक

सामायिक अनुपम आनन्द का नन्दन वन है,
खिलते जहाँ सत्य के सुरभित सुमन हैं।
समता की शीतल बयार बहती अनवरत,
तनाव मुक्त निरासक्त बनता जीवन है॥

ध्यान

अस्त होते सूर्य को भी प्रणाम कीजिये,
उसकी नियमितता को सम्मान दीजिये।
बाह्य प्रकाश की अपेक्षा न रहे इसलिए,
स्वयं के प्रकाश में स्वयं का ध्यान कीजिये॥

-ट्रेड हाउस, दूसरी मंजिल, २६, अश्विनी मार्ग, उदयपुर

आचार्य हस्ती जीवन-दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८
श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं'

पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता में भाग लीजिए

प्रथम पुरस्कार- १ लाख रुपये

अन्य विविध पुरस्कार

द्वितीय -३१,०००/-, तृतीय- २१,०००/-, चतुर्थ-१५,०००/-
पंचम-११,०००/-, षष्ठ-७,०००/-, सप्तम-५,०००/-अष्टम-३,०००/,
नवम-२,०००/-, दशम- १०० प्रतियोगियों में प्रत्येक को १,०००/-

शीघ्र प्रतियोगी प्रोत्साहन पुरस्कार रुपये ५०/-प्रत्येक

सौजन्य :

श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत की स्मृति में श्री मोफतराज मुणोत परिवार, मुम्बई

प्रतियोगिता की उपयोगिता-

अपने जीवन का निर्माण, आत्मशक्ति एवं आत्मविश्वास में अभिवृद्धि, आदर्श साधु-जीवन का बोध, जीवन की वैयक्तिक-पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान, शान्ति एवं आनन्द का अनुभव।

प्रश्न-पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथि	**- ६ सितम्बर २००६**
शीघ्र प्रतियोगियों हेतु अन्तिम तिथि	**- ५ नवम्बर २००६**
उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि	**- २ जनवरी २००७**
परिणाम घोषणा	**- २९ अप्रेल २००७**

प्रतियोगिता हेतु ९५० पृष्ठ का विशाल ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं २५०/- के स्थान पर मात्र १००/- में तथा प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तरपुस्तिका- ३०/- में उपलब्ध।

प्रश्नपुस्तिका में लगभग ६०० प्रश्न हैं। प्रश्नपुस्तिका दो भागों में विभक्त है। प्रथम खण्ड, पंचम खण्ड एवं आवरण पृष्ठ आदि के प्रश्न प्रथम भाग में तथा द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड के प्रश्न द्वितीय भाग में हैं।

डाक अथवा कोरियर से मंगवाने पर-

ग्रन्थ-१००/-+ डाक व्यय ६०/-= कुल १६०/-

प्रश्न पुस्तिका ३०/- + डाक व्यय १०/- = कुल ४०/-

ग्रन्थ एवं प्रश्न-पुस्तिका मंगवाने का पता-

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.)

फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६२४८९१, २६४१४४५, फैक्स-२६३६७६३

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगी ध्यान दें

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता का शुभारम्भ हो चुका है। प्रश्नपुस्तिका को प्राप्त कर अध्ययन करने का उत्साह जन-साधारण में दृष्टिगत हो रहा है। प्रतियोगी उत्तर लिखने से पूर्व निम्नांकित संशोधन अपनी प्रश्नपुस्तिका में अवश्य कर लेवें। (यदि पहले से सही हो तो संशोधन न करें)

१. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४ के प्रश्न संख्या २० को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- आचार्य श्री ने केन्द्रीय कारागार, जोधपुर में कैदियों को अपने प्रवचन के दौरान बुराइयों के फल से बचने का क्या उपाय बताया? (१३)
नया प्रश्न- ....में आत्मशांति है। (३)

२. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २१ के प्रश्न संख्या १६ को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- मैं अपने दोषों का प्रायश्चित्त पूर्ण हुआ समझूँगा।
नया प्रश्न- इनके स्वप्न में भी कह देवां तो ये केणो कर लेवे।

३. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २९ के प्रश्न संख्या ८ को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- श्रमण प्रधान चतुर्वर्ण संघ ही तीर्थ है, ...वाला है।
नया प्रश्न- विषम स्वभाव के अणुओं का मेल शक्ति को..............नहीं।

४. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४ के प्रश्न संख्या १९ में आए शब्द "कोसाणा" के स्थान पर "कोरना" पढ़ा जाए।

५. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली ३१ के उत्तर चतुर्थ एवं तृतीय खण्ड (काव्यांजलि में निलीन व्यक्तित्व) से देने हैं।

६. प्रश्नपुस्तिका के प्रश्नावली १ के प्रश्न संख्या १९ में आए शब्द 'संवत् १९८८' के स्थान पर 'संवत् ११८८' पढ़ा जाए।

७. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४, प्रश्न संख्या १४ का उत्तर (४) शब्दों के स्थान पर (६) शब्दों का है।

८. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २५, प्रश्न संख्या ४- सच्चा सहारा तो मुझे अपने गुरु का ही है, फिर यह कृत्रिम सहारा किसलिये? जिन्होंने जीवन में जो सोचा, जिसे..........समझा, उसे अपने जीवन में उतारा भी। **की जगह जिन्होंने जीवन में जो सोचा, जिसे.........समझा, उसे अपने जीवन में उतारा भी। ही पढ़ा जाए**

उक्त संशोधनों के अतिरिक्त किसी प्रकार का संशोधन उत्तरदाता को लगे तो वह उत्तरपुस्तिका में नोट लगाकर भेजं सकता है। अन्य संशय होने पर निम्नांकित पते एवं संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया के फोन नं.०९४१४१-३४६०६ पर सम्पर्क किया जा सकता है- *अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर,* ☎ ०२९१-२६३६७६३

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET
CHENNAI-600079(T.N.)
PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

REGD. OFFICE : 33, Montieth Road, Egmore, Channai-600008

CHENNAI	:	**044-28553185, 52145478**
BANGALORE	:	**080-22103267, 22103268**
HYDERABAD	:	**040-23414333, 23414777**
GOA	:	**0832-2420675, 2231190**

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD **NAVARATHAN KAVAD**

RAVINDRA KAVAD **ASHOK KAVAD**

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056

Phone No.: 044-2627 3165, 2627 4165

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

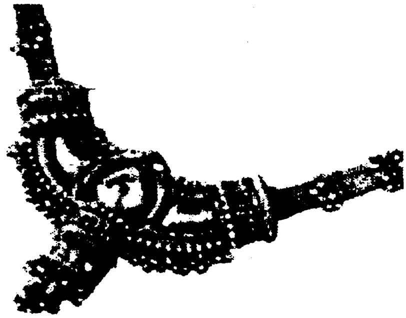

Best Compliments from

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916.KDM)

22 Ct. Gold! 24 Ct. Trust!

No.4, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272609, 55666555.

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No.5, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272906, 55689588.

जयगुरु हस्ती   जयगुरु हीरा   जयगुरु मान

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR

BRIGHT STAR DIAMOND CO.,LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House, 12th Floor, Suite 160-161, Suriwongse Road, BANGKOK 10500, Thailand G.P.O. Box No. 2088	Tel : 237-8051, 237-8052 234-7648 Fax : (662) 237-6110 Res : 437-0910 Mobile : 01-6285733

Gurudev

SURANA

INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz.,
HSD / CTD Bars, MS Rounds
Structurals Like Flats, Channels
Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office

29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai 600 014.
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Phone : 954119 222881 Telefax : 954119 222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram,
Chennai 600 110
Phone : 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

Jai Guru Hasti   Jai Guru Heera   Jai Guru Man

विश्व को आज शस्त्रधारी सैनिकों की नहीं अपितु शास्त्रधारी सैनिकों की आवश्यकता है।

आचार्य श्री हस्ती

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliment From :

NARENDRA HIRAWAT

Flat No. 1, Building No. 2
Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg,
Matunga (West), Mumbai-400016

Trin-Trin

Matunga Office	: 022-56669707, 24370713
Opera House Office	: 022-23884282
Mobile	: 98210-40899

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है,
वह प्रभावक श्रावक है।
आचार्य श्री हस्तीमलजी.म.सा.

With Best Compliments From :

MJ

MAHENDRA JEWELLERS

No. 1000-1001.
Thiruvottiyur High Road
Kaladipet, Chennai-600 019

Phone : (O) 044-25991313, 25992300, 25992400
Fax : 044-25994466
Phone : (R) 044-25993671, 25993101, 25995588

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

Presenting
Premium properties by Kalpataru

KALPATARU ROYALE

Near Cine Planet, Off Sion Circle,
Sion

KALPATARU ESTATE

Opp. Fantasyland,
Andheri (E)

SIDDHACHAL

Pokhran Road No.2,
Thane (W)

Other Projects :

Kalpataru Habitat, **Parel** • Kalpataru Gardens, **Kandivli (E)**
Tarangan, **Thane (W)** • Kamdhenu, **Mulund (E)**
Kalpataru Regency II, **Pune**

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai - 400 021. India
Tel.: 022-2282 2888, 2281 7171 • Fax: 022-2204 1548, 2288 4778
Email : sales@kalpataru.com • Website : www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।